॥ श्रीः ॥

औरंगज़ेब नामा.

दूसरा भाग

अर्थात्

मुगलसम्राट् महीउद्दीन मोहम्मद औरंगज़ेब आलमगीर बादशाहका इतिहास ।

जिसको

राय मुन्शी देवीप्रसादजी मुन्सिफ राज्य जोधपुर इतिहास-वेत्ताने फारसी तवारीख मआसिरेआलमगीरीसे सरल हिन्दी-भाषामें उल्था करके उपयोगी टिप्पणी तथा तत्संबंधी विशेष संग्रहादिसे विभूषित कर लिखा ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९६७, सन् १९१०.

भूमिका ।

मोहम्मदसाकी खुदा और रसूलकी स्तुतिके पीछे लिखताहै कि बड़े बादशाह अबुलमुजफ्फर मुहीउद्दीन मोहम्मद औरंगजेब गाजी की सल्तनतके १० वर्षोंका हाल तो मोहम्मदकाजिम मुनशी का लिखाहुआ है फिर लिखनेकी मनाई होगई थी. उनके मरे पीछे वर्तमान बादशाह अबुलनस्र कुतुबुद्दीन शाह आलमबहादुर-शाह गाजीके सुखद समयमें इनायतुल्लाहखां मुरीदखास आलमगिरीने मुझ कुछ नहीं जाननेवाले मोहम्मद साकी मुस्ताईदखानसे कहा कि बडे हजरतकी बादशाही के ४० वर्षका बाकी हाल जो नहीं लिखागयाहै तू लिखसकताहै.

मैंने कहा कि यह बडा काम मेरे हौसिलेसे बढकर है ऐसे कामोंका पूरा होना कदरदान हाकिमों और लायिक दोस्तोंकी मदद पर मुनहसिर है और जब तक हर्जूरके और सूबोंके अखबार जमा न किये जावें तबतक इसका लिखना आसान भी नहीं है. मगर उसको तो यह लौ लगी हुई थी कि किसीतरहसे मुराद पूरी हो और दुनियामें एक यादगार रहे इसलिये मेरे कहनेका कुछ असर न हुआ और मुझे भी अपने मालिकके नमकका हक अदाकरना था. जिसकी डंयोढीके बाहर उमर भर पड़ा रहाथा सो जो कुछ मैंने खुद देखा था और जो उस वक्तके मोतबर काम करनेवालोंसे तहकीक किया था लिखकर यह किताब बनाई और मासिर आलमगीरी नाम रक्खा; क्योंकि इसमें उस आलमगीर बादशाहकी फतूहात (दिग्विजय)-की तवारीख है दूसरे इसके तमाम होनेकी तारीख भी इसीमेंसे निकलती है.

---

१ चेला. २ साहस. ३ दरबार. ४ प्रांतों. ५ समाचारपत्र. ६ सुगम. ७ मनो कामना. ८ फारसीमें अर्थके सिवाय हर्फोंमेंसे अंकोंका भी एक हिसाब निकाला जाता है जिससे मुनशी और शाइर लोग अपनी किताबोंके साल संवत चतुराईसे निकाल लिया--

खुदाका शुक्र है कि नसीबोंमें मदद दी और हिम्मतने फतहकी जो फायदेकी किताब उस अच्छे अमीरकी मददसे वनगई. उम्मेद है कि यह कीम मोती कदरदानोंमें अच्छी कीमत पावे और भूलचूककी कालौंछ कोई हो तो जौ रियोंके सुधार देनेसे निकलजाने पर और जियादा चमकनेलगे.

—करते हैं जैसे मासिरआलमगीरीके हर्फोंका अर्थ तो आलमगीरबादशाहकी निशानियोंका है और अकोंसे सन् ११२२ (सं. १७६८ ❀) निकलते हैं अर्थात्—

१ मीम, (म) ४०	५ ऐन, (अ) ७०	९ गाफ (ग) २०
२ अलिफ (आ) १	६ अलिफ, (आ) १	१० ये, (ई) १०
३ से, (सि) ५००	७ लाम, (ल) ३०	११ रे, (र)२००
४ रे, (र) २००	८ मीम, (म) ४०	१२ ये, (ई) १०
	मासिरआलमगीरी.	११२२

❀ इस सन् संवतमें ८० वर्षका अंतर पडता है यथा ११२२+५६९+५७= १८४८-(१७६८ सं)=८०.

॥ श्रीः ॥

औरंगजेबनामा।

दूसरा भाग.

चतुर्थ खण्ड.

सन् १०७८ हि०। संवत् १७२४.। सन् १६६८ ई०।

औरङ्गजेब दिल्लीमें.

११ वां आलमगीरी सन्।

१ रमजान सन् १०७८ (फाल्गुन सुदि २ सं. १७२४ । ४ फरवरी सन् १६६८) से ११ वां वर्ष लगा.

१ शव्वाल, (चैत सुदि २ । ५ मारच) को बादशाह ईदगाहसे लौटकर दीवानआममें जडाऊ तखतपर विराजे बादशाहजादों और बडे २ अमीरोंने आदाब बजाकर मुबारकबाद दी खिलअत इजाफे और खिताब पाये.

१ शाहजादे मोहम्मद आजमको खिलअत और जडाऊ धोपे[1].

२ शाहजादे मोहम्मद अकबरको खिलअत.

३ जुबदतुलमुल्क, जाफरखांको खिलअत और यशमके[2] दस्तेका जडाऊ खञ्जर.

४ दानिशमन्दखां[3] मीर बखशीको खिलअत हाथी और ५ हजारी २ हजारका मनसब असल और इजाफेसे.

५ हकीमुलमुल्कको डेढहजारी १०० सवारअसल और इजाफेसे.

६ हिम्मतखांको ढाई हजारी १२०० सवार.

---

१ एक तरहका खांडा. २ एक प्रकारका कीमती पत्थर. ३ डाक्टर बरनियर जिसने अपने सफरनामेमें औरंगजेबका बहुतसा हाल लिखा है इसी दानिशमंदखांका नौकर रहा था.

७ लुतफुल्लाहखांको डेढहजारी ५०० सवार.

८ मोहम्मद इसमाईल असदखांका बेटा ३ सदीनया.

९ शेखमोहम्मदयाकूब शेखमीरका बेटा. चार सदी १०० सवारसे ९ सदी ३०० सवार.

लशकरखांके बदलेजानेसे इबराहीमखां बिहारका सूबेदार हुआ और मनसब भी उसका असल और इजाफेसे "९हजारी" ९ हजारसवारका होगया.

अहमदाबादका सूबेदार महाबतखां हजूरमें आकर अमीरखां की जगह काबुलकी सूबेदारी पर गया.

बादशाहको खेल तमाशेकी दिलसे लगन नहीं थी और न मुदाप्रस्ती (ईश्वराराधना) से महफिलें सजानेकी फुरसत थी इसलिये हुक्महुआ कि खुशाल्खां, बिसरामखां और रसबीनखां वगेरा बडे २ गवैये सलाम करनेको तो आवें लेकिन गाना बजाना न करें फिर धीरे २ उनका आना भी बंद होगया और गाना सुननेका शौक सब छोटे बडे लोगोंके दिलसे भी जाता रहा.

८ शव्वाल 'चैतसुदि ९।१२ मार्च' को काशगरका खान अबदुल्लाहखां दिल्ली के बाहर आकर एक बागमें ठहरा जहां बादशाहके हुक्मसे उसकी जियाफत कीगई.

११ 'चैतसुदि १२। १५ मार्च' को जुबदतुलमुल्क जाफरखां और असदखां शहरके बाहरतक पेशवाई करके उसको दरगाहमें लाये वह घोडेपर चढा २ ही उनलोगोंसे हाथ मिलाकर खासोआम दरवाजे तक सवार आया वहांसे पालकीमें बैठा लालकटेरेसे पैदल होकर चांदीके कठहरेमें पहुंचा। खासोआम दरबार और जडाऊ तखतकी शोभा देखता हुआ सोनेके कटेरेके पास बैठ गया। बादशाहका भेजाहुआ खासा पानी पिया पान खाया और जड़ाऊ छडी जो भेजीगई थी उसको लेकर १ पहर ६ घडी दिन चढ़े गुसलखानेमें आया और उस अनोखे मकानकी सजावट देखता हुआ जमनाकी तरफ जा बैठा. एक घडी पीछे बादशाह वहां पधारे उसने अपने तौर पर आदाब बजा कर हाथ मिलाया दर्शन होते ही उसकी सब उदासी जाती रही और दिल खुश होगया बादशाह हाथ पकडकर उसे मसजिदमें लेगये। और आधघडी पीछे बडी इज्जतसे रुखसत किया। यकाताजखां मुबारजखां और ख्वाजा मोहम्मद सादिक उसको रुस्तमखांकी सुहावनी हवेलीमें

लगये जो सरकारकी तरफसे सजाई गई थी एक लाख रुपया नकद २० हजारकी जिनस १८ घोडे जो सोनेचांदीके साजों और जरीकी झूलोंसे सजेहुए दीवान-खानेमें खडेथे इनायत हुए दूसरे दिन वह बेगमों समेत साहिवाबादके बागमें जाकर तमाम दिन गुलछर्रे उडाता रहा। मलिका बेगमसाहिबकी तरफसे २० हजार रुपया १८ थान कपडोंके जडाऊ जमधर फूलकटारे समेत जडाऊ पानदान, सोनेका खोनचा, मीनाकार पीकदान, बिल्लोरका चोवडा २०० कान (थाळ) खानेके अरगजा और पान उसके वास्ते भेजे गये.

२५ (बैसाखवदि १२।२९ मारच) को हजरत अदालतसे उठकर महलके चशमेंमें खडे थे कि जुमदतुलमुल्क अपने साथ खानको हुजूरमें लाया जब १ गजकी छेटी रही तो खानने आदाब बजाया बादशाहने छाती पर हाथ रखलिया खान उसी चशमेंमें सामने खडा होगया बादशाहने तवेगून जातिका बाज इनायत करके जुमदतुलमुल्कसे फरमाया कि खानको हाथियोंकी लडाई दिखाओ और खानके साथ यहीं बैठो। यह कहकर आप ख्वाबगाहमें चलेगये.

२३ जीकाद (जेठवदि ११।२६ अप्रेल) को ५२ वें कमरी वर्ष लग-नेका तुलादान गुसलखानेकी खास मजलिसमें हुआ.

बादशाहजादों और हजूर तथा सूबोंके अमीरोंपर बडी २ इनायतें हुई बेगम-साहिब, दूसरी बेगमों और बडे २ अमीरोंकी अच्छी २ पेशकशें नजरसे गुजरीं.

१ जिलहज्ज (जेठसुदि २। ३ मई) को आसामके जमीदारकी बेटी रह-मतवानूका निकाह शाहजादे मोहम्मद आजमसे हुआ १ लाख ८० हजारका मिहॅर बंधा.

ठठेके सूबेकी खबरोंसे बादशाहको मालूम हुआ कि बंदरलाहरीके इलाकेका समाजीनाम कसवा ३० हजार घरोंसमेत भोंचालसे जमीनमें धुसगया.

सन् १०७९ हि०.

१७ सफर (सावनवदि ४। १७ जुलाई) को शाहजादे मोहम्मद आजमकी शादी दाराशिकोहकी बेटी जहांजेबबानू बेगमसे ठहरनेकी मजलिस शुरू हुई इसकी मा नादराबानू बेगम जो आलाहजरतके वडे भाई सुल्तान परवेजकी बेगम थी

१ थोनेकी जगह. २ मुसलमान औरतका खोचन.

सुल्तान मुरादकी बेटी जहांबेगमकी बेटी थी जहांजेबबानू बेगमको बादशाहकी बडी बहन नव्वाब जहांआरा बेगमने अपनी बेटी करके पाला था इसीलिये यह व्याह भी उन्हींके दौलतखानेमें रचाया गया था जुमदतुलमुल्क जाफिरखां और दूसरे अमीरोंने जाकर १ लाख १० हजारकी साचक (बरी) पहुँचाई थी.

३ रबीउलअव्वल (सावन सुदि ५।२ अगस्त) को ताहरखांके बदले जानेसे लशकरखां मुलतानका सूबेदार हुआ.

बङ्गालेके अखबारसे मालूम हुआ कि पहिले. तो धूलका बादल उठा फिर १ डरावनी लम्बेकदकी सूरत जाहिर होकर कई घडी पीछे अलोप होगई आध-कोस तक आदमी और जानवर मरे और घायल हुए पडे थे.

१७ रबीउलआखिर (आसोजबदि ५।१९ सितम्बर) को जौनपुरके अख-बार परसे अर्ज हुई कि ९ रबीउलअव्वल (सावनसुदि १०।८ अगस्त) से २२ दिन तक लगातार मूसलाधार मेह पडा अकसर इमारतें गिर पडीं किलेकी पूर्वी भीत भी २२ गज ढह गई.

कई जगह बिजली गिरी कई आदमी उससे मरे कई बेहोश होगये जो होशमें आये वे बहरे होरहे हैं.

अब्दुलनवीखां झुनझुनूकी खिदमत उतरजानेके पीछे असल और इजाफेसे २ हजारी १ हजार सवारका फिर मनसब पाकर मथराका फौजदार होगया.

मोहम्मदअलीखां रोशनआरा बेगमका दीवान हुआ इलाहाबादके सूबेदारों और फौजदारोंके नाम हुक्म पहुँचा कि जो लोग गरीबबच्चोंको हीजडा बनाते हैं उनको पता लगाकर पकडें और जंजीरोंमें जकडकर दरगाहमें भेजें और यह ताकीद जानें कि फिर कोई ऐसा बुरा काम न करने पावे.

२९ जमादिउलअव्वल (कार्तिकबदि १२।२९ अकतूबर) को गुसलखानेमें ५१ वें शमसी सालके तुलादानका दरबार हुआ—बादशाहजादों और अमी-रोंने मुबारकबादें देकर निवाजिशें पाईं उनकी और बेगमोंकी पेशकशें पेश होकर कबूल हुईं.

शाहजादे मोहम्मदआजमको खिलअत नीमआस्तीन समेत और जडाऊ सरपेच इनायत हुआ। काशगरका खान ८ महीने ठहराकर मक्के जानेके वास्ते

रुखसत हुआ बादशाहकी तरफसे उसके सफरका सब सामान अच्छी तरहसे कर दियागया दिल्लीसे सूरतके बंदरतकके सूबेदारों, हाकिमों और फौजदारोंको हुक्म हुआ कि उसको बहुत आरामसे अपनी २ हदोंसे गुजरा देवें और महमानदार भी उसीतरहसे मुकर्रर हुए। अव्वलसे आखिरतक खानको २ लाख रुपये बादशाही खजानेसे मिलेंगे.

इनायतखां दीवान खालसाको असल और इजाफेसे ९ सदी १०० सवारका मनसब इनायत हुआ और शेखसुलेमान, मीरहुसैनी के बदले जानेसे ७ सदी ७० सवारका मनसब पाकर अदालत का दरोगा हुआ.

बुखाराके खान अबदुलअजीजखांके मीरआखोर (तवेलेकेदरोगा) को १ हजारी जातका मनसब मिला.

काबुलके उतरे हुए सूबेदार सैयद अमीरखांने मुलाजिमत करके ५०० मोहरें और २ हजार रुपये नजर किये बादशाहने पांवचूमते वक्त उसकी पीठ पर हाथ रखा.

खुशहालखां और दूसरे गवैयोंको ३ हजार रुपये और ४० खिल्अत इनायत हुए.

शरीफ मक्केका वकील सैयद उसमान खिल्अत ९ हजार रुपये और घोड़ा चांदीके साजका पाकर रुखसत हुआ.

किफायतखांके बदले जानेसे शफीअखां तनदीवान हुआ.

मुलतानके उतरेहुए सूवेदार ताहिरखांने हाजिर होकर १०० मोहरें नजर और १००० रुपये निछावर किये.

महाबतखांको ९०० मोहरें बेटा पैदा होनेके नजरानेकी नजर हुई और उसका नाम जमानाबेग रखवागया.

बख्शियोंके नाम हुक्म हुआ कि ३ सदी तक जो मनसबदार हैं उनके सवार **खिदमतकरनेवालों** और जमींदारोंके सिवाय मौकूफ करदेवें.

सफशिकनखां शाहजादे मोहम्मद मोअज्जमके पाससे आया और अंग्रेजों किलेदार मुखतार भी हाजिर हुआ.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें १०-लाख है.

'शरे' (मुसल्मानी धर्म शास्त्र) में मूर्ति रखनेकी मनाई होनेसे बादशाहने पत्थरके २ बडे हाथी जो किलेके दरवाजेके दोनों तर्फ उस्तादोंने बडी कारीगरीसे बनाकर खडे किये थे और इसी सबबसे उस दरवाजेको हथिपोल कहते थे उठवा दिये.

२७ रजब (पौषबदि १४।२२ दिसम्बर) को शाहजादे मोहम्मद आजिमकी शादीका जिशन (उत्सव) शुरू हुआ नक्कारखाना बैठा.

१० शाबान (पौषसुदि १२।३ जनवरी) को तीसरे पहर पीछे बादशाहने दरबार किया बादशाहजादेको ४ कुब्बका खिल्अत १० अरबी और इराकी घोडे २ हाथी सोनेके साज और तलायरके जडाऊ तलवार २० हजार रुपयेकी कीमतकी और १ सरपेच ६ं० हजार रुपयेका और १२ लाख रुपये नकद इनायत किये बेगम साहिबाको सरवरगज हाथी १६ हजार रुपयेका २ हाथी जहांजेबबानू बेगमको भी दिये.

९ घडी रात जाने पर शाहजादा अपनी हवेलीसे बडी धूमधामके साथ हजूरमें आया बादशाह उसको मसजिदमें लाये काजी अबदुल्वहाबने सैयद मोहम्मद कन्नोजीकी विकालत और मुल्ला एवजवजीह और शेखसेफुद्दीन सरहिन्दीकी गवाहीसे निकाह पढाया ६ं हजार रुपयेका मिहर बंधा फिर बादशाह शाहजादेको लेकर नव्वाब बेगम साहिबकी हवेलीपर गये बडे २ अमीर डेढ हजारी तक शाहजादेकी जिलो (अरदली) में थे २ पहर १ घडी रात गये पीछे शाह और शाहजादे वहांसे लौटे दिन निकलते ही दुल्हनका डोला शाहजादेके महलमें आया.

इस शादीके जल्सों इनामों रोशनी वगेराके ठाठका कुछ कहा नहीं जाता.

१७ शाबान (माघबदि ३।१०' जनवरी) को बादशाह शाहजादेके मकान पर गये किलेसे वहां तक सादे और सोने चांदीके बूटोंके कपडे सब रस्तेमें बिछेहुए थे.

बादशाह सोनेके तखत पर बैठे दरबारियोंने मुबारकबादें दीं हुक्म हुआ कि डेढ हजारी तक मनसबदार तो बख्शियोंकी मारफत खिल्अतका सलाम करें दूसरोंको खिल्अतखानेका दरोगा सलाम करानेको लावे.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें ६ लाख.

शाहजादेको पेशकश, जवाहर, और कपड़ा मिलाकर ९ लाख रुपयेकी हुई फिर बादशाह महलमें तशरीफ़ लेजाकर दौलतखानेको लौटगये। शाहजादेने सवारीके वक्त बादशाही नक्कारखानेके बाहर आकर सलाम किया और लौटते वक्त गुसलखानेसे रुखसत हुआ.

१३ (पौषसुदि १४।६ जनवरी) को काशगरके खान अबुलबारीसखांके वकीलने हाजिर आकर उसका नयाजनामा अर्थात् विनयपत्र नजर किया, जो अर्जियोंके दरोगा खिदमतगारखांके हवाले हुआ.

२० (माघ बदि ६।१३ जनवरी) को हुक्म हुआ कि जरी की पोशाक पहिनना शरेके खिलाफ है इसलिये मर्द न पहिना करें.

१२ वां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (माघसुदि ३।२४ जनवरी) से १२ वां जिलूसी सन् लगा.

जुमे (शुक्रवार) को ईद हुई[1] बादशाह जिलूसी सवारीसे ईदगाहको गये लौटते हुए जुमेकी नमाजआमें मसजिद-जहांनुमामें पढ़कर दौलतखाने को लौट आये। दूसरे दिन जड़ाऊ तखत पर बैठे। बादशाहजादों और अमीरोंने आदाब बजा लाकर नजरें और पेशकशें दीं, हजूर और सूबोंके अमीरोंको खिलअत मिले और मनसब भी सबके बढे महम्मदआजमको खिलअत और १९ हजारी ९ हजारका मनसब असल और इजाफेसे इनायत हुआ. बादशाहजादे महम्मद-अकबरको खिलअत मिला जाफरखां, महम्मदअमीनखां, असदखां, अबदुर्रहमान,

---

१ पंचाणके हिसाबसे ईद शुक्रको नहीं सोमको थी शुक्रको तो रमजानकी २७ वीं थी और ईद १ शव्वालको होती है, जो फाल्गुन सुदि २ सोमवारको थी पर असल किताबमें ईद और जुमेकी नमाज १ दिन होना लिखा है तो पिछले या अगले वर्ष ऐसा होसकता है जब कि शव्वाल गुरु और शनिवारको आती है और चंद्र दर्शनको तीसा उनतीसा माननेसे ईद जुमेको होसकती है। "मासिरआलमगीरी" औरंगजेबके पीछे लिखीगई है, जिससे ऐसी भूल होजाना असंभव नहीं है, क्योंकि औरंगजेबनेही जलदी दसवें वर्षमें इतिहास लिखनेकी मनाही करदी थी, इसके सिवाय खाफीखांने भी अपने इतिहासमें लिखा है कि बादशाहने पंचांग बंद करादिये थे, जिससे दफ्तरकी तारीखोंमें बहुत गड़बड़ होगई थी पृष्ठ २१५ "तवारीख खाफीखां" हिस्सा २.

सुल्तान नजर मोहम्मदखांके बेटे, नामदारखां, दानिशमंदखां, सैयद मनव्वरख और दूसरे छोटे बडे बंदोंकी इज्जत खिलअत और मनसबके इजाफेसे बढाई गई.

नजरमोहम्मदखांके पोते खुसरोसुल्तानके बेटे बदीउज्मांसुल्तान, नामदारखां, दानिशमंदखां, और सैयद मनव्वरखांके मनसब २ दो हजारी २०० दो सौ सवारोंके होगये।

हसनअलीखांके बदलेजानेसे खलीलखांका बेटा अमीरखां अरदलीके मनसबदारोंका दारोगा हुआ.

निजाबतखांका बेटा मोअतकिदखां जो १ कसूरमें मनसबसे दूर होगया था, फिर २ हजारी हजार सवारके मनसब पर बहाल हुआ.

बहलोलखां मयानेका पोता अबूमोहम्मद दक्खनसे हुजूरमें आकर ५ हजारी ४ हजार सवारोंके मनसब और इखलासखांके खिताबसे सरबुलंद हुआ.

बिदरका किलेदार मुखतारखां घोडा और खिलअत पाकर विदा हुआ.

१७ जीकाद (वैशाख बदि ३ । ९ अप्रैल) को सूरज ग्रहन था नमाज और मामूली खैरात हुई.

दीनदार बादशाहको खबर पहुंची कि ठट्ठे मुल्तानके सूबों और खासकर बनारसमें ब्राह्मण लोग मदरसे बनाकर अपनी किताबें पढाते हैं। हिंदू और मुसलमान विद्यार्थी दूर २ से इल्म पढनेके लिये उनके पास आते हैं। इसपर सब सूबोंके नाजिमोंको हुक्म लिखेगये कि मंदिर और मदरसे इनके गिरादेवें और पूरी २ ताकीद करके इनके जारी रहने और उनके पढने पढानेकी रसमें मिटादें[3].

१८ जीकाद (वैशाख बदि ४—५।१० अप्रैल) को ५१ वें कमरीसालगिरहकी मजलिस हुई, मगर तुलादान जो पिछले वर्षसे बंद होगया था नहीं हुआ। गानें बजानेवाले दरबारमें आने नहीं पाये। नक्कारची मामूलके मुवाफिक नौबत बजाते रहे।

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें २ हजार. २ कलकत्तेकी प्रतिके हाशियेमें २४ तारीख भी है. ३ कल्मी (हस्तलिखित) प्रतिमें इसके सिवाय इतना और लिखा है कि मन्दिरोंके गिरानेका हुक्म हुआ और गुर्जबरदार मलारनेका मंदिर गिरानेके लिये भेजागया

बादशाहजादे मोहम्मदअकबरको खिलअत, और ढाल, इनायत हुई। जाफ़रखां वगैरा हजूरमें खडे रहने वालोंको खिलअत मिले.

शाहजादे मोहम्मदमोअज्जमने बीजापुरके दुनियादार आदिलखां का भेजाहुआ एक्लाल हजूरमें भेजा जो ९ टांक और ९ रत्ती भर हुआ। मोल २० हजार आंका गया शाहजादेको खिलअत भेजा गया.

दिलेरखांका मनसब देवगढ फतह करनेके इनाममें पूरा ९ हजारी ९ हजार का होगया.

सूबे इलाहाबाद के अखबारसे मालूम हुआ कि अलावरदीखां आलमगीरशाही मरगया। हसनअलीखां, अरसलांखां, मोहम्मदशाहखां और अमानुल्लाहखा को मातमगि खिलअत मिले.

मीरखांने इलाहाबादकी सूबेदारीका खिलअत और ९ हजारी ३ हजार दुअस्पे और तिअस्पेका मनसब पाया। मोतकिदखां उसको जगह अरदलीके मर्दोका हिम्मतखां दीवान खासका, जाफरखांका बेटा कामगारखां, जवाहरके दाजारका और सादुल्लाहखांका बेटा लुतफुल्लहखां, डाकचौकीका दरोगा हुआ। इन सबको वालावंद मिले.

बुखाराके वकील मीरशाहउद्दीनको २ घोडे इनायत हुए.

१० जिल्हज्ज (वैशाखसुदि ११। १ मई) को बकरईदकी सवारी हुई सरबुलंदखांने दक्खिनसे आकर दरगाहकी चौखटपर माथा घिसा.

हकीमइब्राहीम जो अबदुल्लाहखां काशगरीके साथ सूरतबदरतक भेजागया था हजूरमें हाजिर आया। मिरजा मुकर्रमखां सफवीने जो घरमें बैठरहा था, वगैर हथियारके हाजिर होकर मुलाजिमत की। बादशाहने उसको तल्वार इनायत करके बंधाई.

१ कलकत्तेकी प्रतिके पेज ८१ में लिखा है कि बादशाहजादे मोहम्मदआजमके खिलअत और जडाऊ फूलोंकी १ ढाल, और बादशाहजादे मोहम्मदअकबरको खिलअत इनायत हुआ. २ कलकत्तेकी प्रतिमें हुसेनअलीखां और इंजरके नाम भी हैं. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें बलंदखां.

९ सदीसे १ सदीतकके मनसबदारोंकी अर्ज गैरहाधिरीमें होनेका और वं.- वीतकको खुद खडे होकर अर्ज करनेका हुक्म हुआ.

मुबारिजखांके बदले जानेसे सैफखां कश्मीरका सूबेदार हुआ.

२१ जिलहिज्ज (जेठ बदि ७।१२ मई) को अर्ज हुई कि मथुराका फौजदार सैयद अबदुल्नबीखां गांव हनेरेके बागियोंको सजादेनेके लिये चढकर गया था। पहिले तो जीतमें रहा और उनके सरदारको मारा, मगर फिर लडाईमें बंदूककी गोली लगनेसे खुद शहीद होगया वह सखी और श्रद्धालु था। अमलदारी (मुतसद्दीगरी) के साथ २ बहादुरी भी उसमें थी मथुरामें एक बडी मसजिद बनाकर अपनी यादगार छोडगया, जिससे मुद्दतोंतक उसका नाम जबानोंपर चढा रहेगा। उसके भतीजे मोहम्मदअनवरको मातमीका खिलअत भेजागया। उसका माल बादशाही मुतसद्दियोंने जप्त किया ९३ हजार अशरफी, १३ लाख रुपये, और ४ लाख ५० हजारकी जिन्स, थी.

२२ (जेठबदि ८-९।१३ मई) को रादअंदाजखां आगरेके तलहटीके बागियोंको सजादेनेके लिये विदा हुआ। सोनेके साजवाला घोडा मिला.

हिम्मतखांके बदले जानेसे सरबुलंदखां कोरबेगीकी खिदमत पर सरफराज हुआ.

लाहोरके सूबेदार मोहम्मदअमीनखांको लौटजानेकी रुखसत मिली.

मासूमखांने अरजी भेजी कि मोरंगमें १ जाली शुजाअ पैदा होकर फसाद कररहा है इब्राहीमखां और फिदाईखांके नाम ताकीदी हुक्म लिखेगये कि जो वह कहीं पर सिर निकाले तो उसका सिर काटलें.

अब्दुलनबीखांके मरजानेसे सफशिकनखां, मथुराकी फौजदारी पर और बेहादुरखां, रुहेलेका बेटा दिलेरखां, नद्राबादीकी फौजदारीपर मुकर्रर हुआ। बीरमदेव, सीसोदियाको सफशिकनखांके साथ जानेका खिलअत मिला.

१ कलकत्तेकी प्रतिमें होरा और हाथियेमें बसहराइ लिखा है. २ अबदुल्नबीको हिन्दू लोग नबीजी कहते थे वह बहुत भला आदमी था अबतक इसके लिये "नबीजी तुम बिन मथुरा सूनी" की कहावत लोगोंमें चल रही है. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें बिलेअहिम्मत.

उज्जैनके जमीदारके वकील सैयद अबदुलवहाबने मुलाजिमत करके खिलअत पाया. (२)

सन् १०८० हि०। संवत् १७२६।

१३ मोहर्रम सन् १०८० (जेठसुदि १४ संवत् १७२६ । ३जून) को बादशाह पहर भर रात्र गये पीछे हयातबख्श बागसे शेख सैफुद्दीन सरहिंदीके मकान पर गये और एक घडी तक फकीरीकी बातें करते रहे.

बादशाहसे अर्ज हुई कि हिंदुओंका माबूद (पूज्य) ऊधो बैरागी उन लोगोंको बहकानेकी सजामें कोतवाली चबूतरेमें कैद था. उसके चेलोंमेंसे दो राजपूत उसके छुडानेकी कोशिशमें काजी अबदुलवहाबके बेटे काजी अबुलमुकारमके पास आया जाया करते थे. मौका पाकर उन्होंने काजीके ऐसा कारी जमधर मारा कि उसकी जिंदगीकी डोरी कटगई बादशाहके हुकमसे वे तीनों बेदीन सयासत (फौजदारीके) कायदेसे कतल हुए.

रुघनाथ सीसोदियाने रानाको छोडकर दरगाहकी चौखट चूमी हजारी ३०० सवारका मनसब जमधर और १ हजार रुपया उसको मिला.

बसरेके हाकिम हुसेनपाशाका दरगाहमें आना।

मुलतानकी सरहदके खबर लिखनेवालोंकी अरजियोंसे अर्ज हुई कि बसरेका हाकिम हुसैनपाशा सुलतानरूमसे बिगाड होजाने और उसकी जगह याहा पाशाके आजानेसे न वहां ठहर सका और न कैसररूमके पास जासका लाचार अपने वाल बच्चों और कुछ नौकरोंके साथ वतन छोडकर ईरानमें गया मगर वहां भी मुराद हासिल न हुई, तो अब वह इस बडी दरगाहमें माथा घिसनेके वास्ते आता है, जो तमाम दुनियाके छोटे बडे आदमियोंके मुरादें मिलनेकी जगह है.

बादशाहने मेहरबानी और कदरदानीसे लाईकबेग गुर्जबरदारको हुक्म दिया कि वह सहरंदमें पहुंचकर खिलअत, पालकी और हथिनी उसको दे और बादशाही इनायतोंका उमेदवार करके ले आवे.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें साचीन है. २ इसकेआगे कलकत्तेकी प्रतिमें यह बात और लिखी है कि राजबहादुर गुर्जबरदार मलारनेका मन्दिर गिरानेके लिये रुखसत हुआ. ३ रघुनाथ. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें अरतकबेग.

१९ सफ़र (सावन वदि ११।४ जुलाई) को हुसैनपाशाके एजाबादमें पहुंचनेकी अर्ज हुई तो बादशाहके हुक्मसे फौलादखां कोटवाल नमककी मंडी तक बखशी उलमुल्क असदखां सदर उस्सुदूर आबिदखां और इक्केताजखां मीरतुजुक शहरपनाहके लाहोरी दरवाजेतक पेशवाई करके उसे दौलतखानेमें लाये गुसलखानेके दरवाजे तक बखशी उलमुल्क दानिशमंदखां और असदखां पेशवाईको गये वह दरबारियोंके कायदेसे आदाब बजालाया और इजाजत पाकर तखतका पाया चूमनेको झुका तब बादशाहने उसकी पीठपर हाथ रखकर उसका दरजा बढाया. उसके बेटे अफ़रासियाब और अलीबेगने ५ हजार रुपये निछावर किये उसने २० हजार रुपयेका १ लाल और १० अरबी घोडे, भेंटमें दिये। बादशाहकी तरफ़से खासा खिलअत, ६ हजार रुपये कीमतकी सोनेकी जडाऊ तलवार, जडाऊ खंजर, सोने चांदीके साजवाला हाथी, १ लाख रुपये—नकद ५ हजारी ५ हजार सवारका मनसब, और इसलामखांका खिताब, अफ़रासियाबको खांका खिताब, २ हजारी १ हजारका मनसब अलीबेगको खांका खिताब डेढ हजारी ५०० सवारका मनसब इनायत हुआ। रुस्तमखांकी सजीहुई हवेली नाव और फर्श समेत उसको दीगई और हुक्म हुआ कि नावमें बैठकर जमनाके रस्तेसे मुजरा करनेको आयाकरे यह बहादुर दाना अमीर शाइर भी था.

अटक बनारसके अखबारसे मालूम हुआ कि ४ (सफ़र आषाढ सुदि ५।२३ जून) को भूचालसे ५० गज जमीन फटगई। उसकी दरारकी गहराई जाननेके लिये बहुत कुछ महनत की गई मगर मालूम न हुई.

कशमीरके अखबारसे मालूम हुआ कि ३ सफ़र (आषाढ सुदि ४।२२ जून) की शामसे सुबह तक इमारतें हिंडोले की तरहसे भूचालके मारे झूलती रहीं मगर किसीके कुछ चोट नहीं आई।

सैयद खानजहां बारहका बेटा मनव्वरखां गवालियरकी फौजदारीपर मुकर्रर हुआ.

रायमकरंद बरेलीकी खिदमतसे बदलाजाकर बंगालेमें तईनात हुआ.

बादशाहजादे कामबखशको हाथी का बच्चा इनायत हुआ.

राजा जयसिंहके बेटे रामसिंहको १ हजार सवारोंका इजाफा मिला.

इसलामखांको हजारी हजार सवारका इजाफा मिला १० महीनेकी तनख्वाह उसको और ८ महीनेकी उसके बेटोंको नकद मिलनेका हुक्म हुआ जानवरोंकी खुराक उसे तो हमेशाके लिये और बेटोंको २ वर्षतकके लिये माफ हुई.

अब्दुल्लाहखांको मनसब २ हजारी १ हजार सवारका बहाल होकर खिलअत, जमधर, मीनाकार, और गुसलखानेकी दरोगाई का काम मिला.

१९ रबीउलअव्वल (भादोंवदि २ । ३ अगस्त) को मुकर्रमखां सफवी तपसे मरगया.

दीनको पनाह और मदद देनेवाले बादशाहसे अर्ज हुई कि काशी विश्वनाथका मंदिर गिरा दिया गया.

२ जमादिउलअव्वल (आसोज सुदि ३ । १८ सितम्बर) को पक्केताजखां और गिरधरदास सीसोदियेमें अहलमामके ऊपर लाहोरी दरवाजेके आगे लड़ाई हुई । हिन्दू मारा गया. खानके ५ घाव लगे और कई मुगल उसकी बिरादरीके जखमी हुए.

इफ्तखारखां खानसामानको हुक्म हुआ कि ऊटों बैलों और खच्चरोंका मोहल्ला (हाजरी ; साल भरमें २ बार दिखाते रहें.

११ (कार्तिकवदि ९ । २ अकतूबर) को बादशाहके खासो आममें बैठनेके पीछे मुलतिफितखां और रूहुल्लाहखां आपसमें बातें करहे थे अलफखां मोहम्मदताहरके बेटे दिलेदारखांने, जो मुलतिफितखांसे दुश्मनी रखता था, अचानक दोनों हाथोंके जोरसे उसकी पीठ पर तलवार मारी और ज्योंही वह सामने हुआ तो ३ तलवारें और मारीं । उसने सिर उठाकर उसके १ तलवार मारी । हिम्मतखांने भी एक तलवार मारनेकी हिम्मत की । फजलुल्लहखां मीरतुजुकने १ लाठी उसके सिर पर ऐसी मारी जिससे उसका सिर चकरागया और बहरेमंदखां और दूसरे आदमियोंके हाथोंकी लाठियां खाता हुआ संगमरमरकी चौकी

१ कलकत्तेकी प्रतिमें गिरजा-घर. २ कलकत्तेकी प्रतिके पेज ८८ में १५ रबीउल आखिर आसोजवदि ३ । ९ सितम्बर. ३ यह शायद क्यामखानी था.

तक पहुंचा था कि जमीलबेग खवासने जमघर बगलमें मारकर उसका काम पूरा कर दिया उसकी लाश बाहर डालीगई। दंगलजटके लोगों और उस दिन की चौकीके चेलोंके मनसब कम होगये.

हिसारके चकलेमें १ करोड दाम शाहजादे मोहम्मदमोअज्जमकी जागीरकी तनखाहमें थे। ये सब इनाममें मुकर्रर होगये और उस जागीरकी तनखाह उसको दक्खनमें मिलगई.

२९ (कार्तिकबदि १२।११ अकतूबर) को अर्ज हुई कि ४ घडी रात गये पूर्वकी तरफ एक तारा टूटकर पश्चिमको गिरा। उसके उजालेसे घरोंमें चांदनी सी छिटक गई फिर बादलके गरजनेकी सी आवाज आई.

जुम्दतुलमुल्क जाफरखांको आअज्जाबादके बाग और नवलबाडीमें जानेकी इजाजत हुई.

१० जमादिउलआखिर १४ शाबान (कार्तिकसुदि १२।२६ अकतूबर) को ५२ वें शमसीबर्ष लगनेकी खुशीका दरबार हुआ, बादशाहजादे मोहम्मद आजम और मोहम्मदअकबर पर बडी २ इनायतें हुईं.

इसलामखांको १०० तोंके जरीके बुनेहुये मिले.

बलखके यकील शादमाँ ख्वाजाको फजलउल्लाहखां और हुजबखां गुसलखानेके दरवाजेसे लाये। उसने सुबहानकुलीखांका सलाम अर्ज किया और खिलअत और २ हजार रुपया इनाम पाया.

राफीखां उडीसेकी सूबेदारी पर तरबीयतखांके बदले जानेसे भेजागया.

१५ और १६ (मँगसिरबदि ३–४। ३१ अकतूबर १ नवम्बर) को बादशाहने जाकर हुमायूं बादशाह निजामुद्दीन औलिया. और कुतुबुद्दीन बखतियार काकीकी कबरोंकी जियारत की। मुजावरोंको इनाम दिये और तबर्रुक लिये.

ऐतकादखांके बेटे मोहम्मदयारखांको नया मनसब ४ सदीका मिला.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें दंगलचप थोथो दंगल सिपाहियों या पहलवानोंके रहनेकी जगह. २ थान. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें १० हजार. ४ प्रसाद.

गोलकुंडेके दुनियादारका हाजिब (ड्योढीदार) १ हजार मोहरें और १५ हाथी नजर करनेको लाया.

आबिदखांके बेटे मीरशहाबुद्दीनने विलायतसे आकर १ मीनाकार ढाल नजरकी और ३ सदी ७० सवारोंका मनसब पाया। यह जब अपने बापके बुलाने पर बलखके खान सुबहान कुलीखांसे हिन्दुस्थान आनेके लिये रुखसत हुआ, तो खानने कहा था कि तू हिन्दुस्थानमें जाता है बडा आदमी हो जायगा फिर हमको याद न करेगा। सो ऐसा ही हुआ। बादशाहकी महरबानीसे इतना बढा कि उसकी दौलत और हशमतके आगे बलख और बुखाराके खानोंकी बादशाहतका नाम ही नाम था.

इति औरंगजेब नामा चतुर्थ खण्ड समाप्त।

पांचवां खण्ड।

बानियोंको दंडदेनेके लिये आगरे जाना।

१४ रजब (पौषवदि १।२८ नवम्बर) को बादशाह आगरेको रवाने हुए शिकार खेलतेहुए जाते थे २० (पौषवदि ७।४ दिसम्बर) को रेवडा चंदरख और सरखरूके सरकशोंके सिर उठानेका हाल मालूम होनेपर हुसेनअलीखांने बादशाहके हुक्मसे उन पर छापा मारा। दोपहर तक तीर और बंदूककी लडाई हुई। फिर वे लोग अपने कबीलोंका जोहर करके तलवारोंसे लडे। बादशाही बंदे और हुसेन-अलीखांके नौकर बहुतसे काम आये। ३०० आदमी उनके भी मारेगये। २५० औरत मर्द कैद हुए तीसरे पहर खानने हजूरमें आकर लडाईकी कैफियत अर्जकी। हुक्म हुआ कि कैदियों और मवेशीको उस गांवके जागीरदार जैनुलआबिदीनखांके हवाले करदें.

---

१ हैदराबादके नवाब इसी शहाबुद्दीनकी औलादमें हैं और बलखबुखारासे १० गुनी ज़ियादा पैदावारके मुल्कोंके मालिक बनेबैठे हैं इसतरह हमेशासे बाहरके आदमी हिंदुस्तानमें आकर फकीरसे अमीर बनते रहे हैं. २ कलकत्तेकी प्रतिमें रेवाडा. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें हसनअलीखां.

सफशिकनखां फौजदार मथुराने मुलाजिमत की. उसको हुक्म हुआ कि अपने ताबेदारोंमेंसे २०० सवार गावोंकी हिफाजत पर तइनात करदे जिससे किसीकी खेती खराब न हो, लश्करके आदमियोंसे किसीपर जुल्म न हो, किसीके बच्चे पकडे न जावें.

मुरादाबादका फौजदार नामदारखां हुक्म पहुंचनेपर हाजिर होकर १०० मुहर १००० रुपये और २ काले शाहीन नजर लाया.

हुसेनअलीखां सफशिकनखांके बदलेजानेसे ३ हजारी २ हजार सवारका मनसब खिलअत तलवार और घोडा पाकर मथुराका फौजदार हुआ.

अल्लावरदीखां आलमगीरशाहीका बेटा अमानुल्लाहखां फौजदारआगरा ३०० सवारोंका इजाफा पाकर हुसेनखां की मदद पर मुकर्रर हुआ.

२ हजार सवार बर्कन्दाज १ हजार तीरंदाज और १ हजार बंदूकची १ हजार बानेत २९ तोपें १ हजार बेलदार और १ हजार तबरदार भी हुसेन अलीखांके पास तईनात हुए होशदारखां आगरेके सूबेदारने मुलाजिमत की.

१ शाबान (पौषसुदि ३।१९ दिसम्बर) को शाहजादे मोहम्मदमोअज्जमके घरमें रूपसिंह राठोडकी बेटीसे लडका पैदा होनेकी १ हजार मुहरें अरजीके साथ बादशाहकी नजरसे गुजरीं दौलतअफजा नाम रखागया। फरमान, जवाहर, १ लाख रुपया, शाहजादे और उसकी मांके लिये भेजागया।

१७ (माघवदि ४।३१ दिसम्बर) को बादशाहने अपने बाप और मांकी कबरपर जाकर ४९ हजार रुपया अपनी और २ शाहजादोंकी तर्फसे नजर किया.

१८ (माघवदि ५।१ जनवरी) को सवारी आगरेके दौलतखानेमें दाखिल हुई.

इलाके तबसिंधेके फसादियोंका रईस गोकला जाट जिसने सादाबादके परगनेको लूटा था और जिसके सबबसे अबदुलनबीखां मारागया था हुसेन-

१ कलकत्तेकी प्रतिमें फरमान और जवाहर १ लाख रुपयाका, बादशाहजादेशाहजादे और उसकी मांके लिये भेजाजाना लिखा है पेज ९३. २ कलकत्तेकी प्रतिमें ४४ हजार. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें पटना. ४ गोकलाजाटका नाम महाराजा भरतपुरकी वंशावलमें आता है (विकाये राजपूताना जिल्द ३.)

अलीखां और उसके पेशकार शेख रजीउद्दीनकी महनत कोशिश और नसीब-वगैरेसे पकडागया। खानने उसको और उसके साथी उदेसिंहको शेख रजीके साथ दरगाहमें भेजा। बादशाहके हुक्मसे कोतवाली चबूतरेमें दोनोंके टुकडे २ किये गये. गोकलाका लडका और लडकी दोनों तरबियतके लिये जवाहरखां नाजिरके हवाले हुए लडकी तो शाहकुली चेलेके निकाहमें दी गई और लडका कुरान याद करके बडा हाफिज होगया. उसका नाम फाजिल रखागया। बादशाहको उसके बराबर और किसीके कुरान पढनेका एतबार न था उसको आप भी कुरान सुनाया करते थे.

शेख रजीउद्दीन भागलपुरके भले आदमियोंमेंसे बडा मौलवी था. वह फतवाय आलमगीरीके बनानेवालोंमें ३ रुपया रोज पाता था और दूसरे हुनर भी जानता था। सिपाहगरी मुतसद्दीगरी सभाचातुरी हर जगहकी खबरदारी और सिर देनेमें भी वह निराला था। हजूरी महोतसब काजी मोहम्मदहुसेन जौनपुरीके कहनेसे बख्तियारखां मुसाहिबने उसके गुणोंकी अर्ज बादशाहसे की। पहिले १ सदी मनसब मिला फिर थोडे ही दिनोंमें हुसेनअलीखांके वसीलेसे और अपने गुणों और नसीबकी मददसे अमीरी और खानीके दरजेको पहुंचा और बडे २ काम करके मरगया.

१३ वां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (माघसुदि २।।१३ जनवरी) को १३ वां जलूसीवर्ष लगा.

१९ (फाल्गुनवदि ९।२७ जनवरी) को हुक्म हुआ कि फरयादियोंको आनेसे मना न करें और महलवाले उनकी अर्जियां रस्सीमें बांधकर ऊपर खेंचलें.

मथुरामें जो केशोराय का मशहूर देहरा था मोहम्मदपैगम्बरके दीनको जिंदा करनेवाले बादशाहने उसके गिरानेका हुक्म दिया कामकरनेवालोंने थोडे दिनोंमें उसकी मजबूत नीवोंको उखाडकर उसकी जगह १ बडी मसजिद बहुतसा रुपया लगाकर बनवादी.

यह मंदिर "बरसिंहदेव बुंदेले" का बनाया हुआ था, जिसने जहांगीर बादशाहके जलूससे पहिले शेखअबुलफजलको मारकर अपना नकशा उनके जीमें

१ कलकत्तेकी प्रतिमें सिंगी. २ कलकत्तेकी प्रतिमें हसनअलीखां.

जमालिया था क्योंकि ये शेखसे नाराज थे। बादशाह होनेके पीछे उस खिदमतके इनाममें उसने इस देवखानेके बनानेकी इजाजत लेकर ३३ लाख रुपये इसमें लगाये खुदाका शुक्र है कि इसबगावतके बढानेवाले जमानेमें यह नहीं होने-वाला अजब काम हुआ। जिससे दीनकी कुव्वत बढकर बडे २ घमंडी राजाओंका दम खुश्क होगया। छोटी बडी जडाऊ मूर्तियां अकबराबादमें लाकर नव्वाब कुदसियाबेगमकी मसजिदकी सीढियोंके नीचे गाडदी गईं। मथुराका नाम इसलामाबाद दफ्तरोंमें लिखने और लोगोंसे कहलानेके लिये रखागया.

१ शव्वाल (फाल्गुनसुदि ३।१२ फरवरी) को बादशाह ईदकी नमाज पढनेके लिये हाथीपर सवार हुए और शाहजादे मोहम्मदआजमको पीछे बैठाकर ईदगाहमें लेगये.

दूसरे दिन खासो आममें अलीमरदानखांके नजर कियेहुए तखतपर जो उस महलके बीचमें लगाहुआ था बैठकर बखशिशें कीं बादशाहजादे मोहम्मदआजम और मोहम्मदअकबरको खिलअत मिले.

जाफरखांको हजार सवारका इजाफा और १ करोड दाम इनाम मिला.

राजा रामसिंह जो ४ हजारी ४ हजार सवार दो अस्पे और तिअस्पेका मनसबदार था आसाममें तइनात रहनेकी शर्तपर हजारी हजार सवारके इजाफेसे सरफराज हुआ.

राजा रामसिंहके बेटे कुँवर किशनसिंहको जडाऊ सरपेच मिला.

हुसेनअलीखांको ५०० सवारोंका इजाफा बगैर किसी शर्तके और नक्कारा इनायत हुआ.

अशरफखां और हिम्मतखांको ५।५ सदीके इजाफे मिले मीरतकी ३ हजारी हुआ मुलतिफतखां और मुगलखां ५।५ सदीके इजाफेसे २ हजारी हुए.

सजावारखां और फजलुल्लाहखांके सौसौ सवार बढे.

असदखां बख्शी और फैजुल्लाहखांको घोडे मिले और अबदुलरहमान सुलतान और बहरामसुल्तानको १०।१० हजार रुपये इनायत हुए.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें हुसनअलीखां.

बलखके एल्ची शादमाँख्वाजाको रुखसत होकर २९ हजार रुपये चांदीकी झूलका हाथी १०९ जामावारके थान इतने ही चीरे आगावानीके और गुजराती कमरबंद और उसके साथियोंको १० हजार रुपये इनामके मिले.

जाहिदखां पंजाबीके बेटे मोहम्मदआबिदने डेढ हजारी ३०० सवारोंके मनसब और नवाशिराखांके खितावकी नवाजिश पाई.

दारावखां खासा खिलअत पाकर अबदुल्लाहखांके बदले जानेसे गुसलखानेका दरोगा हुआ.

आगरेके कारखानोंके दरोगाने नाजका निर्ख बादशाहसे अर्ज किया खुरदा चावल सुखदास गेहूं चना घी[1].

१९ जीकाद १७ फरवरदीन (वैशाखवदि ११२७ मार्च) को ५४ वां कमरीवर्ष लगा. बादशाहने जशनके दिनोंकी सजावट मोकूफ करदी.

सवारोंके दरोगा बखतावरखांको बिल्लोरके दस्ते और सुनहरी मीनाकार साजका खंजर इनायत हुआ.

सवारोंके अहतसाबका काम काजी मोहम्मदहुसेनके मरजानेसे सैयद मोहम्मद-कन्नोजीके बेटे सैयद अमजदखांने पाया.

जो लोग हजूरमें खडे रहते थे और आपसमें सिरपर हाथ रखते थे उनको सलाममलेक करनेका हुक्म हुआ.

.९ वीं जिलहिज्ज (वैशाखसुदि ११।२० अप्रेल) को मुल्लाअबदुलरशीदके बेटे मुल्ला अबदुलअजीजने जिसे ५) रोज वतनमें मिलते थे और वह बडा गुनी था. हिम्मतखां और बखतावरखांके वसीलेसे मसजिदमें बादशाहसे सलाम करके पहिले तो ४ सदी ७० सवारका मनसब खिलअत सरपेच, घोडा, तलवार, जमधर बरछी पालकी वगैरह सरदारीका सामान पाया और चौथे दिन जब अर्ज मुकर्ररके वास्ते आया तो एक सदी और ३० सवारका इजाफा होकर लुतफुल्ला-

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें खुरदा चावल सुखदास १४ सेर गेहूं ३५ सेर घी ४ सेर। कलेमी किताबमें भी यही भाव लिखा है. २ कलकत्तेकी प्रतिमें इतना और लिखा है कि नक्कारखानेके अमलेको हुक्म हुआ कि जशनकी नौबत जो तमाम दिन बजाते हैं मुबारिक दिन इतवारके जशनमें जैसा दस्तूर है वैसेही १ पहर गुजरे पीछे बजाते रहें.

-हखांके बदले जानेसे अर्ज मुकर्ररका दरोगा हुआ. खासेके आगे चलने और किसीसे सिरपर हाथ नहीं रखने और सलामअलेक करनेका कुर्ब भी उसको मिला.

दक्खनके अखबारसे अर्ज हुई कि सेवा पूनाका किला लेकर शेखरजीउद्दीन किलेदारको पकड लेगया.

बखतावरखांने दीवानियों (दीवानों) को हुक्म पहुंचाया कि साल्के खतम होनेपर जमाखर्च अर्ज करते रहें शनीचर और बुधके दिन दीवान और खाल्सेके दफ्तरोंकी जिल्दें (कितावें) गुंसलखानेमें लाया करें.

इनायतखांने १४ लाख रुपयोंका खर्च आमदनीसे जियादा होना अर्ज किया। हुक्म हुआ कि खालिसेके ४ किरोड रुपये मुकर्रर रक्खें और इतनाही खर्च भी करें.

खर्चके कागजोंको देखकर अपनी और शाहजादोंकी और बेगमोंकी सरकारोंमें बहुतसा खर्च घटादिया.

बादशाहने यह सुनकर कि हुसेनअलीखांने बेदीनोंके मारने घर लूटने और राहियोंके गिरानेमें कोई बात बाकी नहीं छोडी है और शेखमोहम्मदपंवार, सीदमवल्लच, शेख रजीउद्दीन, लालमोहम्मद और नजरमोहम्मद वगैरहको वहांकी जमीदारीपर जमा दिया है। हजूरमें बुलायागया और जब वह २६ (जेठवदि १२। ६ मई) को हाजिर हुआ तो शाबासी दी.

२८ (जेठवदि ३०। ९ मई) को दिल्लीसे बदरुन्निसाके मरजानेकी खबर पहुंची। बादशाहकी बेटी थी इसपर बडी मरजी थी इसलिये बहुत रञ्जहुआ और उसकी रूहको सवाब पहुंचानेके लिये बहुतसी खैरात की.

शाहजादे मोहम्मदमोअज्जमके खुद मुखतार होजानेके विचारोंकी अर्ज होनेसे बादशाहने उसको लगातार नसीहत और महरबानीके फरमान भेजे और उसकी मा नव्वाब बाईको भी समझानेके लिये उसके पास भेजनेके वास्ते दिल्लीसे

१ कलकत्तेकी प्रतिमें इसको पुरन्दरका किलेदार लिखा है. २ कलकत्तेकी प्रतिमें आला हजरत (शाहजहां) के जमानेसे १४ लाख रुपयोंका खर्च आमदनीसे जियादा होना लिखा है पेज १००. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें हसनअलीखां. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें शाहमोहम्मदनवाज.

बुलाया। इफ्तखारखां खानसामानको मीठी कड़वी बातें शाहजादेके कानमें कह-नेके लिये भेजा वह दौड़ाहुआ गया और सब बातें कहीं मगर शाहजादा हुक्म-में ही था उसने सब कुछ मानलिया आजजी बंदगी और शर्मिन्दगीकी अरजियां भेजीं बादशाहने भी राजी होकर उसपर बहुतसी इनायत और महरबानी की.

इफ्तखारखांसे कोई बुरा काम होगया था इसलिये बादशाह उससे नाराज होगये और जब वह दरगाहमें आया तो वह और उसका भाई मुलतिफितखां दोनों खफगीमें फंसकर मनसब और खिताबसे बरतरफ होगये.

शेरबेग गुर्जबरदारने सुलतान हुसेनको अटकसे उतार दिया और इब्राहीम-हुसैनको १ यसावलने लाहोरमें पहुंचाया। अशरफखां पहिलेकी जगह खानसा-मान और मुगलखां दूसरेके निकाले जानेसे गुर्जबरदारोंका दरोगा हुआ.

मुगलखांकी जगह हाजी अहम्मदखांने अर्ज मुकर्रकी दरोगाई पाई.

१७[२] (जेठबदि ३।२८ अप्रेल) को अर्ज हुई कि दिलेरखां देवगढके जमी-दारको उसकी जमीदारीपर पहिलेके मुवाफिक कायम करके औरंगाबादको रवाने होगया.

२ जिलहिज्ज (वैशाखसुदि ४ । १३ अप्रेल) को नव्वाबबाईकी सवारी दिल्लीसे सिकन्दरेमें पहुंची शाहजादा मोहम्मदअकबर बखशी उलमुल्क बहरेमंदखां और असदखां पेशवाई करके दौलतखानेमें लाये.

१० (वैशाखसुदि १२।२१ अप्रेल) को ईदकी नमाज और कुरबानी हुई. दोस्त मोहम्मद खतीबको ११ खिलअत और ५०० रुपये इनायत हुए और न्यामतखां बकावल (बावरची) को १ छुरी दस्तूरके मुवाफिक मिली.

दिलेरखां और दाऊदखांके वास्ते खिलअत और जड़ाऊ जमधर गुर्जबरदारके हाथ भेजेगये.

मुकर्रमतखांके बदलेजानेसे हाजी सैफखां दक्खनका दीवान और किफायतखां उसकी जगह तनदीवान हुआ किफायतखांकी बदलीहोनेसे दाग और तसहीहा की दरोगाई शाहख्वाजाने पाई.

---

१ असल किताबमें जिलहज्जमहीनेकी तारीखें न जाने क्यों आगे पीछे लिखी हैं.
२ कलकत्तेकी प्रतिमें सफरीखां.

नवाबबाई औरंगाबादको रवानेहुई बादशाहने हुक्मदिया कि वह दो दिन अपने वडे बेटे शाहजादे मोहम्मदसुलतानके पास रहे जो ग्वालियरके किलेमें कैद है और फिर सरबुलंदखां इसको शाहजादे मोअज्जमके पास दक्खनमें पहुंचा कर आजावे.

२९ (जेठवदि १२। ६ मई) को जुमदतुलमुल्क जाफरखां मरगया। बादशाह दो दफे पहिले उसकी बीमारीमें गये थे और तीसरीबेर फिर मातमपुरसीको गये। वह एक वडा अच्छा नेक वजीर था उसके मरनेसे बादशाहने बहुत रंज और अफसोस किया और हुक्मदिया कि ३ दिन तक १२० थाल खानेके मातमदारोंके लिये भेजे जावें शाहजादे मोहम्मदअकबर और मोहम्मदआजम उसके बेटों नामदारखां और कामगारखांके घर मातमपुरसी को जावें और उनकी मां फरजानाबानूको तसल्ली देवें। फिर दोनों लडकोंके लिये खिलअत और उनकी मांके वास्ते तोरे भेजेगये और बादशाहजादा मोहम्मदअकबर दोनों भाइयोंको मातमसे उठाकर हजूरमें लाया। हरेकको जडाऊ खंजर मोती लडीके और दूसरी नवाजिशें मिलीं और अपने भाईबंदोंको भी मातमसे उठालेनेका हुक्म हुआ। मातमी खिलअत बखशीउलमुल्क असदखां मिरजाबहराम और उसके बेटों बहरेमंदखां और शर्फुद्दीनखां इखतिफातखां मुफतखर मुफाखर और रोशनदिल, वगैरहको भी मिले बखशीउलमुल्क असदखांको नायबदीवानीको खिदमत जडाऊ खंजर और २ बीडे पानके बादशाहके हाथसे इनायत होकर हुक्म हुआ कि रिसालत[1] बादशाहजादे मोहम्मद मोअज्जमकी लिखें और बादशाहजादे की मोहर दयानतखां कियाकरे.

---

१ रिसालतके मायने हुक्म पहुँचानेके हैं बादशाही फरमानोंमें वजीरकी रिसालत लिखीजाती थी जिसका यह मतलब होता था कि बादशाहका हुक्म वजीरने दफतरमें पहुँचाया जिससे यह फरमान लिखागया जाफरखांके मरनेपर कोई दीवान नहीं हुआ था और असदखां नायब दीवान बनाया गया था जिससे उसका नाम रिसालतमें नहीं लिखा जासकता था इसलिये बादशाहने शाहजादे मुअज्जमका नाम रिसालतमें लिखानेका हुक्म दिया था यह पुराना कायदा है जब हिंदुओंका राज था तो शासनपत्रोंमें रिसालतकी जगह दूतक शब्दके आगे हुक्म पहुंचानेवालेका नाम लिखाजाता-;

२७ (जेठवदि १४ । ८ मई) को यक्केनाजखांने बुखाराकी एलचीगरी पर मुकर्रर होकर १०० मोहरोंकी कीमतका घोडा, ४ हजार रुपयेकी कीमतका हाथी, जडाऊ जमधर जडाऊ तलवार, और जडाऊ जीगा पाया मनसब भी डेढ हजारी ९०० सवारसे दो हजारी ६०० सवारका होगया बुखाराके खान अबदुलअजीजखांके वास्ते २ लाख रुपयेसे जियादा कीमतकी हिंदुस्थानी सौगातें ९ ताजी और ४ कच्छी घोडे उसके हाथ भेजेगये मुगलखां सोनेकी अ[illegible] (छडी) पाकर उसकी जगह मीर तुजक हुआ.

लश्करखांके बदले जानेसे मुबारजखां मुलतानका नाजिम और जहांगीर कुलीखां बादशाहजादे मोहम्मदआजमकी नायबीमें जंभलके चकलेका फौजदार हुआ.

महाब्बतखांकी बदली होकर काबुलकी सूबेदारीका फरमान मोहम्मदअमीनखांके नाम लिखागया और फिदाईखांकी जगह तरबीयतखां अवधका सूबेदार हुआ। और फिदाईखां हजूरमें आकर किसी मसलिहतसे गवालियरमें रहनेके लिये बादशाहके कदम चूमकर गया रकाबके तोपखानेका दरोगा राहअंदाजखां राजा देवीसिंह, याहाखां दखनी, सैयदअली अकबर, रुमीखां, कारतलबखां, मेवाती, वलीमसुलतान बलखी, मिरजासद्रउद्दीन मिरजासुलतानका बेटा और दूसरे उसके साथियोंको खिलअत, इजाफे, घोडे, तलवारें, और जडाऊ जमधर इनायत हुए, राहअंदाजखांकी नायबीमें जानीखां रकाबके तोपखानेका दरोगा हुआ.

–था यह काम बहुधा उस समय भी राजकुमारही किया करते थे हमको कन्नौजके राजा भोजका १ ताम्रपत्र संवत् ९०० का खुदाहुआ मिला है उसकी समाप्तिमें लिखा है "श्रीभाज्ञागमदनामा यवनराजदूतकः सम्वत्सरे ९०० फाल्गुन सुदि १३ निबद्धम् ॥" अबभी रजवाडोंमें दूतकी जगह दुवो शब्द लिखाजाता है जोधपुर दरबारमें दुवोश्रीमुख लिखकर आगे परवानगी परधान या दीवानकी लिखीजाती है जैसे महाराजा अभयसिंहजीके १ पट्टेमें लिखा है "संवत् १७८४ रा मगसिर बद ९ मु ॥ जहानाबाद दुवो श्रीमुख परवानगी राठोड महासिंह भगवानदासोत खांप चांपावत । लीपी राय रुगनाथ–" इसका यह मतलब हुवा कि दुवायती (आज्ञा) श्रीमुख (महाराजाके निजमुख) और परवानगी राठोड महासिंह (प्रधान) सेरायरघुनाथ (दीवान) ने लिखा.

१ कलकत्तेकी नकलमें मेवाती. २ बादशाहकी सवारीमें रहनेवाला-तोपखाना.

सन् १०८१ (संवत् १६२७–२८)

२७ रबीउलअव्वल सन् १०८१ हि. (भादोंवदि १४ संवत् १६२७ । ४ अगस्त सन् १६७० ई०) को शाहजादे मोहम्मदआजमके घरमें जहांजेबबानू-बेगमसे लडका हुआ । बादशाहने खुश होकर उसका नाम बेदारबख्त रखकर उसके वास्ते २ हजार रुपयेकी १ टोपी और ७ हजार रुपयेकी सुमरनी भेजी और बादशाहजादेको भी खिलअत इनायत किया.

अमानतखां सैयदअहमदखांका खिताब पाकर सूबे बंगालेकी दीवानीपर गया.

काशगरका खान अब्दुल्लहखां हज करके वापस आया सूरत और मालवेके खजानेसे १ लाख रुपये मिले.

मीरबख्शी दानिशमंदखां नाजिम और किलेदार दारुलखिलाफे (दिल्ली) के मरजानेकी अर्ज हुई जो १० रबीउलअव्वल (सावनसुदि ११ । १८ जुलाई) को मरा था बडा नामी नेक और विद्वान् अमीर था । मीरबख्शीगरी तो मुल्तानके सूबेदार लश्करखांको, जो हजूरमें पहुँचगया था, इनायत हुई और उसके ४ हजारी ४ हजार सवारके मनसबपर हजारी हजार सवारका इजाफा भी हुआ. और असदखांकी बदली होनेसे तीसरा बख्शी हिम्मतखां दूसरा बखशी हुआ.

नामदारखां दारुलखिलाफेकी सूबेदारीपर और मोतमदखां किलेदारीपर मुकर्रर हुआ.

सैयद अमीरखां जिसने मनसब छोडदिया था. और दिल्लीमें रहता था २७ रबीउलआखिर (आसौजबदि १४ । ३ सितम्बर) को मरगया । मोहम्मदइब्राहीम मोहम्मद इसहाक और मोहम्मद याकूब जो उसके भतीजे और शेखमीरके बेटे थे मातमीके खिलअतों और तरह २ की तसल्लियोंके साथ मातमसे उठायेगये.

पिशौरके अखबारसे मालूम हुआ कि मोहम्मदअमीनखां १० रबीउलअव्वल (सावनसुदि ११ । १८ जुलाई) को वहां पहुंचा था.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें यों लिखा है कि १० हजार रुपयेकी टोपी बेदारबख्तको १० हजार रुपयेकी माला मोतियोंकी ७ हजार रुपयोंकी सुमरनी बेगमको इनायत हुई. कलकत्तेकी प्रतिमें १० रबीउलआखिर (भादोंसुदि ११ । १७ अगस्त)

असदखां मुरतिजाखां आबिदखां ताहिरखां वगैरा हजूर और सूबोंके बंदोंको बरसाती खिलअत इनायत हुए.

हाजी अहमदसईदखां बेगम साहिबकी दीवानीपर रखागया. उसकी जगह लुतफुल्लाहखां अर्ज मुकर्ररका दरोगा हुआ.

बादशाहजादे (मोहम्मद आजम) के वकीलोंकी बदली होकर संभलकी फौजदारी फैजुल्लाहखांको इनायत हुई. और उसकी जगह सरबुलंदखां कोश-बेगी हुआ.

२४ जैमादिउलअव्वल १७ शाबान (कार्तिकवदि ११।२९ सितम्बर) को शमसी सालगिरहकी खुशीका दरबार हुआ बादशाहजादों और अमीरोंने मुबारकबादें और नजरें देकर अपनी मुरादें पाई.

रादअंदाजखां जो फिदाईखांके साथ गया था हजूरमें बुलालिया गया.

हजूरमें अर्ज हुई कि २७ जमादिउलअव्वल (कार्तिक वदि १४।२ अकतूबर को सेवा, (शिवाजी) सूरतबंदर पर दौडा और कई घडी तक शहरको जला-कर चलागया.

बादशाहजादे मोहम्मदमोअज्जमकी भेजीहुई १ हजार मोहरें संजरनअसानी-की बेटी नूरुलनिसाबेगमसे लडका पैदा होनेकी नजरकी उसके वकील मिरजा-

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें ताहिरखां और आबिदखांके बीचमें हसनअलीखांका भी नाम है.

२ कलकत्तेकी प्रतिमें २४ जमादिउलआखिर (मगसिरवादि ११ । २८ अकतूबर)

३ कलकत्तेकी प्रतिमें और शहरवालोंको लूटकर.

४ हमको सेवाजीके वकीलका १ हुक्मनामा जो सूरतके ओहदेदारोंके नाम लिखा गया था मिला है जिसमें बडे जोर शोरसे लिखा है कि बादशाहीके दावेदार महाराजा सेवाने अपने लशकरके खर्चके लिये सूरतकी चोथ उगानेको अपने तहसीलदार भेजे हैं सो ईमानदारीसे उनको वसूल करादेना देर करोगे या अपने बादशाहके भरोसे रहोगे तो महाराजा अपनी जंगी फौजको हुक्म देंगे जो आकर तुम्हारे शहरको लूटलेगी तुमसे तुम्हारे बादशाहसे और अमीरोंसे कुछ नहीं होसकेगा पहिले भी ऐसा होचुका है सो देखही चुके हो । इस हुक्ममें बादशाही ओहदेदारोंके पीछे अंगरेज और वलंदेज ब्योपारियोंको भी लिखा है इसका पूरा तरजुमा शेषसंग्रहमें दियाजावेगा.–

मोहम्मदबेगने बादशाहकी नजरसे गुजरानी लडकेका नाम रफीअउलशान रक्खागया।

सरबुलन्दखां नवाबवाईको दक्खनमें पहुंचाकर हाजिर होगया।

महाबतखां काबुलके अगले सूबेदारने दरगाहमें पहुंचकर बादशाहके कदम चूमे आपने फरमाया कि अच्छे आये और सफाई लाये।

२९ रज्जब (पौपवदि १२।२९ नवम्बर) को बादशाहने उसे खासा खिलअत गरेबांदार, नीमाअस्तीन, सोनेके साजका घोडा, और तलवार समेत हाथी, इनायत करके दक्खनकी मोहम पर रुखसत किया। उसका बेटा बहराम भी अडाऊ खंजर पाकर खुश हुआ रावकरनका बेटा राव अनूपसिंह, राजा अमरसिंह महाबतखांके भतीजे मुहाबका भाई दिलेरहिम्मत और दूसरे तइनाती जो उसकी फौजके थे उन सबको खिलअत घोडे हाथी तलवार और खंजर मिले.

फिर बादशाहका हुक्म हुआ कि शाहजादों और अमीरोंकी नावों तथा पालकियों पर फरंगी ढंगके हथियारोंके जंजीरें सियाकरें.

१४ वां जलूसीसन.

१ रमजान (माघसुदि ३।१ जनवरी) को १४ वां जलूसीसन् लगा खुशीकी मजलिसें हुई ईदकी नमाजें और मामूली बखशिशें हुईं बादशाहजादों और अमीरोंकी पेशकशें बादशाहकी नजरसे गुजरीं.

असदखां लशकरखांके मरजानेसे अव्वल बखशी हुआ.

बुखाराके एलची मोहम्मदशरीफको २९ हजार रुपया खिलअत और एक घोडा सोनेकी साजका मिला.

शरीफ मक्केके वकील शेख उसमानने दो अरबी घोडे और चांदीके साजकी तलवार शरीफकी भेजीहुई नजर की उसको १० हजार रुपये १ अशरफी १००

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें रूपसिंह है सो गलत है (सही अनूपसिंहही है और यह बीकानेरका राजा था.) २ कलकत्तेकी प्रतिमें किशनसिंहका बेटा. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें न सिया कर। (और यही सही मालूम होता है क्योंकि बादशाहको गैरमुसल्मान कौमोंसे चिढ थी.

अशरफी भरकी और १०० रुपये भरका ही एक रुपया और खिलअत मिला. २० हजार रुपये शरीफके वास्ते उसके हवाले कियेगये.

हब्शके हाकिमके वकील सैयद मोहम्मदहमीकी सौगातें भी नजरसे गुजरीं। मुलाजिमत और रुखसतके वक्त उसको १० हजार रुपये इनायत हुए.

यकंगतोशखां बहादुरको तलवार जमधर बरछी और ढाल बख्शी गई.

रुहुल्लाहखांके बदलेजानेसे दाराबखां आखतावेगी (तवेले का दरोगा) हुआ.

१० जिलहज (वैशाखसुदि १२।१० अप्रेल) को बकराईद हुई परहेज- बानूबेगम और गोहरआराबेगमको ५।५ हजार मुहरें मिलीं.

सन् १०८२ (संवत् १७२८)

१४ सफर १०८२ (आषाढवदि १ सम्वत् १७२८।१२ जूनसन् १६७१ ई०) को मोहम्मदअमीनखां बुलाया हुआ दरगाहमें आया लुतफुल्लाहखां किलेके दरवाजे, और असदखां गुसलखानेके दरवाजे तक पेशवाई करके उसे हजूरमें लेगये। उसने जमीन चूमकर ४ अरबी और इराकी घोडे नजरकिये बादशाहने हाल पूछा और उसे खिलअत दिया. —

२२ मोर्हरम (जेठवदि ९।२२ मई) को बादशाहकी साल और शाहनवा- जखां सफवीकी बीबी नोरसबनूबेगम मरगई। दाराबखां और खानबाद- खांको जो नूरजहांबेगमके भानजे मिरजा अबूसईदके बेटे थे मातमीके खिल- अत इनायत हुए.

अमीरुलउमराकी पेशकश २ लाख ६० हजार रुपयेकी जिसमें हाथी और दूसरी अनोखी चीजें थीं, बादशाहकी नजरसे गुजरीं.

बादशाहका पुराना चेला शादकाम मरगया। उसके वारिसोंको खिलअत और काम दिये गये.

महाराजा जसवंतसिंह बरसाती फरगुल और ९०० मुहरका घोडा पाकर जमरोदकी थानेदारी पर बिदा हुआ.

---

१ असल दोनों प्रतियोंमें यह भी तारीखें आगे पीछे लिखी हैं. २ बादशाहकी दूसरी बीबी दिलरसबानूबेगम इसी नोरसबानूबेगमकी बेटी थी.

बिरामखां जो गवइयोंमें मुखिया था मरगया उसके बेटे भोपत और खुशहालखांने खिलअत पाये.

अशरफखांके नवासे जियाउद्दीनहुसेन मोहम्मदहुसेन और यादगारहुसेन मुलाजिमतमें आये उनको खिलअत दियेगये वे बहुतही मोटे थे इसलिये बादशाहने फरमाया कि रोज एक एक को मुजराके वास्ते लाया करें.

मोहम्मदअली अलीमरदानखांके बेटेने विलायतसे आकर चौखट पर सिर घिसा खिलअत तलवार जडाऊ खंजर मोती लडी[1] और २ हजार रुपये मिले.

२ रबीउलआखिर (सावन सुदि ४ । २९ अगस्त) को असालतखांके भाई मीरमहमूदने जो विलायतसे नया आया था जमीन चूमी उसे भी जडाऊ खंजर और ७ हजार रुपये इनायत हुए.

दाऊदखांके बदलेजानेसे हाशदारखां बुरहानपुरकी सूबेदारी पर भेजागया और दाऊदखां हुजूरमें हाजिर होकर मीरखांके बदलेमें इलाहाबादकी सूबेदारी पर गया और उसे खिलअत सोनेकी साजका घोडा पीतलके साजका हाथी मिला.

खालसेके दफ्तरदार इनायतखांको घकके बरेलीकी फौजदारीका खिलअत मिला उसकी जगह अमानतखां उर्फ मीरकमुद्दीन विल्होर की दयानत पाकर दफ्तरदार हुआ.

एतकादखांके बेटे मोहम्मदयारखांको फर्रुखफाळकी बेटीसे शादी करनेका खिलअत मिला.

मोहम्मदअलीबेगको २ हजारी २००० सवारका मनसब अलीकुलीखांका खिताब झंडा, तोगें, १० हजार रुपयेकी जिनस सोने, रूपेकी इनायत हुई.

याहापाशा जो सुल्तानरूमकी तर्फसे हुसेनपाशाकी जगह बसरेकी हकूमत पर आया था एक झगडेसे वहां जमने न पाया तब उसका नसीब हिन्दुस्तानमें लाकर इस दर्गाह की जमीन चूमनेको लेआया जरीके तुकमेका खासा खिलअत तलवार जडाऊ खंजर १० हजार रुपया और डेढ हजारी ७०० सवारोंका मनसब इनायत हुआ.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें मोहम्मदअलीबेग अलीमरदानखां अमीरउलउमराका बेटा और १० हजार रुपया है पेज १०९. २ कलकत्तेकी प्रतिमें नफाख.

आबिदखां मुबारजखांके बदलेजानेसे मुलतानकी सूबेदारी पर भेजागया.

१७ जमादिउलअव्वल (आसोजवदि ३ । ११ सितम्बर) जुमेरातको[1] बादशाहकी बहन रोशनआराबेगम मरगई । उसको बादशाहसे बहुत मोहब्बत थी । बादशाहको बडा रंज हुआ । आंखोंमें आंसू आगये । उसके वास्ते बहुतसी खैरात की जो औरत मर्द उसके नौकर थे वे सब महरबानी करके मातमसे उठाये गये.

बादशाहने मोहम्मदअमीनखांको वजीरका बडा ओहदा देनेके लिये बुलाया था । वह अकलमन्दी और ईमानदारीमें मशहूर है । घमंडी और आप थापा भी बडा है जिससे उसने कई मुशकिल अरजोंकी मंजूरी चाही जो बादशाहके मिजाजके खिलाफ थीं । उसके बुरे दिन भी आनेवाले थे इसलिये २१ जमादिउलअव्वल (आसोजवदि ७ । ८ । १९ सितम्बर) को उसे काबुलकी सूबेदारीपर जानेका हुक्म हुआ । रुखसतके वक्त खिलअत खासा यशमकी मूठका जडाऊ खंजर मोती लडी समेत और आलम, कमान हाथी चांदीकी साजसे उसे इनायत हुआ.

ईफ़तखारखां और मुलतिफितखांके कसूर बखशे जाकर उनके मनसब और खिताब बहाल हुए पहिला तो सैफखांकी जगह जो मनसबसे बरतर्फ होगया था. कशमीरका सूबेदार और दूसरा, मोतमदखांके बदलेजानेसे, दिल्लीका किलेदार हुआ.

४ जमादिउलआखिर (आसोजसुदि ५ । २८ सितम्बर) को इलाहाबादका उतराहुआ सूबेदार मीरखां हजूरमें हाजिर हुआ.

लतफुल्लाहखांको लशकरखांकी बेटीसे शादी करनेका खिलअत मिला । सूफी-बहादुर और गजनेखां[2] औरंगजेबखांके पास जानेके लिये रुखसत हुआ खिलअत जडाऊ जीगा, तलवार, और तरकश, उसको मिला नामदारखां सूबे आगरेकी सूबेदारी और मोतमदखां किलेदारीपर नियत हुआ.

---

१. १७ जमादिउलअव्वलको पंचांगमें सोमवारहै बृहस्पतिवार तो २७ जमादिउल-अव्वलको था शायद यहां कुछ भूल रही है. २ कलकत्तेकी प्रतिमें मुफतखरखां. ३ बूंदनका १ शहर. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें अनूशेहखां.

बादशाहने यह सुनकर कि काशगरका खान अब्दुल्लाहखां मक्केके सफरसे लौटकर दरगाहमें आ रहा है । महरबानीसे १ हजार मुहरें और ढकने समेत चांदीका थाल उसे इनायत फरमाया.

इति औरंगजेबनामा पांचवां खंड समाप्त ।

छठा खंड ।

आगरेसे दिल्ली जाना ।

१० रजब (कार्तिकसुदि १२ । ३ नवंबर) को बादशाह आगरेसे कूच करके शिकार खेलते हुए १ शाबान (मार्गसिरसुदि ३ । २४ नवंबर) को खिजराबादमें पहुंचे.

४ शाबान (मार्गसिरसुदि ६ । २७ नवंबर) को ख्वाजाकुतब और चरागे देहलीकी कबरोंपर डेढ हजार रुपया चढाकर दौलतखानेमें दाखिल हुए.

२६ (पौषवदि १३ । १९ दिसम्बर) को बादशाहजादे मोहम्मदमुअज्जमकी[1] भेजी हुई १ हजार मुहरें बेगमसे लडका पैदा होनेकी नजर हुई "जबांबखत" नाम रक्खागया.

कामयावखां सफवीका मनसब फिर बहाल होगया.

बडे खान अब्दुल्लाहखांको जो बादशाहके आनेसे पहिले दिल्लीमें पहुंचगया था असदखां और बहरे मदखां जाकर हजूरमें लाये । बादशाहने मुलाकात करके १० हजार[2] मुहरें, और ९० काब, (थाल) खानेके उसके डेरेपर भेजे ।

पीरेखांका[3] मनसब बहाल हुआ.

मीरमहमूदको हजारी ४००[4] सवारका मनसब और अकीदतखांका खिताब मिला.

२४ शाबान (पौषवदि १२ । १७ दिसम्बर) को मोहम्मद अमीनखांके भेजेहुए २८० मोती एक लाख ३६ हजार रुपयेके और ९० घोडे नजर हुए.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें मोहम्मदआजम. २ कलकत्तेकी प्रतिमें २ हजार है.
३ कलकत्तेकी प्रतिमें मीरखां. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें ५ हजार है.

१५ वां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (पौषसुदि २ । २३ दिसम्बर) को १५ वां जलूसीवर्ष लगा. ईदकी मामूली नवाजिशें हुईं.

अकीदतखांको रुहुल्लहखांकी बेटीसे शादी करनेका खिलअत मिला.

बरहानपुरका सूबेदार होशदारखां मरगया था जो आजमखां जहांगीरीका पोता और मुलतफितखां आलमगीरीका बेटा था. उसके बेटे कामगार और जाफर हजूरमें आये. बादशाहने महरबानी की.

मुखतारखांको खानदेशकी सूबेदारी पर भेजा और उसकी जगह कमंदरखां जफराबादका किलेदार और फौजदार हुआ.

मोहम्मदयारको उसके बाप एतकादखांके मरनेका मातमी खिलअत मिला जो अपने भाई अमीरुलउमराके देखनेको गया और वहीं मरगया था अमीरुलउमराके वास्ते भी मातमीका खिलअत और फरमान भेजागया. एतकादखां फकीरोंमें बहुत मिलाकरता था. इसका ढंग भी निराला था. उसने तरह २ की बातें कहीं थीं और निकाली थीं, जो लोगोंमें बहुत मशहूर हैं. उनमेंसे एक भी ऐसी नहीं है जो लिखीजावे.

सतनामियोंका भयानक उपद्रव जिनको मूंडियां भी कहते हैं.

आसमानके अनोखे कारखानोंको देखनेवालोंके वास्ते इस वारदातका होना आश्चर्य बढाता है. सुनार, खाती, भंगी, चमार और दूसरे कमीने बेतुके बागियों और सिर पर खून चढेहुए लोगोंको क्या हुआ, कि बगावतका धुंआ मगजको चढगया, सिर कंधे पर बोझा लगनेलगा और वे अपने पांवोंसे ही मौतके जालमें फंसगये.

---

१ सत्यनामियोंके धर्मपंथका हाल मारवाडकी जातियोंकी रिपोर्टमें बहुत कुछ लिखागया है। उससे जाना जाता है कि सलाम न करनेपर मुसलमानोंसे बिगाड हुवा था मुसलमानोंने जबरदस्ती सलाम कराना चाहा तब वे भी बिगड कर लडने मरनेपर तैयार होगये थे.

इस दास्तानका यह बयान है कि बहुतसे फसादी लोग मेवातकी जमीनमेंसे दीमककी तरह निकल पडे और टिड्डी दल सरीखे आसमानसे उतर आये. कहते हैं कि ये अपनेको अमर समझते थे. एक मारा जावे तो उसके बदले ७० और आ मिलते थे.

ये बागी ५ हजारके लगभग नारनोलके जिलेमें जमा होकर आगे बढे. गांवों, कसबों और परगनोंको लूटने लगे, ताहिरखां फौजदार उनके साम्हने ठहरनेकी हिम्मत अपनेमें न देखकर बादशाहके पास आया बादशाहका इरादा उनके मारनेके वास्ते मजबूत होगया.

२६ जीकाद (चैतबदि १३।१७ मार्च) को रादअंदाजखां फौज और तोपखानेसे हामिदखां खास चौकीकी जमाअत और उसके बाप मुरतिजाखांके ५०० सवारोंसे याहाखां रूमी नजीरखां रुमीउां दिलेरखांका बेटा कमालुद्दीनखां फीरोजखां मेवातीका बेटा पुरदिलखां और शाहजादे मोहम्मदअकबरका बखशी असफंदयार उनकी सरकारकी जमीयतसे उन बेदीनोंके मारने और पकडनेके लिये बिदा हुआ। जब यह फौज वहां पहुंची तो वह लोगभी लडनेको तैयार हुए और अपने पांव लडाईके मैदानमें गाडदिये। लडनेका सामान पास नहीं होनेपर भी उनसे वह बडा काम, कि जो उनकी पुरानी किताबोंमें लिखाहुआ है, बनपडा। महाभारत जो हिन्दुस्तानी लोगोंकी कहावतसे ऐसी लडाईसे मुराद है जिसमें बहुतसे हाथी मारे जावें, वही उन्होंने करदिखाई। मुसलमानोंने अपनी तलवारोंपर उनके खूनसे लाल रंग चढाया। बहुत सखत लडाई हुई। तमाम बहादुरों और खासकर रादअंदाजखां हामिदखां और याहाखांने बडी बहादुरी की। अकसर बहादुरोंने शहीद होकर अपने चेहरे खूनके उबटनेसे रंगे और बहुतसे जखमी हुए। आखिरको वे झूठी लडाई लडनेवाले भागे फतह पानेवालोंने पीछा करके बहुतोंको मारा। उनमेंसे कम बचेहोंगे। दीनदार बादशाहके इकबालसे फतह होकर वह जमीन काफरोंसे साफ होगई। गाजी लोग फतह पाकर दरगाहमें गये। बादशाहकी जबानसे तारीफ और शाबासी सुनकर उनके सिर आसमानसे लगे। रादअंदाजखांको शुजाअतखांका खिताब मिला और उसका मनसब भी बढकर ३॥ हजारी २ हजारसवारोंका होगया हामिदखां,

बाहाखां, रूमीखां, नजीबखां और सब छोटे बडे लोगोंको जो उस लडाईमें बहादुरी कर चुके थे खिलअत मिले और उनके मनसब भी बढे.

१० जिलहज्ज (चैतसुदि १३।३१ मार्च) को बकराईदकी नमाज और कुरबानी हुई.

मोहम्मदअमीनखांका हारना और खेबरके घाटेसे लौटना।

सन् १०८३ हि० । संवत् १७२९ सन् १६७२ ई०.

होशियार अक्लमंदोंको मालूम है कि फतहके दरवाजा खोलना और बंदकरना खुदाके अखतियारमें ही है। इस बागके फूल और कांटे उसकी महरबानी और नाखुशीसे मिलते हैं। आदमीका नसीब जबतक यारी करता है लोग उसको नामवर कहते हैं और जब जमाना फिरजाता है तो उसीको बदबख्त (अभागा) कहने लगते हैं। यही हाल मोहम्मद अमीनखांका भी हुआ जब वह उस ठाट और ठस्सेसे काबुलकी सूबेदारीपर गया तो उसने फसादी पठानोंको, जैसा कि चाहिये था, सजा देना चाहा। मगर तकदीरमें तो काम उलटा होना बदा था इसलिये ३ मोहर्रम (वैशाख सुदि ५–६।२२ अप्रेल) को जबकि वह खैबरके घाटेसे उतरना चाहता था, यह खबर पहुंचचुकी थी, कि पठानोंने रस्ता बंदकरके लडनेकी तैयारी कर रखी है। मगर उसने कुछ परवा न की और उन फसादियोंको हटादेना कोई बडा काम न समझकर उसने आगे कूच किया। घाटेमें उतरनेमें कपटी लोगोंकी चालोंसे जो आफत हजरत अर्शआशियानी (अकबरबादशाह) के समय हकीम अबुलफतह, जैनखां, कोका और राजा बीरबर पर आई थी वही अब भी मोजूद होगई। यानी पठान इधर उधरसे घेरकर तीर और पत्थर बरसाने लगे फौज गडबडा गई। हाथी घोडे और आदमी एक दूसरे पर गिरने पडने लगे इसी गडबडमें कई हजार आदमी पहाडके ऊपरसे गुफाओंमें गिरकर मरगये। मोहम्मदअमीनखांने मारे गैरतके मरजाना चाहा मगर उसके नौकर घोडेकी बाग पकडकर उसको उस जोखिममेंसे निकाल

लाये और यह अपने जनानेकी सुध भूलकर और रशीदखांके जवान बेटे अबदुल्लहखांको मरवाकर बुरे हालों पेशावरमें भाग आया.

१२ (वैशाख सुदि १५।१ मई) को यह घृणित बात बादशाहको सुनाई गई। उन्होंने इस बिगडीहुई बाजीको खुदाके सुधारने पर छोड दिया। चांदरात (जेठ सुदि २ । १८ मई) को फिदाईखां लाहोरसे पेशावरको गया.

२० (जेठ वदि ८ । ९ मई) को नामदारखांके बदले जानेसे सरबुलंदखां आगरेकी सूबेदारीपर भेजागया। उसकी जगह मुकतिफितखां जिलों (अरदली) के बंदोंका दरोगा हुआ.

फैजुल्लाहखां खिल्अत खासा और सोनेके साजका घोडा पाकर मुरादाबादको गया.

अबदुल्लाहखांको २० हजार रुपये इनायत हुए.

सैफखांको जो घरमें बैठरहा था, तलवार मिली और उसका मनसब भी बहाल हुआ.

बादशाहजादे मोहम्मदअकबरका विवाह।

इन्हीं दिनोंमें शाहजादे मोहम्मदअकबरकी शादी सुलेमानशिकोहकी बेटी सलीमाबानूबेगमके साथ ठहरी, जिसे गौहरआरा बेगमने बेटी बनाकर पाला था। शाहजादेको ४ लाख रुपया खिल्अत खासा नीमाआस्तीनसमेत कलगी धोप जडाऊ मोतियोंकी माला सहरा और दो अरबी इराकी घोडे इनायत हुए.

२ रबीउलअव्वल (आषाढ सुदि ४ । १८ जून) को मसजिदमें बादशाहकी बकालतसे काजी अबदुलवहाबने निकाह पढा ५ लाख रुपयेका मिहर ठहरा। जो लोग हजूरमें खडे थे उन्होंने मुबारकबाद दी ९ घडी रातगये शाहजादेकी बारात बडी धूमसे चढी। शाहजादा मोहम्मदआजम, बख्शीउलमुल्क असदखां मीरखां, नामदारखां और दूसरे बडे २ अमीर साथमें थे। दिल्ली दरवाजेसे बेगमके मकानतक दोनों तरफ लकडियोंका टट्टर बांधकर चरागोंकी रोशनी बडी खूबसूरतीसे कीगई थी। वैसीही अनोखी आतिशबाजी भी छूटरही थी। खुशीके जो

१ यह हाल महाराजा जसवन्तसिंहके जीवनचरित्रमें सविस्तर लिखागया है क्योंकि महाराजने पठानोंको मारकर उसका बदला लिया था.

सामान होना चाहिये थे वे सब पूरे २ हुए दूल्हनका डोला शाहजादेके दौलतखानेमें आया.

बादशाहसे अर्ज हुई कि शाहजादा मोहम्मदमुअज्जम हुक्म पहुंचनेपर हजूरमें हाजिर होनेके लिये रवाने होगया है.

९ रबीउलअव्वल (असाढ सुदि ११ । २९ जून) को शाहजादे मोअज्जमने आकर दरगाहकी चौखटपर माथा घिसा। खिलअत खासा जड़ाऊ साजकी तलवार मोतियोंकी माला, उर्वसी और १ लाख रुपया इनायत हुआ । शाहजादे मोहम्मदमुअज्जुदीन और मोहम्मद अज़ीमको गुलूबंद (कण्ठे) मिले.

२ जमादिउलआखिर (आसोज सुदि ३ । १४ सितम्बर) को ख्वाजा ताहर नक्शबंदके बेटे मोहम्मदसालहसे मुरादबखशकी बेटी आसाइशबानूबेगमकी शादी ठहरी। मोहम्मदसालहको खिलअत, सोनेके साजका घोडा, जमधर, जडाऊ कलगी और हथनी इनायत हुई । सरबलंदखां काजी अबदुलवहाब और मोहम्मदयाकूबके सामने निकाह हुआ.

२६ (कार्तिक वदि १३।८ अकतूबर) को कदीमी बंदा वजीरखां मोहम्मदताहर मरगया। उसके मरनेसे मीरखां मालवेका सूबेदार हुआ। हिम्मतखांके बदलेजानेसे सरबलन्दखांने दूसरी बखशीगरीके ओहदे पर तरक्की पाई। सरबुलदखांकी जगह हिम्मतखां आगरेका सूबेदार और उसके बदले जानेसे मुगलखां कौसवेगी हुआ.

२ रज्जब (कार्तिक सुदि ४।१४ अकतूबर) को मोहम्मदताहर कदीमीवाला—शाही, जो खलीफोंको बुरा कहनेके दोषमें बादशाहके हुक्मसे बंदीखानेमें कैदथा, वह शरीअतके हुक्म और बडे मौलवी मुल्लाएकजनजीहकी कोशिशसे मारागया।

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें ९ रबीउलआखिर (सावनसुदि १०। १४ जोलाई).
२ कलकत्तेकी प्रतिमें २२ रज्जब (मगसिरवदि २। ३ नवम्बर). ३ शीया जातिके मुसलमान अलीको सच्चा खलीफा मानते हैं। दूसरे खलीफाओं अर्थात् अबूबक्र, उमर और उसमानको नहीं मानते । यह बात सुन्नी मुसलमानोंको बुरी लगती है। यही बात मोहम्मदताहरके भी मारे जानेकी हुई थी.

११ शाबान (पौष वदि ३।२७ नवम्बर) को मुरादबख्शके बेटे सुलतान एज़िदबख्श, जो ग्वालियरके बंदीखानेसे हजूरमें बुलालिया गया था, उसका विवाह बादशाहकी बेटी मिहरुन्निसा बेगमके साथ बादशाह और काजी अबदुल-बहाब तथा शेखनिजाम बख्तावरखांके सामने हुआ.

मुल्तफितखां, जो शाहजादे मोहम्मदसुल्तान और सिपहरशिकोहको लानेके लिये ग्वालियरमें गया था, २७ शाबान (पौषवदि १४।८ दिसंबर) को हजूरमें आया और वे दोनों शाहजादे सलीमगढ़के किलेमें रक्खेगये.

२७ (पौषवदि १४। ८ दिसम्बर) को बादशाहने शाहजादे मोहम्मद-मुअज़मकी हवेलीमें जाकर नजर और पेशकश ली। सलीमगढ़के दरवाजेकी बुर्जसे जो पुलके नज़दीक है हवेलीतक ज़री और दूसरी किस्मके कपड़े बिछेहुए थे.

बादशाहजादे मोहम्मदअकबरका मनसब २ हजारी बढ़कर १० हजारी २ हजार सवारका होगया.

२४ शाबान (पौषवदि ११। ५ दिसम्बर) को खासे जवाहरखानेका दरोगा ख्वाजा जवाहरखां मरगया. कदीमी बंदा और गरीबोंका भला चाहनेवाला था.

सन १०८३ हि०। सं० १७२९। सन् १६७२ ई०.

२९ मोहर्रम (१०८३ जेठसुदि २। १८ मई) को फिदाईखां लाहोरसे पेशावरको रवाने हुआ.

'२४ सफर (१०८३ आषाढवदि ११। १२ जून) को मोहम्मदअमीनखां गुजरातकी सूबेदारी पर भेजा गया। उसका मनसब जो ६ हजारी ५ हजार सवार था ५ हजारी ५ हजार सवारका बहाल रहा, मगर यह हुक्म हुआ कि हजूरमें नहीं आकर अपनी नौकरी पर चला जावे.

महावतखां आगरेसे हजूरमें पहुंचकर दखिनकी मुहिम (युद्ध) पर तइनात हुआ था लेकिन पठानोंके साथ सलूक रखनेसे हजूरमें हाजिर होनेका हुक्म गया.

---

१. कलकत्तेकी प्रतिमें २९ (पौष सुदि १। १० दिसम्बर.) २ यह पहिले भी लिखा जाचुका है। यहां गलतीसे फिर लिखदिया है. ३ यह भी यहां बेमौके आया है पहिले मोहर्रमके पीछे लिखाजाना चाहिये था.

इसलामखां जो अपने कबीलों और तीसरे बेटे मुखतारबेगके बुलानेमें ढील करने पर मनसबसे बरतरफ़ होगया था, हुजूरमें भी नहीं आने पाता था और उज्जैनमें रहता था, उमदतुलमुल्ककी अर्जसे बहाल होकर वह दसीकी फौजमें तइनात हुआ तब उसने अपने उस बेटे और कबीलोंको भी दक्खनसे बुलालिया.

१६ वां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (पौससुदि १२।११ दिसंबर) को १६ वां जलूसीवर्ष लगा. बादशाहने महीनेभरतक रोजे रखे और रातों जाग २ कर कुरान सुना.

१ शव्वाल (माघसुदि २।१० जनवरी १६७२) को ईद हुई. खासो आम और गुसलखानेके मकान सजाये गये. बादशाह हाथीके ऊपर ऊंचे हौदेपर बैठकर ईदगाहमें नमाज पढने गये. दूसरे दिन खासो आममें तख्त पर बैठकर दरबार किया. शाहजादे मोहम्मदमुअज्जमको नीमास्तीन समेत खिलअत मोतियोंका माला १ लाख रुपये और सोनेके साजवाला ५० हजार रुपये कीमतका हाथी दिया.

शाहजादे मोहम्मदआजमको नीमआस्तीन समेत खिलअत और शाहजादे मोहम्मदअकबरको जडाऊ तुर्रा इनायत किया.

वजीरउलमुल्क असदखां और दूसरे छोटे बडे अमीरोंको तरह २ की बख्शिशें जवाहरात खिलअतों, हाथी घोडों और इजाफोंकी हुईं।

शाहजादे मोहम्मदमोअज्जमका मनसब दस हजारी ९ हजार सवारके इजाफेसे ३० हजारी २० हजार सवार और ३ करोड दाम इनामका होगया। मोअजुद्दीनका रोजीना १०० रुपयेसे १५० रु० हुआ.

शाहजादों और अमीरोंकी पेशकशें ५० लाखके करीब थीं बीजापुरके दुनियादार सिकंदर आदिलखांके हाजिब (ड्योढीदार) ने ४ लाखरुपयेके जवाहर और जडाऊ चीजें लाकर नजर कीं हैदराबादके दुनियादार अबदुल्लाह

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें ५ हजार। पेज १२२. २ कलकत्तेकी प्रतिमें मोअजुद्दीनका रोजीना असल १५८) इजाफा ५०) और सुलतान मोहम्मदअजीमका रोजीना असल १००) इजाफा ५०) रुपये.

कुतुबुल्मुल्कके हाजिबने भी जावाहर और चीनीके बरतन नजर किये। हुक्म हुआ कि इनके बदले ३ लाख रुपये नकद लाया करें.

शाहजादे मोहम्मदआजमके वकीलोंके बदलेजानेसे बहादुरखां खानजहांका खिताब पाकर दक्खिनका सूबेदार हुआ। उसके वास्ते खिल्अत खासा और जडाऊ जमधर गुर्जबरदारोंके हाथ भेजागया और मनसब भी १ हजार सवारोंके इजाफेसे ६ हजारी ६ हजार सवारका होगया.

सफियाखानू कोकाके जमाई मीरइब्राहीमका काम मेवातकी थानेदारी और कारतलबखांका खिताब पानेसे बहुत बढगया। मुरशिदकुलीखां उसकी जगह दागतसहीहैका दरोगा हुआ.

दयानतखां जो बडा ज्योतिषी था, आलमेबाला देखनेको गया यानी मरगया-उसके बेटे देवअफगन शेरअफगन और रुस्तमको मातमीके खिलअत मिले.

६ रमजान (पौषसुदि ७।१६ दिसम्बर) को दरायतखां बादशाहके हुक्मसे शाहजादे मोहम्मदसुल्तान और सिपहरशिकोहको ख्वाबगाहके महलसे हजूरमें लाया। दोनोंको बादशाहके दर्शन होकर खिलअत और पन्नोंके सरपेच मिले.

बादशाहजादे मोहम्मद सुल्तानको मुरादबख्शकी बेटी दोस्तदार बेगमके साथ ब्याह ठहरनेसे खिलअत तलवार जडाऊ मुक्का (कुबडी) और जडाऊ जीनका घोडा इनायत हुआ। बादशाह ख्वाबगाहमें अपने हाथसे मोतियोंका सहरा बांधकर उसको मसजिदमें लाये काजियोंके[1] काजी अबदुल्वहाबने मुल्लामोहम्मद याकूबको वकील[2] और मीरसैयद मोहम्मदकन्नौजी और मुल्ला एवजवजीहको गवाहीसे[3] निकाह बांधा। २ लाखका मिहर ठहरा सुजाअतखां शेखनिजाम दरबारखां बख्तावरखां और खिदमतगारखां भी हाजिर थे.

२१ शव्वाल (फाल्गुनबदि ८।३० जनवरी) को बद्रेउलनिसाबेगमका[4] निकाह दाराशिकोहके बेटे सिपहरशिकोहसे ४ लाख रुपयेका महर मुकर्रर होकर हुआ। मसजिदमें बादशाहके सामने काजी, अबदुल्वहाब मुल्लाएवजवजीह मुल्ला

१ बडेकांजी. २-३ वकील और गवाह निकाहमें हुआकरते हैं। ४ कलकत्तेकी प्रतिमें जुब्दतुलनिसाबेगम.

याकूबने निकाह पढा। दरबारखां और बखतावरखां हाजिर थे सिपेहरशिकोहको जडाऊ खजर, जडाऊ सरपेच और मोतियोंकी माला मिली.

गौहरआराबेगम और हमीदाबानूबेगमने इन शादियोंका इन्तजाम किया था.

इफ्तखारखां काशमीरसे बदलाजाकर पेशावरमें भेजागया.

शाहजादे मोहम्मदसुलतानका सालियाना १२ हजार रुपया, सुलतान सिपेहरशिकोहका ६ हजार रुपया और सुलतान ऐजादबख्शका ४ हजार रुपया मुकर्रर हुआ.

४ जीकाद (फाल्गुनसुदि ६।१२ फरवरी) को कौशखानेके मुशरिफने अर्जकी, कि एक मीरशिकारने स्वप्नमें देखा कि एक आदमी नंगी तलवार लिये हुए उससे लडताहे जब जागा तो अपनेको जख्मी देखा और अपनीही तलवार नंगी पाई.

१६ (चैतबदि ४।२४ फरवरी) को बादशाहजादे मोहम्मद मोअज्जमने बादशाहके हुक्मसे ख्वाजाकुतुबकी दरगाहमें जाकर १ हजार रुपये चढाये.

१ जिलहिज्ज चैत सुदि ३।११ मार्च को असदखांने नायब दीवानीसे इस्तीफा देदिया। हुक्म हुआ कि अमानतखां दीवान खालिसा और किफायतखां तनदीवान, दीवानआलाकी मोहरके नीचे अपनी मोहर करके दीवानीका काम करते रहें.

फरजामने अपने १४।१५ वर्षके भानजेसे अपनी लडकीकी सगाईकी थी, मगर फिर बहनकी बदमिजाजी और बिगाड करलेनेसे, जो बडी लडाकी थी, इनकार करदिया था। अब जो फरजाम अटककी फौजदारीसे दूर होकर हजूरमें आया, तो उसकी बहन अपने बेटेको कहने लगी कि ओ बेगैरत! जबतक तू फरजामको खासो आममें बादशाहके सामने न मारेगा, मैं तुझको दूध नहीं बखशूंगी और अपनी ओढनी उसके माथेपर डालकर कहती थी, कि इसको ओढले और घरमें बैठजा। लडका माके हुक्मसे दरबारमें गया खासो आम दरबार

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें मोतियोंका सहरा भी लिखाहै. २ शिकारखाना. ३ बदगुमनी. ४ इसके आगे कलकत्तेकी प्रतिमें लिखा है कि १६ जिलहज्ज (वैशाख बदि ४।२६ मार्च) को बादशाहजादे मोहम्मद सुलतानने भी वहीं जाकर ५००) भेट किये. ५ कलकत्तेकी प्रतिमें फरजाम बरलास.

भरा हुआ था और बादशाह बैठे थे। उस गुसलखानेमें जहां फरजाम खडा था वहां पहुंचकर उसने उस बूढे इज्जतदारको एकही हाथमें मौतके बिस्तरपर सुला-दिया और चाहा कि वहांसे निकले मगर पकडा गया और कैद हुआ। मुकद्दमा शरीअतके महकमेमें चला ४ जिलहज्ज (चैत सुदि ६ । १४ मार्च) को काजीके हुक्मसे फरजामकी बीबी और बेटीके सामने, जो अलीकुली बरलासकी बीबी थी, जिलोखानेके हौजपर आमखासके आगे वह अदला किसास (मौतकी सजा) को पहुंचा। बादशाहने फरजामके वारिसोंसे उसका खून माफ कराना चाहा था मगर उन लोगोंको ऐसी श्रद्धा नहीं हुई। उसकी लाश उसकी मांको सौंपी गई जो किलेके दरवाजे पर रथमें सवार खडी थी.

१० जिलहज्ज (चैत सुदि १३ । २० मार्च) को ईदगाहमें बादशाहने जाकर नमाज पढी। बकरीकी कुरबानीकी और ऊंटको उसके हुजूरमें शाहजादे मोहम्मदमुअज्जमने मारा। चारों शाहजादे साथ थे.

लौटते वक्त १ बावलेसे आदमीने सवारीपर १ लकडी फैंकी, जो तखतके कोने पर लगकर बादशाहके घुटने पर लगी। गुर्जबरदार उसको पकड लाये। बादशाहने हुक्म दिया कि छोडदो, मत पकडो.

१४ (बैशाख बदि २ । २४ मार्च) को बादशाहजादे मोहम्मद आजमकी सुरामानी हुई.

मानसिंह, जहानसिंह और अनूपसिंह, राजा रायसिंहके बेटे, बापके मरे पीछे हुजूरमें आये। तीनोंको खिलअत मिले.

एरजका फोजदार मिरजोखां मेनूचहर मरगया.

बादशाहने फरमाया कि हमने खानजहांबहादुरको माही मरातब दिया। वह आर पानेवाले। खलीलुल्लाहखांका बेटा रूहुल्लहखां धामूनीकी फौजदारी पर मुकर्रर हुआ.

दक्खनके सूबेका बखशी इफ्तखारखां मरगया मुरशदकुलीखांने उसकी जगह पाई.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें माहसिंह पेज १२७. २ कलकत्तेकी प्रतिमें मिरजाजान. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें बाकीखां.

१६ मोहर्रम (जेठवदि ३ । २४ अप्रेल) को अर्ज हुई कि महाब्रतखां जफरनगरके जो पेशावरके पास है काबुलको रवाने होगया। सरबुलन्दखांको हुक्म हुआ कि दाराशाही दफ्तरके सिरिश्तेकी भी निगह रखे.

११ रबीउलअव्वल (आषाढसुदि १३।१७ जून) को अर्ज हुई कि दोपहरसे २ घडी पहिले सूरतके चौतर्फ कुंडाला पडकर छतुप बनगया जो ७ घडीतक रहा.

१६ रबीउलआखिर (सावनसुदि १९।१८ जुलाई) को शाहजादे मोहम्मद-मुअज्जमकी बेगम जो अबदुल मोमिनकी बेटी थी मरगई. बादशाह जुमामसजिदसे लौटते वक्त उसके मकान पर गये फातिहा पढकर नाव की सवारीसे दौलत-खानेमें आये.

२३ (प्र॰ भादोवदि १० । २८ जुलाई) को दक्खनके अखबारोंसे मालूम हुआ कि जयसिंहका बेटा कीरतसिंह मरगया।

१७ जमादिउलअव्वल (द्वि॰ भादोवदि ३ । २० अगस्त) को शाहजादे मोहम्मदअकबरके घरमें लडका पैदाहुआ। अबदुलवहाब उसका नाम रक्खागया.

२२ जमादिउलआखिर (आसोजवदि ९ । २४ सितम्बर) को शाहजादे मोहम्मदमोअज्जमके घरमें लडका जनमा खुजस्ताअखतर उसका नाम हुआ.

कमाऊंके जमींदारको अपनी जमीन रौंदीजानेसे जो डर लगने लगा था वह सैयद मुर्तिजाखांसे दूर होगया और उसने तसल्ली पाकर अपने लडकेको दरगाहमें भेजानेके वास्ते हामिदखांके भेजनेकी अर्ज कराई। वह ९ रज्जब (आसोज-सुदि ४ । ३ अक्तूबर) को हुजूरमें लाया गया उसने मुलाजमतकी उस वक्त १ हजार मोहरें और १ हजार रुपये नजर किये तिसपर उसे खिलअत इनायत हुआ.

- ईरानके अखबारसे बादशाहके कानोंमें यह बात पहुंची कि शहर नेशपुर हिरात और सब्जवार जमीनमें धसगये.

खानजहां बहादुरने ३० कौसका धावा करके सेवाको हराया और बहुतसी

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें २८ (प्र॰ भादोवदि ३० । २ अगस्त) २ कलकत्तेकी प्रतिमें यों लिखा है कि कमाऊंके जमींदारको बादशाही लश्करियोंके घूमनेमें अपनी जमीनरूंदीजानेसे जो डर होगया वह सैयद मुरतिजाखांकी सिफारिशसे दूर होगया. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें ६० कोस पेज १२८.

छूट दलपतबुंदेलेके हाथ हजूरमें भेजी, जो २१ रजब (कार्तिकवदि ७ । २२ अक्तूबर) को नजरसे गुजरी । खानको २ हजार सवारोंका इजाफा मिला.

हामिदखांने ३ पांचका वकला जो कमाऊंके पहाडोंसे लाया था बादशाहके नजर किया.

फैजुल्लाहखां मुरादाबादसे आया ।

महावतखां बागी पठानोंको सजा दियें विनाही काबुलको चलागया था, जो बादशाहके पसन्द न हुआ । इसलिये शुजाअतखां १७ शाबान. (मंगसिरवदि ३—४ । १७ नवंबर) को उन दंगई बदमाशोंको सजा देनेके लिये बहुतसे लशकर और साजसामानसे भेजागया । खिलअत खासा यशमजालिके पल्परके घरमें लगाहुआ परोंका जडाऊ जीगा सोनेके साजका घोडा और ९ सदी ९ सौ सवारोंका इजाफा उसको मिला.

सजावारखां तोपखानेकी नायबी, खिदमतगारखां किलेदारीकी नायबी और दरबारखां गुसलखानेकी नायबी पर मुकर्रर हुए उनके साथियोंको खिलअत तलवारें घोडे और इजाफे मिले.

१७ वां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (मार्गसिरसुदि २ । ३० नवम्बर) को १७ वां जलूसी सन् लगा ईदके दिन बाजार और बादशाही महल सजायेगये । बादशाह ईदगाहसे आकर तखतपर बैठे । छोटों बडोंको जवाहर खिलअत इजाफे हाथी और घोडे मिले । बादशाहजादों और अमीरोंकी नजरें कबूल हुई.

ईरानके वजीर खलीफासुलतानके भाई मीरकलासुद्दीनको उसका नसीबा मदद करके हिन्दुस्तानके मजे लेनेको लाया ६ शव्वाल (पौषसुदि ७ । ४ जनवरी) को उसने मुजरा करके खिलअत खासा जडाऊ जमधर फूल कटारे और मोतियोंकी लडी समेत सोनेके साजकी तलवार जडाऊ फूलोंकी ढाल छडी और यशमकी कलंगी १० हजार रुपये नकद तीन हजारी डेढ हजारका मनसब और खानका खिताब पाया और उसके बेटे सद्रउदीनको खिलअत सोनेके साजकी तलवार सात सदी १०० सवारका मनसब इनायत हुआ.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें दलपत कँवर. २ कलकत्तेकी प्रतिमें बगला.

शेखमीरका बेटा मीरइब्राहीम हज करके बादशाहकी दरगाहमें परिक्रमा देनेके लिये आया उसका मनसब जो डेढ हजारी १००० सवारका था बहाल होगया.

हकीम सालह मरगया। हकीम मोहसन और उसके दूसरे बेटों तथा रिश्तेदारोंको मातमीके खिलअत इनायत हुए। उसकी जगह तकर्रबखांका बेटा मोहम्मदअलीखां कारकराकखानेका दरोगा हुआ.

इसलामखांका बेटा मीरअब्दुलरहमान हैदराबादको भेजागया.

१० जिलहिज्ज (फाल्गुनसुदि १२। ९ मार्च) को बकराईदकी नमाज हुई.

इति औरंगजेबनामा छठा खंड समाप्त।

सातवां खंड।

सन् १०८४ हिजरी। संवत् १७३०। सन् १६७४ ई०

शुजाअतखांका माराजाना और बादशाहका हसन अबदालको कूच करना।

बादशाहसे अर्ज हुई कि शुजाअतखांने १३[1] जीकाद (फाल्गुनवदि १। ११ फरवरी) को गदान नदीसे उतरकर खरपाघाटीमें जानेके लिये अपना लशकर सजाया। अफगान जो घातमें लगेहुए थे घाटेको रोककर बैठगये। बहादुरोंने खूब हमले किये और लडनेमें कसर नहीं रखी मगर तकदीर तो कबरमें लेजाना चाहती थी इस सबबसे जीत न पासका, लडते २ उसने अपने मालिकके काममें जान कुरबान करदी। बाकी लोग जो पठानोंके पत्थरोंकी मारसे बचे, लुट पिटकर पेशावरको लौटआये.

ऐसे तावेदारबंदेके चलेजानेसे फौजके बिखरजाने और लशकरियोंका दिल टूटजानेसे बादशाहका भी जी घबराया और उधर जानेका मनसूबा न हुआ।

सन् १०८५.

११ मोहर्रम (चैतसुदि १३। ८ अप्रेल) को हसनअबदालकी तरफ कूच हुआ। हिम्मतखां गुसलखानेका दरोगा और सफशिकनखं तोपखानेका

[1] कलकत्तेकी प्रतिमें १८ जीकाद (फाल्गुन वदि ६। १६ फरवरी)

दरोगा हुआजतखांके मारेजानेसे मुकर्रर हुआ। आगरेका सूबेदार सफीखां दिल्लीका सूबेदार हुआ और आगरेकी सूबेदारी मौतमिदखांको मी किलेदारीके शामिल सौंपीगई। फैजुल्लाहखांने मुरादाबादको लौटजानेका खिलअत पाया. इमारतका दरोगा इहतमामखां और दारुलखिलाफत (राजधानी) के दूसरे मुतसद्दी अपने २ कामों पर रुखसत हुए। कवामुद्दीनखांको हुक्म हुआ कि २ महीने पीछे अपने बेटे समेत सवारीमें आजावे। चकले सहरंद (सरहिन्द) के फौजदार शेखअब्दुल गजीजको दिलावरखां का खिताब मिला। सरबुलन्दखांको हुक्म हुआ कि १॥ हजार सवार और तोपखानेके आदमियोंके साथ पहाडके रस्तेसे आवे। नामदारखांपर खफगी होकर उसका मनसब उतारलिया गया और ४० हजार खालसे पर उसे घरमें बैठादियागया। फिदाईखांका बेटा मोहम्मदसालह, खांका खिताब पाकर बापके पास गया। बयूतात (कारखानों) का दरोगा रहमतखां पैगम्बरके उर्सका इन्तजाम करनेके लिये लाहोरको भेजागया खलीलुल्लाहखांका बेटा मीरखां एरजकी फौजदारी कबूल न करके मनसबसे मोकूफ हुआ.

२९ रबीउलअव्वल (आषाढसुदि १।२४ जून) को सुलतान इजाजैके जमीदार इसमाइल होदने वतनकी रुखसत, खांका खिताब और घोडा पाया.

इफतखारखां और अकीदतखां फिदाईखांकी मददके वास्ते जमूकी मुहिमपर रवाने हुए.

इफतखारखांने राजोरके जमीदार राजा इनायतुल्लाहके साथ रुखसतका खिलअत पाया.

१३ रबीउलअव्वल (जेठसुदि १५।८ जून) को बख्शीउलमुल्क सरबुलंदखां बदीउजमाँसुलतान और नासिरखां एक अच्छी फौज लेकर पेशावरको गये.

२० (आषाढवदि ७।१५ जून) को महाराजा जसवंतसिंह थानेदार जमरोदने अपने थानेसे रावलपिंडीमें आकर दरगाहके आस्ताने (चौखट) की धूलको चंदन अपने माथेसे लगाया। उसका खिलअत खासा और हजार

१ कलकत्तेकी प्रतिमें १८ रबी-उल-अव्वल आषाढवदि ५।१३ जून) २ कलकत्तेकी प्रतिमें ७ हजार रुपये। पेज १३३.

रुपयेकी उर्वसी इनायत हुई और जब वह अपनी खिदमतके इलाकेमें जानेलगा तो जडाऊ साजकी तलवार और नीलाचर समेत हाथी देकर उसकी इज्जत बढाई गई.

२ रबीउलआखिर (आषाढसुदि ४ । २७ जून) को बादशाह हसनअबदालके दौलतखानेमें दाखिल हुए.

बादशाहकी महरबानीकी १ मीठीकहानी

एक मीठी कहानी बादशाहकी महरबानीकी लिखता हूं। २। ३ दिन पीछे जबकि बादशाह हसनअबदालके बागमें रहचुके थे मेरे आदमियोंने मुझसे यह शिकायतकी कि दौलतखानेकी भीतके नीचे एक बुढियाकी पनचक्की है। वह उस पानीसे फिरती है जो बागसे निकलकर नालेमें गिरता है बागका ताल्लुक नजारतसे अमलेसे है जिसने पानी बढानेके वास्ते बंदेको रोक दिया है, जिससे आटा भी नहीं पिसता और बुढियाकी रोजी भी बंदहोगई है। मैंने बगैर किसी इरादेके यह बात बख्तावरखांसे कही, उसने हुजूरमें जाकर अर्जकी। बादशाहने महरबानीसे हुक्म दिया कि खुद जाकर बंद खोलदो और ताकीद करदो कि कोई बुढियासे कुछ रोकटोक न करें उन्होंने ऐसाही किया। डेढपहर रात जाने पर जब खान डेरे पर आये और हजरत खासे पर बैठे तो खानेके २ थाल और ६ अशरफियां शेखनिजामके बेटे शेख अबुल्खैरको, कि वह भी हुजूरमें जानेवाला था, देकर फरमाया, कि बख्तावरखांके पास लेजा, वह उस बुढियाका घर जानता होगा, तुझे बतादेगा। तू उसको हमारा सलाम पहुंचा और उजरख्वाही कर कि तू हमारी पडोसन है, हमारे आनेसे तुझे तकलीफ हुई, माफकर.

शेखने खानके पास जाकर पूछताछ की एक पयादा जो जानता था कि दूसरे टीले पर जो एक गांव है वहां उसका घर है। वह आधी रातमें शेखको लेगया और उस बुढियाको नींदसे जगाकर खाना दिया और वह उजर और माफीका सदेसाभी कहा दूसरे दिन दरबारखां नाजिरको हुक्म हुआ कि पालकीकी सवारी भेजकर बुढियाको बुलाये और महलमें भेजे उसने उमर भरमें पालकीका नाम भी न सुना था और चांदीके बांस कब देखे थे जब इसतरह बुढियाको

१ इसहालको भी महाराजा जसवंतसिंहके जीवनचरित्रमें देखना चाहिये.

लाये और हजरतने हाल दरयाफ्त फरमाया तो बुढियाने अर्जकी कि दो कांरी लडकियां और दो नंगे लडके हैं. खाविंद जिंदा है बादशाहने उसे २०० रु० इनायत फरमाये। वह दो रात महलमें रही महलवालियोंको तो एक खिलौना मिलगया। उसने सबसे नकद जेवर और कपडे पाये.

उसने किसीसे सुनाहोगा कि इसने वखतावरखांसे कहकर यह काम बनाया है इसलिये मेरे तंबूके आगे आकर खडी होगई उस बुढियाके दुशाला कंधेपर किनारीकी पिशवाज कमरमें बादलेकी दामनी सिरपर कमखाबकी शिलवार (इजार) टांगोंमें अशरफी रुपये और सोनेके गहनोंसे झोली भरीहुई मुंह सौ जगहसे मुडाहुआ और आँखोंमें धुंवं छाई हुई। मैंने पूछा कि तू कौन है। वह बोली कि वही बुढिया हूं तेरी और तेरे खानकी बदौलत इस दरजेको पहुंची हूं मैंने कहा मुबारक हो। फिर उसे खानके पास लेगया, उन्होंने भी कुछ रियायतकी.

२१३ दिन पीछे नाजिरको फिर हुक्म हुआ कि उसको बेटियों समेत लावो ख्वाजासरा पालकियां लेगये और लेआये। उस वक्त हजार रुपये कन्यादानके इनायत हुए और महलवालियोंने पहिलेसे दूना नकद, जेवर और तरह २ की पोशाकें दीं एक पनचक्की दूसरी इस इलाकेमें बखशी गई। नाजिरको हुक्म हुआ कि माफी महसूलकी और तमाम मनेकी हुई लोगोंके वास्ते रोक टोक न करनेकी सनदें दुरुस्त कराकर पहुंचादो हकीम संजाक शाही हुक्मसे बुढियाकी आंखोंका इलाज करनेके लिये उसके घर जाता था.

इसके पीछे उसको मोहम्मदसुलतान मोहम्मदमुअज्जम मोहम्मदआजम और मोहम्मदअकबर शाहजादों असदखां और यलंगतोशखांके घरोंमें ले गये। वह बडी दौलतमंद होगई। लडकियोंकी शादियां करदीं। लडके जो नंगे फिरते थे जरीकी पोशाकें पहिनने लगे। उसका खाविंद जवानोंकासा कसबल दिखाकर गांववालोंका पंच होगया उसका बुढापा जवानीसे बदल गया और वह बुढिया भी जिसका नाम जुलेखा था जवान होगई। उसके गालोंके खड्डे भर गये[१]

१ कलकत्तेकी प्रतिमें जुलेखाकी तरह जवान होगई लिखा है (जुलेखा युसुफकी बीबीका नाम था.)

चेहरा दमकने लगा आंखोंकी धुंध भी जाती रही। यह सच्ची बात है। किसीने कहा भी सच है कि बेदौलतों (कंगालों) के पाससे तीरकी तरह भाग और दौलतवालोंकी गलीमें वतन (घर) बनाले.

पठानोंकी मुहिम।

आगजखां नुसरतखां और मिरजा सुलतान बहुतसी फौज और साज सामानके साथ जमरोद और खैबरके पठानोंको सजादेनेके लिये रुखसत हुए राय लाउचंद सूबे काबुलके मुकदमात ग्वालिसेकी तहकीकातके लिये भेजा गया.

बादशाहकी सलाह शाहजादे मोहम्मदअकबर और असदखांको कोहाटके रस्तेसे काबुलको भेजनेकी ठहरी.

२४ जमादिउल आखिर (आसोजबदि ११।१२।११ सितम्बर) को शाहजादे मोहम्मदअकबरको खिलअत कुलाके पर की कलगी जडाऊ ढाल तलवार ५० अरबी इराकी पहाडी और तुर्की घोडे, और हाथी चांदीके साज समेत इनायत हुए.

असदखांको खिलअत तलवार घोडा और हाथी मिला। शहामतखां, इज्जतखां, सैयद मनव्वरखां मुबारजखां, सियादतखां, मुफतखरखां, सजावारखां, कामयाबखां, असदखांका बेटा मोहम्मद इसमाईल, इनायतखां, मुफाखरखां बहरेमंदखां हयातबेग दिलेरखां बहादुरखां का बेटा राजारामसिंहका बेटा कंवर किशनसिंह और दूसरे खानेजाद कोई तो खिदमतों पर और कोई तईनातियों पर मुकर्रर हुए सबको खिलअतें तलवारें और घोडे दरजे बदरजे इनायत किये गये.

७ रजब (आसोजसुदि ९। २८ सितंबर) को महाबतखांके बदलेजानेसे फिदाईखांको काबुलकी सूबेदारीका खिलअत पहिनायागया और एक अच्छी फौज बहुतसे सामानोंसे उसके साथ तैनात हुई और बखताबरखांकी मारफत उसको कहलायागया कि जब फौज घाटेमें पहुंचे तो पहिले हिरावलकी फौज उतरकर उस तर्फ डेराकरे तब दूसरे दिन बहीर और ग्रोल (बीच) की फौज

---

१ फलकचेकी प्रतिमें गैरतखां. २ महाबतखांकी १ अरजी की नकल मिली है जिसमें उसने पठानोंके मुलकके बन्दोबस्तकी मुवाफिक लिखकर अपने ऊपर लगायेहुए दोषोंका समाधान किया है.

निकले और चंदावल इधरही रहे दूसरे दिन जो जुरनगार (दहनी हाथकी फौज के वास्ते) रस्ता न हो तो वह हिरावलके साथ चलीजावे और जुरनगार (बांयें हाथकी फौज) चंदावलके साथ घाटीसे उतरे।

२७ शाबान (मगसिरबदि ३० । १७ नवंबर) को महाबतखां दरगाहकी चौखट चूमकर बिठ्ठलदास गौडके पोते हरीसिंहको सजादेनेके लिये रुखसत हुआ.

अर्जे मुकर्ररका दरोगा शेख अबदुलअजीज ७ सदी २०० सवारका मनसवदार होगया था, तो भी बद खर्चीसे उसका गुजारा नहीं चलता था। कई जागीरें और नकद इनामोंके मिलनेपर भी उसकी तकलीफ नहीं मिटती थी। काम करने और दरबारके आनेजानेमें भी, जो नौकरोंका फर्ज है सुस्ती करता था। उसकी तकदीरमें यही लिखा था कि इस हालतसे छुटकारा न पावे, इसलिये उसने कुछ दिनोंके लिये लाहौर जानेकी अर्ज कराई। बादशाहने खिलअत देकर उसे रुखसत किया और फरमाया कि लुतफुल्लहखां उसकी नायबीमें लोगोंको नजरसे गुजराने और बख्तावरखां फरदोंको दस्तखतोंमें भेजदिया करें। शेखने लाहोर पहुँचकर एक गजल बख्तावरखांको लिख भेजी उसमें भी वही हाल अपनी तकलीफ और तंगीका जाहिर किया था.

१८ वां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (मगसिरसुदि १ । १० नवंबर) को १८ वां जलूसीवर्ष लगा बादशाहने रोजे रखे.

१ शव्वाल (पौषसुदि २ । १९ दिसम्बर) को ईदकी नमाज पढी खुशीकी मजलिसें नजरें और बखशिशें हुईं.

बादशाहजादे मोहम्मदसुलतानको २० हजारी १० हजारका मनसब नीमआस्तीन समेत खिलअत मोतियोंकी माला १४ हजार रुपयेका कण्ठा लालोंका १ लाख रुपया नकद २ घोडे मीनाकार और सुनहरी सामानोंके २ हाथी रुपहरी सुनहरी साजके नक्कारा, तोग, और अलम, (झंडा) इनायत हुआ.

मोहम्मदमोअज्जमको खिलअत मोतियोंकी माला - लालोंका कंठा जडाऊ तुर्रा और ९ लाख रुपये नकद बखशे गये.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें वीरसिंह.

मोहम्मदआजमको नीमाअस्तीन समेत खिलअत मिला.

मोहम्मदअकबरके लिये भी खिलअत नीमाअस्तीन समेत भेजागया.

सुल्तान मोअज्जुद्दीनको खिलअत नीमाअस्तीनके साथ सुल्तान मोहम्मद-अजीमको खिलअत और दोनोंको ७ । ७ हजारी २ । २ हजार सवारका मनसब तोग, अल्म, और नक्कारे, समेत इनायत हुआ.

उदयपुरके जमीदार राना राजसिंहकी इज्जत खिलअत खासा जडाऊ जमधर और महरवानीका फरमान भेजकर बढाई गई.

महाराजा जसवंतसिंहको भी खिलअत खासा भेजागया। हिम्मतखां अशरफखां खानसामान सदरुस्सदूर रजवीखां सैयद मुर्तिजाखां तरबियतखां सफशिकनखां और छोटे बडे हाजिर रहने वालोंने भी खिलअत पाये.

बखशीउल्मुल्क सरबुलंदखां पांच सदीके इजाफेसे ४ हजारी ढाई हजार सवारके मनसबको पहुंचा.

मीरखां बरतरफीके पीछे अमीरखांका खिताब पाकर चार हजारी ३ हजार सवारका मनसबदार हुआ किवामुद्दीनखांका मनसब ५ सदी बढकर ३॥ हजारी डेढ हजार सवारों का होगया.

कामगारखां और मोहम्मदअलीखांको ५-५ सदीके इजाफे मिले.

शरीफखां, दिलेरखांके बेटे कमालुद्दीन और बाकरखांके मनसब २ सदीके इजाफेसे १॥ हजारी ३००।३०० सवारोंके होगये.

फाजिलखांके भतीजे काबिलखां बुरहानुद्दीनको ऐतमादखांका खिताब मिला.

मुनशीखाने और डाकका दरोगा मोहम्मदशरीफ जो अबुलफतह काबिलखां कदीमीआलमगीरीका भाई था पुरानी बंदगियोंसे काबिलखांके खिताब और १ सदीके इजाफेसे सरफराज हुआ.

बखतावरखांकी तरक्की असल, और इजाफेसे हजारी ढाई सौ सवारोंके मनसब पर हुई.

---

१ कलकत्तेकी प्रतियें यों लिखाहै कि कामगारखां और मोहम्मदअलीखां ५।५ सदीके इजाफेसे २।२ हजारी और ५।५ सौ सवारके मनसबदार होगये. २ कलकत्तेकी प्रतिमें ७।७ सौ सवार.

शरीफ मक्केके डयोढीदार सैयदअली और मोहम्मदअमीन वहांके सरदारको ५ हजार रुपये इनायत हुए.

बलखके खान नजर मोहम्मदखांके जमाई ख्वाजामोहम्मदयाकूबको १० हजार रुपये इनायत होकर हुक्म हुआ कि महीनेके लगतेही इतने रुपये उसके घर पर पहुंचते रहें.

दिलेरखाने दरगाहकी जमीन चूमकर आबिदखांके बदलेजानेसे मुलतानकी सूबेदारीका खिलअत पहिना.

अलीमरदानखांका जमाई हुसैनबेगखां जौनपुरकी फौजदारीपर रुखसत हुआ.

जम्बूका जमीदार पृथ्वीसिंह लोदीखांके साथ काबुलकी मुहिमपर तइनात हुआ.

अबदुल्लाहखांका बेटा मोहम्मद वफारेशीघाटे और कोहाटकी थानेदारीपर रुखसत हुआ.

महाबतखांके बेटे बहराम और फरजामकी अर्जीसे मालूम हुआ कि महाबतखां ४ शव्वाल (पौषसुदि ९।१२ दिसम्बर) को अमनाबादमें मरगया बहराम और फरजाम हजूरमें बुलालियेगये.

रानाके नौकर राघोदास झाकाने दरगाहमें आकर ७ सदी १०० सवार का मनसब पाया.

शेखमीरका बडा बेटा महोतशमखां मीरइब्राहीम मुलतिफितखांके बदलेजानेसे खिलअत, अलम, और सोनेके साजका घोडा पाकर नगरकोटका फौजदार हुआ.

२२ जिलहज (चैतवदि ९।१० मार्च) को आबिदखांने मुलतानसे बदले जानेके पीछे दरगाहमें आकर जमीन चूमी.

मोहम्मदअमीनखांके जमाई सैयद सुल्तान करबलाईका भाई मीरअब्बास खिलअत, और २ हैजार रुपये पाकर वतनको रुखसत हुआ।

औरंगख्वाजाचोरागासीने बुखाराको जाते वक्त खिलअत, जडाऊ जीगा हाथी और १० हजार रुपया पाया.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें हुसैनबेगखां. २ कलकत्तेकी प्रतिमें जडाऊ जीगा, हथनी, और १० हजार रुपये. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें हथनी.

मुरादबखशके जमाई ख्वाजामोहम्मदसालहके वाप ख्वाजा मोहम्मदताहर नकशबंदीको वतनकी रुखसत और ६०० मुहरें मिलीं.

विक्रमसिंह गुलेरी, खिलअत, जडाऊ जमधर, और सोनेके साजका घोडा, पाकर थानेदारीपर गया. और हुक्म हुआ कि ढाई हजार पहाडी पयादे अपने साथ ले जावे.

मुजाहदखांके वदलेजानेसे इनायतखां खैराबादका फौजदार हुआ.

९ रबीउलअव्वल (जेठसुदि ११ । १२ । २९ मई) को सफशिकनखा मरगया जिससे मुल्तिफितखांके पास तोपखानेकी दरोगाईका खिलअत गुर्जबरदारके हाथ भेजा गया.

खानजहां बहादुरने लगातार धावे करके सेवा और दक्खनके दूसरे सरकशों का सजादेनेमें वडी जानमारी की थी। बीजापुर और हैदराबादके दुनियादारोंसे पेशकशें लेकर लगातार हजूरमें भेजी थीं। इसलिये उसके इन कामोंके पलटेमें कदरदान बादशाहने २४ रबीउलआखिर (सावनवदि १० । ७ जुलाई) को उसे खानजहां बहादुर जफरजंगको कलताशखांका खिताब और हजारी हजार सवारके इजाफेसे ७ हजारी ७ हजारका मनसब एक करोड दाम इनाम बखशा और उसके वकील मोहम्मदसालहको जो पेशकशके हाथी, घोडे, और नकद खजाना लाया था खिलअत दिया और उसके साथियोंको भी १ हजार रुपया इनायत किया.

खानजहां बहादुर और उसके बेटोंके वास्ते खिलअत, खिताब, शावाशी, और महरबानी, के फरमान, मोहम्मदमीरके गुर्जबरदारके हाथ भेजेगये.

खानजहांकी अर्जीसे सेवाके बेटे संभाको ६ हजारी ६ हजार सवारका मनसब ८० लाख दाम इनाम नक्कारा और झंडा इनायत हुआ खिलअत और फरमान भी उसी गुर्जबरदारके साथ भेजा गया.

अशरफखां खानसामान सदरुलसदूर रजवीखांको उसके माईके मातमसे उठाकर हजूरमें लाया मातमी का खिलअत, और दिल्ली जानेका हुक्म मिला.

---

१ थानेदारीकी जगहका नाम नहीं लिखाहै. २ कलकत्तेकी प्रतिमें १३ रबीउलआखिर (सावनवदि ९ । ६ जुलाई)

९ जमादिउलअव्वल (साकसुदि ११।१२ जुलाई) को बादशाहजादे मोहम्मदआजमके फिर १ लड़का हुआ। सिकंदरशान नाम रक्खा गया। मोहम्मदआजमको खिअत सुल्तान सिकंदरशानको मोतियोंकी माला और जहांजेब्र-बानूबेगमको १० हजार रुपया इनायत हुआ.

मक्के और मदीनेमें हरसाल जो रुपया भेजा जाता था वह इससाल आबिदखांके हाथ भेजा गया जो मीरहाज अर्थात् हजको जानेवालोंका अमीर होकर रुखसत हुआ था.

बडे काजी अबदुलवहाबको बीमारीके बढ जानेसे दिल्ली जानेकी रुखसत मिली.

२ शाबानै (कार्तिकसुदि ४।१२ अक्तूबर) को काशगरका खान अबदुल्लाहखां जो बादशाहकी महरबानियोंसे बडे आरामके साथ दिन तेर करता था मरगया था सिरखां और उसके दूसरे भाईबंदोंको मातमीके खिलअत मिले.

२९ (मागसिरसुदि १–२।८ नवम्बर) को अर्ज हुई कि हैदराबादका दुनियादार अब्दुल्लाहकुतुबुल्मुल्क मरगया और उसका भतीजा अबुलहसन जो जमाई भी था उसकी जगह बैठा.

नामदारखांका मनसब जो ४ हजारी २ हजार सवारका था फिर बहाल हुआ और वह शादीखांके बदले जानेसे अवधकी सूबेदारी पर भेजागया.

इस्लामखांके तीसरे बेटे मुखतारबेगने जो उसके कबीलेके साथ उज्जैनमें पहुंचा था हजूरमें हाजिर हुए बिना ही ७ सदी २०० सवारका मनसब पाया.

अमानतखांने खालिसेकी पेशदस्तीसे इस्तेफा देकर लाहोरकी किलेदारी पाई.

किफायतखां जो तनदफतरका पेशदस्त था खालिसेका पेशदस्त भी हुआ.

आजमखांके बेटे खानजमांको बराडकी सूबेदारी हुई और मनसब भी असल और इजाफेसे ५ हजारी ३ हजार सवारका होगया.

हैदराबादके दुनियादार अबुलहसनने किवामउद्दीनके हाथ ९ लाख रुपयेकी पेशकश, जवाहर, और हाथी, भेजनेकी इज्जत हासिलकी। आते और जाते वक्त खिलअत मिला.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें १० शाबान (कार्तिकसुदि १२।२० अक्टूबर) पेज १४३.

२ कलकत्तेकी प्रतिमें संआदतखां और सिआदतखां.

रहउल्लहखां डेढ हजारी ४०० सवारोंके मनसबकी बहालीसे सहारनपुरका फौजदार हुआ.

शेखमीरके दूसरे बेटे मुकर्रिमतखां मोहम्मदइसहाकके बदले जानेसे तरबियतखां जिसोंके बंदोंका दरोगा हुआ हुक्म हुआ कि मुकर्रिमतखां अपने भाई शमशेरखा मोहम्मदयाकूब और १ अच्छी फौजके साथ फार्नूलके घाटेकी तरफसे जाकर अफगानोंको सजा दें.

२७ रबीउलअव्वल (अषाढबदि १४ । १२ जून) को अर्ज हुई कि मुकर्रिमतखाने २ दफे दुशमनसे लडकर उनके गाँवोंको लूटा कैदी पकडे १ दिन पठान थोडेसे नजर आये खान धोकेसे बेधडक उन पर चढगया पहिले तो जीतगया मगर फिर जब २ फौजें जो पहाडकी तरफ छुपीहुई थीं हमला करके आई तो बडी लडाई हुई शमशेरखां और शेखमीरका दामाद मीरअब्दुल्लाह जमकर उनसे लडे और शहीद हुए उन दोनोंके साथ और भी बहुतसे आदमी काम आये अकसर सवार और पैदल पानी न मिलने और न किसी तरफको रस्ता पानेसे मौतके जंगलमें खेतरहे। बडी भारी हार हुई और छोटे बडों पर निहायत मुसीबत गुजरी मुकर्रिमखां बाकी लोगोंको लेकर मुल्कके जानकारोंकी अगवानीसे बाजोडके थानेदार इज्जतखांके पास पहुंचा इज्जतखां जो हमेशा पठानोंका सिर ठोकतारहा था और अपनी बिरादरीके साथ वहां रहा करता था उसके आनेको गनीमत समझकर बडी महरबानी और दिलदारीसे पेश आया.

बादशाहको अपने सिपाहियों और खास करके शमशेरखांके जवानीमें मारे-जानेसे बहुत उदासी हुई और इज्जतखांकी खिदमतगारी पसंद आई.

मुकर्रिमतखांको हजूरमें आनेका हुक्म हुआ और महोतशमखांको तसल्लीका फरमान और मातमीका खिलअत भेजागया.

चांदरात (अषाढसुदि १ । १४ जून) को बखशीउलमुल्क सरबुलंदखां ९ हजार सवारों और बहुतसे जंगी सामानोंसे नालाईके बछवाइयोंको सजा देनेके

१ कलकत्तेकी प्रतिमें मुकर्रमखां. २ अरदली. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें मुकर्रमखां ४ कलकत्तेकी प्रतिमें खावूस या नानूस. ५ मुकर्रिमखां. ६ कलकत्तेकी प्रतिमें मुकर्रमखां.

लिये बिदा हुआ। आजमखां जलालाबादकी हुजरखां जगदल की कवामेंखां लमगानोंकी अलहदाद गरीबखानेकी थानेदारी किरशास्पका बेटा सुहराब बांकली की फौजदारी और खंजरखां बंगशोंकी थानेदारी पर भेजेगये और हुक्म हुआ कि सफेदखाकको मुगलाबाद और माराजक को फतहाबाद लिखा करें.

फिदाईखांकी फौजके अखबारनवीसने लिखा कि फिदाईखां १७ रबीउल-अव्वल (आषाढवदि ९ । २ जून) को वेशबोलाकसे काबुलको रवाने हुआ था उसने पठानोंके मारने उनके गावोंको लूटने और खराब करनेमें जहांतक हो सकता था खूब कोशिश करके अच्छी खिदमत की है बादशाहने महरबान होकर उसको शाबाशी लिखी और आजमखां कोकाका खिताब बख्शा.

१४ जमादिउलआखिर (असोजबदि १ । ३१ अगस्त) को अर्ज हुई कि हुजरखां थानेदार जगदलक पठानोंके मुकाबिलेमें अपने लडके और बादशाही बंदोंके साथ काम आया और अबदुल्लाह ख्वेशगी तीरीकाब और सुरखाबका थानेदार थानेको छोड भागा है उसके बहुतसे साथी भी मारे और पकडेगये हैं.

९ शाबान (कार्तिकसुदि ११ । १९ अकतूबर) को अमीरखांकी अरजी पहुँची कि शाहपुर और कांतपुरके फसादी पठान आलम और इसमाईल वगैरा जो बादशाही फौजके दबावसे किलेदारकी पनाहमें चले आये थे पकडेगये और इबराहीमखांके साथ जो बंगालेसे आरहा है हजूरमें रवाने किये जाते हैं.

बादशाहके हुक्मसे बखतावरखांने बादशाही सरकारके और शाहजादोंके ज्योतिषियोंसे मुचलका लिखालिया कि नये सालसे तकवीम (तिथिपत्र) न निकालकरें और ऐसाही हुक्म सब सूबोंमें भी भेजागया.

बादशाहजादे मोहम्मदमुअज्जमके खानसामान मोहम्मदशफीएकी हवेलीके कुवेमें ढोल गिरपडा था उसके निकालनेको २ आदमी उतरे और मरगये. तीसरा

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें आगरखां. २ कलकत्तेकी प्रतिमें फिराकखां. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें फौजदारी. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें धाजारक. ५ कलकत्तेकी प्रतिमें १७ रबीउलआखिर (सावनवदि ४ । १ जुलाई.) ६ कलकत्तेकी प्रतिमें बारंगआब ७ रजवाडोंमें तो यह हुक्म नहीं चला क्योंकि जोधपुरके ज्योतिषी बराबर पंचांग निकालते रहे जो अबतक उनके पास उस समयके मौजूद हैं.

आये रस्तेसेही चिल्लाया कि मुझे निकालो घडी भर पीछे बेहोशीसे सिर उठाकर बोला कि कुवेंके पेंदेमें १ काली बला मुझे नजर आई जो भयानक बोलीमें कहने लगी क्यों आता है चलाजा.

दिल्लीके अखबारसे अर्ज हुई कि बादशाहकी सौतेली बहन नवाब परहेजबानू-बेगम जो मिरजाहुसेन सफवीकी बेटी कंधारी महलसे आलाहजरत (शाहजहां) की औलादमें सब बहन भाइयोंसे बडी थी मरगई। सफीखां सूबेदार और सूबेके सब मुतसद्दी उसकी लाशको उसीके बनाये हुए बागमें लेगये.

१९ वां आलमगीरी वर्ष.

१ रमजान सन् १०८६ हि० (संवत् १७३२ मार्गशिरसुदि ३ । ९ नवंबर सन् १६७५ ई०) से १९ वां जलूसीवर्ष लगा बादशाह रमजानके महीनेमें रात दिन खुदाकी बंदगी और नेकीके काम करते रहे.

ईदके दिन (पौषसुदि ३ । ९ दिसम्बर) को खुशीकी मजलिस हुई बादशाहजादों सुलतानों और सब छोटे वडे अमीरोंको खिलअत इनायत हुए.

तरबीयतखांके बेटा सैफखां फकीलल्लाहको खिताब और मनसब बहाल करके घरके कोनेमेंसे बाहर निकालागया तलवार और खिलअत खासा भी उसको बखशा गया.

शाहीखांका बेटा और इबराहीमखांका नवासा अबूमोहम्मद जो पढा लिखा भी था बीजापुरसे हजूरमें आकर और खिलअत पाकर निहाल हुआ फिर उसको ३ हजारी १ हजारका मनसब खानका खिताब और २० हजार रुपया भी मिला उसके भाइयों और बेटोंको भी उनके लायक मनसब इनायत हुआ.

९ (पौषसुदि ११।१७ दिसम्बर) को अमीरखां बिहारसे आया और तरबियतखां उसकी जगह वहां गया.

२९ (माघवदि १२।२ जनवरी) को शेखनिजामने किश्तवारके राजाकी बेटी बाई भूपदेका निकाह बादशाहजादे मोहम्मदसुलतानके साथ बांधा.

१ कलकत्तेकी प्रतिमें बेहरखां २ कलकत्तेकी प्रतिमें ६० हजार रु० ३ कलकत्तेकी प्रतिमें भूपदे.

हसनअब्दालसे दिल्लीको लौटना।

१९ शव्वाल (मावसुदि १।२३ दिसम्बर) को हसन अब्दालसे कूचहुआ पहिली मंजिल तो बागमें हुई वहांसे सैलसपाटे और शिकार करते हुए ११ जीकाद (माघसुदि १२।१७ जनवरी) को लाहोरके बाग फैजबख्शमें पहुँचे अमानतखां किलेदार खिदमतमें आया.

काजी अबदुलवहाब १३ रमजान (मार्गसिरसुदि १४।२१ नवम्बर) को दिल्लीमें मरचुका था इसलिये उसका बेटा शेखुलइसलाम जो दिल्लीका काजी था हुक्म पहुंचनेपर हजूरमें पहुंचकर बादशाही लशकरका काजी हुआ.

मुल्ला अबदुलहकीम स्यालकोटीका बेटा मोल्वी अब्दुल्लाह जो बहुत इल्म पढाहुआ था और बादशाहके याद करनेपर लाहोरसे हसनअब्दालमें पहुंचकर साथ रहता था खिलअत २०० मोहरें और १ हथनी, पाकर अपने वतनको रुखसत हुआ.

इकाताजखांने जो बलखको गयाहुआ था ४ वर्ष और ३ दिन पीछे आकर दरगाहकी चौखट चूमी ११ घोडे पोस्तीनें और छुरे नजर किये.

सुबहानकुलीखांके वकील मुल्लाताहिरने जो मुल्ला एवजवजीहका भाई था इकेताजखांके साथ आकर मुलाजिमतकी खिलअत और ७ हजार रुपया इनाममें पाया.

फजलुल्लाहखांके बदले जानेसे लुतफुल्लाहखां हाथीखानेका दरोगा हुआ.

तुर्कताजखां खिलअत घोडा और तरकश कुरबान (भाता) समेत पाकर काबुल जानेको बिदा हुआ.

२४ जिल्हिज (फाल्गुनसुदि १।९ फरवरी) को शाहजादा मोहम्मदआजम मुलतानको सूबेदारी पर रुखसत हुआ इतना इनाम रव्वांजातालिब उसके घर पर दे आया.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें कालाबाग २ कलकत्तेकी प्रतिमें १५ जीकाद (फाल्गुनवदि ३।१५ जनवरी) ३ कलकत्तेकी प्रतिमें १८ रमजान (पौषवदि ४।२६ नवम्बर) ४ कलकत्तेकी प्रतिमें १४ जिलहज (फाल्गुनसुदि १५।१९ फरवरी)

खिलअत, जडाऊ तलवार, इराकी घोडे, १०० अरबी, और तुरकी, १०० हाथी, चांदी सोनेके सामानोंसे २, और इनामके १ करोड दाम.

सुलतान बेदारबख्तके लिये खिल्अत घोडा, हाथी, और बल्खके वकील मुल्ला मोहम्मद ताहिरको ४ हजार रुपये, पालकी, फर्श, और उसके साथियोंको २ हजार-रुपये, इनायत हुए.

शाहजादे मोहम्मदअकबरके घरमें बेटा पैदा होनेकी बधाई पहुंची खुजस्ताअ-ख्तर नाम रखा गया मोतीकी माला, और कपडेके ९ थान, खुसरो चेलेके हाथ भेजे गये.

दिलेरखां खिल्अत, घोडा, हाथी, और जडाऊ जमधर, पाकर दक्खनकी मोहिम पर रवाने हुआ.

हुसेनबेगखांके मरनेसे इज्जतखां जौनपुरकी फौजदारी पर भेजागया.

इब्राहीमखां बिहारसे आया।

सन् १०८७ (संवत् १७३३ स. १६७६.)

२४ मोहर्रम (बैशाखवदि १२।३० मार्च) को हुक्म हुआ कि रुहुल्लाह्य-साथल खिल्अत जडाऊ खंजर मोरंगमें फतह करनेकी शाबाशी और रशीदखांके बदलेजानेसे उडीसेकी सूबेदारीका फरमान और २ करोड दामका इनाम अमी-रुलउमराके पास लेजावे उसके वकीलको भी खिलअत इनायत हुआ मुल्ला एवज-वजीहका हजारी मनसब फिर बहाल हुआ जो घरमें बैठ रहा था.

हुसेनअलीखांके बदलेजानेसे हिम्मतखां इलाहाबादकी सूबेदारी पर खिलअत और १ लाख रुपया, इनाम पाकर रुखसत हुआ। उसकी जगह अब्दुलरहीम गुसलखानेका दरोगा और उसके बदले रुहुल्लाहखां आख्ताबेगी हुआ.

सखुलंदखांका मनसब जो उतार लिया गया था फिर बहाल हुआ.

दाराबखां अजमेरसे आकर मुलतिफितखांके बदलेजानेसे तोपखानेका दरोगा हुआ और सैयदअहमदखां उसकी जगह अजमेरको गया.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें इराकी, अरबी, और तुरकी, घोडे २००, पेज १४९.
२ कलकत्तेकी प्रतिमें मोतीकी माला, मोतीकी टोपी, और ५ थान कपडे.
३ कलकत्तेकी प्रतिमें हसनबेग. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें गैरतखां. ५ शायद मोरमंज.

फिदामुहीनखां कश्मीरकी सूबेदारी पर रुखसत हुआ.

शाहजादे मोहम्मदसुल्तानको ७ लाख रुपये,के जवाहर बखशे गये.

शाहजादे मोहम्मदमोअज्जमको जवाहरके झूमके, का तुर्रा, ९ हजारका, और जडाऊ पहुंची ९० हजारकी इनायत हुई.

अब्दुलरसूलखां गुलबरगेकी किलेदारी पर जो इसी वर्ष फतह हुआ था और हमजाखां कल्याणीकी किलेदारी पर भेजागया.

एरजखां एरजपुरकी फौजदारी पर खानजमांके बदलेजानेसे गया और हुमायूंखां आराबनवाड़ेकी फौजदारी पर मासूमखांकी जगह मुकर्रर हुआ.

बादशाहसे अर्ज हुई कि मालवेका नाजिम इसलामखां जो खानजहां बहादुर कोकल्ताशखांकी तइनातीमें था १९ रबीउलअव्वल (आषाढवदि २। १९ मई) को गनीमसे लडाई होने पर हिरावल फौजमें खडा था वहां बारूदमें आग लगगई जिससे उसका हाथी, भडककर सीधा गनीमकी फौजमें चलागया दुशमन हाथीको घेर लेगये और हौदेके रस्से काटकर ईमारीसे नीचे गिराया और उसको और उसके बेटे अलीबेगमखांको मारडाला.

बादशाहने उसके बडे बेटे अफरासियाबखांको ९ सदी ९०० सवारके इजाफेसे ढाई हजारी डेढ हजारका मनसबदार करदिया छोटे बेटे मुखतारबेगको ३ सदी २०० सवारोंका इजाफा बखशा उसका ३ लाख रुपया २० हजार अशरफी और माल असबाब उज्जैन और शोलापुरमें जतहोकर उसके बेटोंके वास्ते छोड दियागया और उनको हुक्म हुआ कि अपने बापके मुतालबे (देने) को जबाब देवें.

२६ रजब (असोजबदि १३। २९ सितम्बर) को इसलामखांके मरजानेसे बादशाहजादा मोहम्मदअकबर मालवेकी सूबेदारी पर रुखसत हुआ. खिलअत खासा बालाबंद समेत, लाखोंका सरपेच २ घोडे इराकी और अरबी सोनेकी साजसे और १ हाथी उसको इनायत किया गया.

---

१. कलकत्तेकी प्रतिमें पंचवारा. २ कलकत्तेकी प्रतिमें ११ रबीउल आखिर (आषाढसुदि १४। १४ जून.)

वलखके सफीरमुल्लाताहिरको रुखसतके वक्त एक हाथी २ हैजार रुपये और जडाऊ छडी इनायत हुई.

९ शावान (आसोजसुदि ७ । ३ अकतूर) को सुल्तान मोअज्जुद्दीनकी शादी मिरजामुकर्रमखां सफवीकी वेटीसे हुई। सुल्तानको चार कुल्बका खिल-अत मोतियोंकी माला २ हैजार रुपयेकी, और इतनी ही कीमत की सुमरनी, और हाथी, तलायर समेत मिला.

यलंगतोशखां वहादुरको भी शादीके दिन खिलमत, पन्नेका सरपेच, सोनेके साजका घोडा, और चांदीके साजका हाथी इनायत हुआ. सुल्तान कुली, खांका खिताव पाकर मुबारजखां, मीरगुल्के वदलेजानेसे इसलामावाद मथुराकी थानेदारी पर गये.

१० शावान (असोज सुदि १२ । ८ अकतूवर) को असदखां खिलमत खासा, जडाऊ दवात, ५००० रुपयेकी, और वडे वजीरका ओहदा, पाकर अपने दिलकी मुरादको पहुंचा.

१७ (कार्तिकवदि ४।१९ अकतूबर) को वादशाहजादा मोहम्मद मुअज्जम वहुतसे अमीरों और वडे भारी तोपखाने और जंगी सामानोंके साथ कावुलकी मुहिम पर विदा हुआ शाहआलम वहादुरका खिताव, खिलमत, खासा नीमाआ-स्तीन समेत २ लाखका जवाहर, २ तलवारें, जडाऊ साजकी ३ शाहपसंद घोडे जिनमें अरवी, और इराकी, तो सोनेके साजके थे और तुरकी नकशी जीनका था और १ लाख अशरफियां उसको इनायत हुई.

सुल्तान मोअज्जुद्दीनको खिलअत जडाऊ कलगी कोहेजर नाम घोडा सोनेकी जीनका मीनाके कामकी तलवार, चांदीके साजका हाथी, कमान और तरकश मिला.

सुल्तान मोहम्मदअजीमको खिलअत, कलगी, सरपेच, और सुमरनी बखशी-गई और सुल्तान दौलतअफजाको याकूतके लटकन, और सुल्तान खुजस्ता-अखतरको पन्नेके लटकन, इनायत हुए.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें १० हजार पेज १५२. २ कलकत्तेकी प्रतिमें १० हजार. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें कलगी और जडाऊ सर पेच. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें कोहेरत्म अर्थात् लडाईका पहाड और कोहेजरके मायने हैं (सोनेका पहाड.) ५ कलकत्तेकी प्रतिमें पन्नेके कंगन.

अमीरखां, सफीखां राजा रामसिंह और दूसरे अमीरोंने भी जवाहर, घोड़े, और खिलअत, पाये.

मुगलखांके ढाई हजारी, मनसबसे १४०० सवार कम होगये महोतशमखांने सहारनपुरकी फौजदारी पाई.

हुसेनअलीखांके बदले जानेसे हिम्मतखां इलाहाबादकी सूबेदारीपर गया.

फिदाअुद्दीनखांके बेटा मोहम्मदमुअज्जमने बलायतसे आकर हजारी ३०० सवारका मनसब पाया.

आकिलखांका साळाना इस्तेफा देनेसे १२ हजार रुपयेका होगया.

इब्राहीमखांके मनसब छोडनेकी अर्ज मंजूर हुई.

इफ़तखारखां बंगशातकी फौजदारीपर मुकर्रर हुआ.

२९ (कार्तिकसुदि १ । २७ अक्तूबर) को बादशाह जुमा मसजिदसे लौटे और नावसे उतरकर तखतरवां पर सवार होनेको थे तो गुरु तेगसिंहके मुरीदों (सिक्खों) मेंसे १ कमबख्तने १ ईंटें फेंकीं १ तखतपर पडी अहदीवाले उसको पकडलाये कोटवालके हवाले हुआ.

लाहोरसे लौटना।

१९ जिलहज्ज (फाल्गुनवदि ९ । ११ फरवरी) को लाहोरसे दिल्लीकी तरफ कूच हुआ दिलेरखांके बेटे कमालुद्दीनको खांका खिताब मिला मोहम्मदमुलतानकी बीबी दोस्तदारबानू बेगम रुस्तमखांकी सरायमें १६ जिलहज्ज (फाल्गुनवदि २ । ९ फरवरी) को मरगई.

इति औरंगजेबनामा सप्तम खण्ड समाप्त।

आठवां खंड।

सन् १०८८ हि० । संवत् १७३४ वि । सन् १६७७ ई० ।

२२ मोहर्रम (चैतबदि ९ । १७ मार्च) को बादशाह दिल्लीमें पहुंचे.

२२ रबीउलअव्वल (आषाढवदि १०।११ जून) को राजा रामसिंहने आसामसे आकर दरगाहमें ढोक दी.

---

१ फलकसेकी प्रतिमें सैफखां, २ यही बात पहिले भी पेज ६९ में लिखी जाचुकी है.

एक फरयादीने खासो आमके चौकमें बादशाहके सवार होते वक्त घोडे पर एक लकडी फेंकी जो छत्रके उपर जाकर पडी वह कोटवालको सौंपागया.

किरावलोंने एक सफेद हिरन बादशाहके नजर किया.

१२ जमादिउलअव्वल (आषाढसुदि ४।३ जुलाई) को सिपेहर शिकोहके घरमें जुब्दतुन्निसाबेगमसे लडका हुआ बादशाह उसके देखनेको गये आली-तबार नाम रखा.

९ जमादिउलआखिर (सावनसुदि ७।२६ जुलाई) को बादशाहजादे मोह-म्मदसुल्तानके घरमें लडका हुआ मसऊदबख्त उसका नाम रखागया.

१ रजब (भादोंसुदि २।२० अगस्त) को दौलतावादीकी भतीजी बाद-शाहजादे मोहम्मदसुल्तानके महलमें आई[1]

३ रजब (भादोंसुदि ४।२२ अगस्त) को मुराद कुली गक्खडके बेटे खेर-लाह कुलीकी बेटी बादशाहजादे मोहम्मदअकबरसे व्याही गई.

बादशाहसे अर्ज हुई कि खानजहां बहादुरका बेटा मोहम्मदमुहसन किले नल्दुर्गकी लडाईमें काम आया.

२१ शाबान (कार्तिकबदि ८।९ अकतूबर) को जब बादशाह जुमा-मसजिदसे लौटकर घोडे पर सवार हुए तो एक नालाइक आदमी तलवार सूंत-कर बहुत पास आगया. अरदलीवालोंने पकडलिया मुकर्रबखांकी उंगलीमें कुछ जखम लगा गुर्जबरदारोंने चाहा कि मारडालें मगर महरवान बादशाहने मना किया और आधा रुपया रोजीना करके उसको रणथंभोरके किलेमें भेज दिया.

२७ शाबान (कार्तिकबदि १४।१९ अकतूबर) को १ आबदारने जुमा मसजिदकी सीढियोंपर बादशाहके पास आकर सलाम अलेक कहा हुक्म हुआ कि कोटवालको सौंपा जावे.[2]

---

[1] कलकत्तेकी प्रतिमें दौलतवादा महलकी भती जा बादशाहजादे मोहम्मदसु-ल्तानकी निकाहमें आई. [2] मुसलमानी धर्मके कायदेसे तो उसने ठीक ही कहा था परन्तु धर्मात्मा बादशाहने न जाने क्यों कोटवालको सौंपा शायद बादशाही ढोंगने धर्मको दबा दिया.

२० वां आलमगीरीसन्.

१ रमजान सन् १०८७ (कार्तिकसुदि ३ संवत् १७३३।२९ अकतूबर सन् १६७६) से २० वां जलूसीवर्ष लगा बादशाह १७ (मगसिरवदि ४।१४ नवम्बर) से गुसलखानेकी मसजिदमें रहे वहीं अदालतकी कचहरी भी होती थी.

१ शव्वाल (मगसिरसुदि २।३।२७ नवम्बर) को ईदकी नमाज और बखशिशें हुई.

शाहआलमबहादुरके असल मनसब ४० हजारी पर ९ हजार सवारोंका इजाफा हुआ.

बादशाहजादा मोहम्मदआजमके मनसब पंदरा हजारी ९ हजार सवारपर पांच हजारी जातका इजाफा हुआ.

यलगतोशखां बहादुर हजारी ५ सौ सवार था पांचसदी जात और २०० सवारोंका इजाफा हुआ.

एतकादखां मीरकुल वरतरफीका मनसब २ हजारी १ हजार सवारका बहाल हुआ.

सैयद मुरतिजाखांके बेटे सैयदमुस्तफाको ५ सदी १ सौ सवारका मनसब इनायत हुआ.

१ जीकाद (पौषसुदि ३।२७ दिसम्बर) को रुहुल्लाहखांने अशरफखांके बदलेजानेसे खानसामांका ओहदा पाया.

यलंगतोशखांने जिहालतसे अपने छुरी मारली ९ सदी जात और २०० सवार घट गये.

कामगारखां मनसबसे दूर कियागया.

मुल्लाएवजवजीह जो बड़ा मौलवी था मरगया। यह बड़े बादशाहके १८ वें जलूसी सालमें अपने वतन इलाके समरकंदसे आकर उर्दू (लशकर) का मुफती

---

१ ग्रंथकर्तानें यहांसे सन् और तारीख फिर उलटकर लिखी है. २ कलकत्तेकी प्रतिमें ४० हजारी २५ हजार सवारपर. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें १ शव्वाल लिखीह वो भूल मालूम होतीहै. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें इसके वतनका नाम अलखीकत लिखा है जो समरकंदके जिलेमें था.

हुआ था और अब महोतसम था उसके बराबर किसीने वातोंको तेजी और सख्तीके साथ दूर करके इस ओहदेका काम नहीं किया था। वह अखीर दम तक पढानेमें लगारहता था.

शाहजादा मोहम्मदआजम चौखट चूमनेके लिये मुल्तानसे रवाने होकर जब आजमआवादमें पहुंचा तो महरवान वादशाहकी तरफसे पानदान खानचा, दुवडा, रकावी, और सगयशमका जडाऊ उगालदान, महरवानूके हाथ उसके पास पहुंचगया.

२३ जीकाद (माघवदि १०।१८ जनवरी) को शाहजादे मोहम्मद आजमने मुलाजिमतकी खिलअत सरपेच, दूसरी खासा पोशाकें, और ९ घोडे समेत इनायत हुआ.

मुल्तान वेदारवख्त और सिकंदशानको ५ हजार रुपयेके दो सरपेच मिले.

२४ जिलहज (फाल्गुनवदि १०-११। १७ फरवरी) को शाहआलमबहादुरका वकील मिरजावेग १ हजार मुहरें वेटा पैदाहोनेकी दरगाहमें लाया। मोहम्मदहुमायूं वेटेका नाम रखागया। शाहजादेको सरपेच और सुल्तान हुमायूंको जडाऊ टोपी और मोतियोंकी माला उसके हाथ भेजीगई.

सन् १०८८.

२४ मोहर्रम (चैतवदि ११। १९ मार्च) को शाहआलम वहादुरकी तजवीजसे आजमखां कोकाके वदले अमीरखां कावुलका सूबेदार हुआ.

वख्शीउलमुल्क सरवलंदखांको यशमकी जडाऊ दवात इनायत हुई.

शोलापुरके किलेदार मनोहरदासने जो ५० हजार रुपये राजाका खिताब मिलनेके वास्ते कवूल किये थे मंजूर हुए.

१९ सफर (वैशाखवदि ५। १२ अप्रेल) को तरवीयतखांके वदलेजानेसे बादशाहजादा मोहम्मदआजम खिलअत खासा जमधर सरपेच कलगी २ घोडे और ९ किरोड दाम इनामके पाकर विहारकी सूबेदारी पर गया.

तरवियतखां हादीखांकी जगह दुरहत और दरभंगेका फौजदार हुआ.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें २२ जीकाद (माघवदि ९।१७ जनवरी)

फ़ईज़ुल्लहखांके बदलेजानेसे दाराबखां अव्वलमीरतुजुक और मुकर्रमखां अबदुल-रहीमके पकडेजानेसे गुर्जबरदारोंका दरोगा हुआ.

सैयदखांने इफ़तखारखांकी जगह बंगशेकी फौजदारी पाई.

खानजमां जफराबाद बिदुर की सूबेदारी और किलेमारी पर मुकर्रर हुआ.

शाहेखां काशगरीके भाग हिन्दुस्तानमें आनेसे खुले । खिलअत खासा सोनेके दस्ते, और मोतियोंकी लडीका खंजर जडाऊ जीगा, सोनेके फूलोंकी ढाल, हथनी, और ९ हजार रुपये नकद, मुलाजिमत करते ही उसे इनायत हुए। ७ काँच ३ दस्तरख्वान रोटीके और १ पाल्की फर्श समेत, उसके घर पर पहुंचाई गई डेढ हजारी २०० सवारका मनसब मिला.

रामसिंहके बेटे किशनसिंहने काबुलसे आकर मुलाजिमत की ४ महीनेकी रुखसत वतन जानेकी और खिलअत उसको मिला.

सादुल्लाहखांका बेटा इनायतुल्लाहखां हकीम मोहम्मदमोहसनके बदले जानेसे शागिर्द पेशेका बख्शी हुआ.

आगरेकी सूबेदारीका फरमान हुसैनअलीखांके नाम गुर्जबरदारके हाथ भेजागया.

जुमदतुलमुल्क असदखांके बेटे मोहम्मदइस्माईलको अमीरुलउमराकी बेटीसे शादी करनेका खिलअत, मुलम्मेके साजका घोडा, और एतकादखांका खिताब, मिला। कलगी और सेहरा, अपने घरसे लाया था बादशाहने हाथमें लेकर सुल्तान सिपेहरशिकोहको दिया उसने उसके सिरपर बांधा.

कामयाबखां महोतशमखांके बदले जानेसे सहारनपुरकी फौजदारीपर, और महोतशमखां फौलादखांके बदले जानेसे मेवातकी फौजदारीपर गया.

हामिदखां सैयद अहमदखांके बदले जानेसे अजमेरका सूबेदार हुआ.

बुखाराके खानका खत लानेवाले ख्वाजाप्यामतुल्लाहको ४००) इनामके मिले.

बंदरखंभातका मुतसद्दी मोहम्मदकासिम गयासुद्दीनके बदलेजानेसे बंदरसूरतका मुतसद्दी हुआ.

---

१. कलकत्तेकी प्रतिमें शाहबेगखां. २ सिरपर पहिननेका १ गहना. ३ थाल. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें हुसनअलीखां.

बादशाहजादे मोहम्मदकामबख्शने कुरान याद करलिया था इसलिये खिल-अत २ घोड़े सुनहरी साजके जड़ाऊ सरपेच, सोनेकी माला, जड़ाऊ फूलोंकी ढाल, तरकश, कमान, और कुरबान, उसे इनायत हुए.

अलहयारखांके बदलेजानेसे खानेजादखां गजनीनका और अलहयारखां खानेजादखांकी जगह काबुलका किलेदार हुआ.

आजमखां कोका अमीरुलउमराके बदलेजानेसे बंगालेकी सूबेदारीपर रुखसत हुआ जाते वक्त खिलअत, जड़ाऊ खंजर, और ५०० मोहरका घोड़ा सोनेके साज समेत उसे इनायत कियागया.

किफायतखांके बदलेजानेसे इनायतखांने दफ्तर खालिसेकी पेशदस्तीका खिलअत पाया.

मुगलखांके बाद बरतरफीके २ हजारी हजार सवारका मनसब बहाल हुआ फजलुल्लाहखां बरतरफी भी बहाल होकर बंगालेमें तईनात हुआ.

शाहजादे मोहम्मदसुल्तानका मरना।

शाहजादा मोहम्मदसुल्तान बहुत दिनोंसे बीमार था ७ शव्वाल (मार्गसिरसुदि ९ । २३ नवम्बर) को उसके मरनेको खबर शिकारमें बादशाहको लगी दिल बैठगया आँखें भरआईं फजुल्लाहखां खानसामान सियादतखां अबदुर्रहीमखां शेखनिजाम और मुल्ला मोहम्मदयाकूबके नाम हुक्म गया कि ख्वाजाकुतुबकी दरगाहमें उसे गाडदें और उसकी रूह (आत्मा) के सवाब

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें मोतियोंकी माला.

२ नहीं मालूम यह शव्वाल सन् १०८७ का है या ८८ का मगर इससे पहले सन् ८८ का सफर आचुका है सो इस वास्ते हमने भी सन् ८८ काही समझकर मिती और अंग्रेजी तारीख ऊपर लिखदी है ॥ मासिरआलमगीरीके अखीरमें जहां इस शाहजादेका हाल है वहां सन् २१ जलूसीमें इसका मरना लिखा है इससे भी सन् १०८८ का शव्वालही सही जाना जाता है और इसकी उमर ३८ वर्ष २ महीनेकी लिखी है यह ४ रमजान १०४९ को पैदा हुआ था इस हिसाबसे भी इसका मरना सन् ८८ मेंही सही मालूम होता है.

पुण्य.) पहुंचानेके लिये खैरातें करें. वह सन् १०४९ (संवत् १६९६ । सन् १६३९ । में पैदा हुआ था और ३८ वर्ष २ महीनेकी उमरमें मरा.

शाहजादे मोहम्मदअकबरकी अर्जीसे उसका २७ (पौषवदि १४।१३ दिसम्बर) को उज्जैनमें पहुंचना मालूम हुआ.

सुलतानसिपहरशिकोहका बेटा सुल्तान अलीतवार मरगया सुलतानसिपहरको मातमीका खिलअत इनायत हुआ.

४ जिलहज (माघसुदि ६।१८ जनवरी) को बड़े बादशाहकी अकबराबादी महल मरगई.

बखशीउलमुल्क सरबुलंदखांको हुक्म हुआ कि ८ महीनेकी तनखाह मौकूफ नक्दीवाले ६ महीने तनखाह पावें करें.

५ सफर (चैतसुदि ६।२९ मार्च) को अर्ज हुई कि फजलुल्लाहखांको जो बंगालेमें तइनात हुआ था, १ नौकरने जमधर मारकर मारडाला.

९ (चैतसुदि १०।२ अप्रेल) को शाहजादे मोहम्मद आजमका बेटा सिकंदरशान मरगया.

खानजहांबहादुरकी अर्जी पहुंची कि ११ रबीउलअव्वल (जेठवदि ८।१४ मई) को नल्दुर्गका किला बादशाही बंदोंके कबजेमें आगया.

१७ रबीउलआखिर (अषाढबदि ४।६।९ जून) को शाहजादे मोहम्मदसुलतानका बेटा सुलतानमसऊदवख्त मरगया.

उज्जैनके अखबारसे मालूम हुआ कि किशनसिंह हाडा जो शाहजादे मोहम्मदअकबरकी मुलाजिमतमें आया था खिलअत पहिननेमें शाहजादेके नौकरोंसे तक-

---

१ इस हिसाबसे तो वह शव्वाल सन् १६८७ का ही मालूम होता है क्योंकि मोहम्मद सुलतान ४ रमजान सन् १०२९ (पौषसुदि ५ सं. १६९६) को पैदा हुआ था ३८ वर्षकी उमर ४ रमजान सन् १०८७ (कार्तिकसुदि ६ सं. १७३३) को पूरी होती है वह शव्वालमें मरा वो ३८ वर्ष १ महीनेका हुआ था असल किताबमें २ महीने गलत हैं ऐसीही गड़बड़ सनोंमें भी है. २ कलकत्तेकी प्रतिमें ८ और ७ महीने. ३ पहिले बरस १ में ८ महीनेकी तनखाहें मिलती थीं अब ६ महीनेकी मिलें. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें शाहजादेसे पृष्ठ १६१.

रार होगई जिससे पेटमें जमधर मारकर मरगया उसके ४ खिदमतगार १६ आदमियोंको मारकर मारेगये. शाहजादा मोहम्मदआजम १४ जमादिउल्अव्वल (सावनबदि ११९ जुलाई) को पटनेमें पहुंचा.

२९ (सावनवदि १२।१६ जुलाई) को शाहआलमबहादुर काबुलमें पहुंचा कुतुबुद्दीनखां और राजा इन्द्रमणि बुंदेला मरगये.

दक्खनके बख्शी और वाकिआनवीस अबदुलरहमानके नाम हुक्म लिखा गया कि खानजहां बहादुर हजूरमें बुलायागया है सूबेदारके पहुचनेतक दिलेरखांको खबरदारी सौंपीगई सो वहांके काम उस (वाकिआनवीस) की सलाहसे हुआ करें.

जुमदतुलमुल्क असदखां बहुतसे लशकर और सामानसे दक्खनकी मुहिम पर रुखसत हुआ.

२१ वां आलमगीरीवर्ष.

१ रमजान सन् १०८८ (कार्तिकसुदि २ संवत् १७३४।१८ अक्तूबर सन् १६७७) से २१ वां वर्षलगा.

१३ रमजान (कार्तिकसुदि १९।३० अक्तूबर) को शाहजादे मोहम्मद अकबरने उज्जैनसे पहुंचकर मुलाजिमतकी खिलअत नीमाआस्तीन समेत वाला-वंद और ९ घोडे उसे इनायत हुए.

१ शव्वाल (मार्गसिरसुदि ३।१७ नवम्बर) को ईद हुई.

२ रविवार (मार्गसिरसुदि ४।१८ नवम्बर) को बादशाहने दरबार करके अतर और पान दरबारियोंको बांटे हुक्म हुआ कि मजलिसका यह थोडासा सामान भी उठालें और बखशीउलमुल्क सफीखांसे फरमाया कि हमने जशन मौकूफ करदिया है अमीरुलउमराकी पेशकश लौटादें और दूसरे अमीर भी पेशकश लावें और यह भी हुक्म जारी हुआ कि चांदी और सोनेके ऊदसोज (अगरदान) जो खासो आममें लाये जाते हैं उठालें। मुनशीलोग चांदीकी दवातोंकी जगह

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें १४ जमादिउलआखिर (भादोंबदि १। २४ जुलाई)
२ यह तारीख और वार सहीहै क्योंकि पंचांगमें भी मगसिर सुदि ४ रविवारको लिखी है.

चीनी पत्थर और मुलम्मेकी दशतें बाँधाकरें और इनामके रुपये जो चांदीके थालोंमें लाये जाते हैं ढाकोंमें लायेजावें। जो आदमी शर्ई (ऊंचे) पाजामें नहीं पहिनते हैं वे मोजे पहिनकर आवें और खिलअतखानेमें बूटेदार जरीकी जगह फलावतूनका बाफ़ता खर्च हुआकरे और दुदामीका कारखाना जो चंदरमें खडा कियागया था उठादियाजावे। चांदी और सोनेके कटहरेकी जगह लाजवर्दका सुनहरी कठहरा लगायाजाय आमखासाबाद और नवेलबाडीके सिवाय और बादशाही बागोंमें मोसमकी फूलवार न लगायाकरें ४ सदीसे ऊपरवाले (मनसबदार) बिना हुक्मके इमारतें न बना सकें। उसी दिन बादशाहजादे कामबख्शको ८ हजारी २ हजार सवारका मनसब तोमन तौग झडा नक्कारा सायबान १० घोडे और १९ हाथी इनायत हुए.

सब शाहजादों और हजूर तथा दूरके अमीरोंको जाडेके खिलअत दियेगये.

१२ शव्वाल (मार्गसिरसुदि १४। २८ नवंबर) को कमरुद्दीनखांके बदले जानेसे इब्राहीमखांने कश्मीरकी सूबेदारीका खिलअत पहिना.

ऐतकादखांका बेटा मोहम्मदयारखां खिदमतगारखांके बदलेजानेसे जरगरखानेका दरोगा हुआ.

सजावारखांको कन्नौजकी फौजदारीका खिलअत मिला.

तबेलेका मुशरफ मोहम्मदनईम शाहजादे मोहम्मदकामबख्शका बख्शी हुआ.

बलखके खान सुबहानकुलीखांका नवासा ख्वाजा बहाउद्दीनने जो ख्वाजापारसाका बेटा था वलायतसे पहुंचकर खिलअत ४ हजार रुपया नकद और जडाऊ खंजर पाया.

ऐतकादखांके बदलेजानेपर ख्वाजा खिदमतखां जवाहर बाजारका दरोगा हुआ.

रूहुल्लहखांके बदलेजानेसे मुगलखां आखताबेगी (तबेलेका दरोगा) हुआ.

सुमकरण बुंदेलेके बदलेजानेसे मनव्वरखां राठ महोबा जलालपुर और खंडूनकी फौजदारी पर गया.

आलमगीरनामा लिखनेवाला मोहम्मदकाजम बिकरीखानेका दरोगा हुआ.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें नूरबाडी. २ कलकत्तेकी प्रतिमें १० शव्वाल (मार्गसिरसुदि १२।२६ नवम्बर) है.

सरबुलंदखांके बेटे निजाबतखांकी बहन आई बेगम मरगई नामदारखां उसको हजूरमें लाया. मातमीका खिलअत इनायत होनेसे उसका शोक दूर हुआ.

सन् १०८९ हि.

३ रवीउलअव्वल (वैशाखसुदि ४ । १९ अप्रेल) को मुर्तिजाखां मरगया वह बड़ा खानदानी और बहादुर सरदार था फौजको बड़ी तनख्वाह देता था और तुजुक (सजावत) से रखता था। हजरतने उसके मरनेसे पहिले बखता-वरखांको उसके पास हाल पूछनेके लिये भेजा था उसने अर्ज कराया कि मैं तो यह चाहता था कि बादशाहके काममें अपनी जान देता मगर यह अरमान दिलमें रहगया। दूसरे लोग तो जर और जवाहर छोड़ते हैं मैं कई जानें अपनी जगह छोड़ता हूँ जो शायद हजरतके काम आवें.

मरे पीछे उसके नौकर १ हजारीसे ४ हजारी तक सरकारमें रखलिये गये और पयादे भी कारखानोंमें नौकर होगये.

६ (वैशाखसुदि ७ । १८ अप्रेल) को शेखअवदुलअजीज मरगया दो दिन पहिले बखतावरखांने मुझे हुक्म पहुंचानेके लिये उसके पास भेजा था कि इलाज करनेमें हठ नहीं करना चाहिये जो मरजी हो तो यूनानियों (हकीमों) मेंसे जिसको चाहो भेजें उससे दवा कराओ जब मैं गया तो बिस्तर पर लेटाहुआ किताबोंके बनानेमें लग रहा था वह जो कुछ कहता था उसके लायक शागिर्द मीरहादी और मोहम्मदसईद ऐजाज वगैरा उसको लिखते थे। हुक्म सुननेके पीछे उसने मुझको जवाब दिया कि इलाज करनेमें तो हठ नहीं है मगर मुझे इन लोगोंके किताब जाननेका भरोसा नहीं है जो कोई ऐसा हो तो आवे मैंने तो अबदुलमलिक नाम १ शख्शको इलाज करनेके वास्ते चुनलिया है जिसके किताबजानने, समझने तजरुबे, और सलाह, पर मुझे भरोसा है और जिंदगी ऐसी चीज नहीं है कि जिसके बचानेके लिये इतने बहुत हाथ पांव मारे जावें पानीमें गोता मारना है जो माथे परसे फिर गया है.

मैंने आकर यही बातें बखतावरखांसे कह दीं उसने कहा लिखो मैंने लिखी। उसने बादशाहको दिखाई उन्होंने फरमाया कि यह नहीं मानेगा जिसने ऐसा

१ कलकत्तेकी प्रतिमें ४ बीसती तक.

कहा है हमको जो डर है वह आकिवत (परलोक) का है कि ख़ुदाकी दरगाहमें क्या हो.

उसके मरनेसे लुतफुल्लाहखांने अर्जे मुकर्ररका खिलअत पहिना और अशरफखां उसकी जगह अखबार पढनेका काम करने लगा.

इमामवरदीके वदलेजानेसे कौरखानेका दरोगा, मोहम्मदयारखां और इमामवरदी सहारनपुरका फौजदार, और मोहम्मदअलीखांके वदलेजानेसे मोहसनखां चीनीखानेका दरोगा हुआ.

२८ जमादिउलअव्वल (सावनसुदि ११९ जुलाई) को हामिदखां दरगाहमें पहुंचकर वापकी जगह खास चौकीका दरोगा हुआ उसे मातमीका खिलअत मिला और इफ़तख़ारखां उसकी जगह अजमेरको गया.

कवामुद्दीनखांने कशमीरसे हजूरमें पहुंचकर खिलअत पाया.

मुगलखांके वदलेजानेसे अवदुल्लहीमखां आखतावेगी हुआ.

लुतफुल्लाहखांको यह इज्जत बखशी गई कि वह पालकीमें वेठा हुआ किलेमें आया करे.

दक्खनके अखवारसे मालूम हुआ कि दलेरखांकी गोलकुंडेवालोंसे सख्त लड़ाई हुई खानकी सवारीके हाथीको वंदूकका जखम लगा खिदमतगार जो पीछे हाथी पर वैठा था वानके लगनेसे मरगया। खानके गरेवानमें भी आग लगगई थी जो छागलके पानीसे बुझादीगई। बहुतसे आदमी दुशमनोंके मारेगये और बहुतसे खानके भी काम आये। वह लडता हुआ लशकरकी खवर पाकर शामको डेरेमें पहुंचा.

६ जिलहज्ज सन १०८८ (माघसुदि ८। २० जनवरी) को शाहआलम-बहादुरने काबुलसे आकर मुलाजिमत की खिलअत खासा और जडाऊ जीगा उसे इनायत हुआ सुलोतीन (बादशाहके पोते.) और दूसरे अमीर जो शाहआलम बहादुरकी खिदमतमें तईनात थे खिलअत और जवाहर पाकर निहाल हुए.

१० (माघसुदि १२।२४ जनवरी) को बकराईदकी नमाज औरकुरवानी हुई.

---

१ बादशाहके पोते सुल्तान कहलातेथे, सुलातीन उनकी जमा (बहुवचन) है अर्थात् अनेक.

२१ रबीउलअव्वल (जेठबदि १३ संवत् १७३१ । ८ मई) को सेवाके मृगीपड़न पर चढ दौडनेकी अर्ज हुई.

सूरतके अखबार लिखनेवालेने लिखा कि १ घोडीने ३ पांवका बच्चा जना तीसरा पांव छातीसे लगा हुआ है तीनों पांवसे चलता है.

मुरादबख़शकी लडकीका निकाह ख्वाजा सालह नकशबंदीके भतीजे ख्वाजा-याकूबसे हुआ खिलअत सोनेके साजका घोडा यशमका जीगा, हथनी, और ४ हजार रुपया उसे इनायत हुए.

सरबुलंदखां उसको पहिले बेगम साहिबकी डचोढी पर आदाब बजालानेके लिये लेगया फिर अकबराबादी मसजिदमें उसका निकाह हुआ दो लाख रुपयेका मिहर बंधा.

सुलेमांशिकोहकी बेटीका निकाह ख्वाजापारसाके बेटे ख्वाजाबहाउद्दीनसे हुआ उसको भी उतनी ही इनायतें हुईं.

कुतुबआलमके सज्जादानशीन (गादीधर) सैयद मोहम्मदके बेटे सुल्तान-उद्दीनको जो सदरुस्सदूर रजवीखांका भतीजा और जमाई था अहमदाबादको जाते वक्त खिलअत, हथनी, और १ हजार रुपये मिले.

१७ रबीउलआखिर (आषाढबदि ४ । २९ मई) को फवामुद्दीनखांने लाहोरकी सूबेदारी पाई

रहमतखांके बदलेजानेसे कामगारखां बयूतात (कारखानों) का दरोगा हुआ. सैयदमोहम्मदवीजापुरीका दरगाहमें पहुंचने पर १ हजार रुपये सालाना होगया.

२९ जमादिउलअव्वल (सावनबदि १३ । ६ जुलाई) को शाहजादा मोहम्मदअकबर मुलतानका सूबेदार हुआ खिलअत खासा मोतियोंकी माला लालोंका कण्ठा सोनेके साजके २ घोडे और हाथी तलवार समेत इनायत हुआ सफीखां उसके पास रखागया और अबदुलरहीमखां उसका नायब हुआ.

शाहजादे मोहम्मदअजीमका[1] ब्याह केसरीसिंहकी बेटीसे हुआ ६३ हजार रुपये जवाहर सोनेका चौडोल १ पालकी ९ डोली चांदीके बांसोंकी दायजेमें

१ कलकत्तेकी प्रतिमें कीरतसिंह पृष्ठ १६७.

इनायत हुई। शादीके दिन शाहजादेको खासा खिलअत मोतियोंकी माला और जड़ाऊ कलगी मिली। मुखतारखांके बेटे कमरुद्दीनको खांका खिताब मिला.

आदिलखां बीजापुरीकी पेशकश ११ लाख रुपयेकी कबूल हुई.

अमीरुलउमरा शायस्ताखांने बंगालेमें पहुंचकर खिलअतमें मुलाजिमत की उसको बढ़िया खिलअत और यशम-पत्थरके दस्तेका खंजर जो हजरतके हाथमें था इनायत हुआ। उसकी पेशकश ३० लाख रुपये नकद और ४ लाख रुपयेके जवाहर समेत नजरसे गुजरी उसमें १ ऐसा कांच भी था कि तरबूज उसके आगे रखा तो सूखगया और उसमेंसे बूंद २ पानी टपकने लगा दूसरा एक संदूक था जिसमें एक तरफ हाथी और दूसरी तर्फ कुत्ता बांधा हुआ था हाथी तो खींच नहीं सका कुत्ता हाथी समेत संदूकको खींच लेगया.

अमीरुलउमराको चुनेहुए अमीरोंकी यह आखिरी मुराद मिली कि गुसलखानेके दरवाजे तक पालकीपर चढ़ाहुआ आयाकरें और शाहआलम बहादुरकी नौबतके पीछे अपनी नौबत बजायाकरें.

फिर वह बादशाहके हुक्मसे शाहआलमबहादुरकी मुलाजिमतमें गया वहां उसने २०० मोहरें नजरकीं और २००० रुपये नियाजके गुजराने। शाहआलमने उससे मिलकर उसे तकियेके पास बैठाया। चार कुब्बका खिलअत और यशमके दस्तेका खंजर इनायत किया.

६ जमादिउलअव्वल (अषाढसुदि ८।१७ जून) को हुसैनअलीखांके[३] बदलेजानेसे अमीरुलउमरा आगरेकी सूबेदारीपर गया। खिलअत खासा[१] घोड़े अरबी और इराकी उसे इनायत हुए.

दक्खनके बखशी और वाकियानवीस[२] अबदुलरहमानखांसे खानका खिताब छीन लिया गया कसूर यह था कि बहादुरखांने जमीदारोंसे जो कुछ तहसील किया था वह उसने अखबारमें पूरा नहीं लिखा था.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें यशमके दस्तेका जड़ाऊ खंजर मीनाके साज और छडी समेत सोनेके साजकी चोब और यशमकी खासा छडी जो हजरतके हाथमें थी इनायत हुई.
२ यह बादशाहका मामा था. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें हुसनअलीखां.

बहादुरखां दक्खनकी सूबेदारीसे मौकूफ होकर दरगाहमें आया था और कई कसूरोंसे जिनमें मुख्य पेशकशके उचाने और भेजनेमें गोलमाल करदेना था मनसब और खिताब खो बैठा था। उसके सब माल असबाब नकद जिनस हाथी और घोडे छिनगये थे। बादशाहने रहम करके उसको माफ करदिया और उसने जो किया था उसको नहीं किया मानकर उसे मुआजिमत करनेका हुक्म दिया। ११ रबीउलसानी (जेठसुदि १२। २३ मई) को वह पुराना बंदा इस बडी दौलतको पहुंचा। अपना दरजा और खिताब फिर पाकर निहाल हुआ. फिर उसको आकिलखां शाहआलम बहादुरकी खिदमतमें लेगया जहां उसने खिलअत और ७ हजार रुपयेका खंजर पाया.

बादशाहसे अर्ज हुई कि बंगालेका उतरा हुआ सूबेदार आजमखां कोका जो बिहारको आरहा था १२ रबीउलसानी (जेठसुदि १३। २४ मई) को ढाकेमें मरगया बादशाहजादा मोहम्मदआजम जो पटनेका सूबेदार था उधर भेजागया नूरुल्लहखां उसकी नायबीमें उडीसाकी सूबेदारी पर मुकर्रर-हुआ सैफखां बिहारकी सूबेदारी पर गया.

आजमखांके छोटे भाई खानजहांबहादुर और उसके २ बेटोंको मातमीके खिलअत इनायत हुए। उसके दूसरे बेटे सालहखां बगैराको गुर्जबरदारके हाथ खिलअत भेजेगये। २२ लाख रुपयेका उसका माल असबाब और १२ हजार मोहरें जप्त हुईं.

११ शाबान (आसोजसुदि १३। १८ सितम्बर) को शाहआलमबहादुर दखनके सूबोंके बन्दोबस्तपर बहुतसी फौजके साथ रुखसत हुआ. खिलअत खासा जडाऊ बालाबंदसमेत जडाऊ साजकी तलवार मोतियोंकी माला जीगा घोडे और १ हाथी सुनहरी साजका १ लाख अशरफी नकद असल[1] करोड दाम इजाफेके ४ करोड दाम मनसबके सिवाय उसको इनायत हुए उसके शाहजादोंको भी इजाफे और जवाहर मिले और जो कोई उसकी फौजमें तइनात थे उन सबको खिलअत घोडे और हाथी वगैरह इनायत हुए.

लाहोरके सूबेदार किवामुद्दीनखांको जमूकी फौजदारी भी मिली.

---

[1] असल ग्रंथमें यहां फिर आगे पीछे तारीखें लिखी हैं और वर्षोंमें भी सन्देह है.

राजा जसवंतसिंह बुंदेला चंपत बुंदेलेके बेटोंको सजादेनेके लिये रुखसत हुआ।

बादशाहसे अर्ज हुई कि लाहोरमें नाज मंहगा होगया है हुक्म हुआ कि १०) रोजके खैरातखाने और खोलेजावें.

काबुलके अखबारसे बादशाहके कानोंमें यह बात पहुंची कि बलख और बुखाराके खान आपसमें लडरहे हैं और दोनों जगह नाज इतना महंगा होगया है कि वहांके आदमी मुरदों और दूसरी हराम चीजोंके खानेसे भी नहीं चूकते हैं.

१४ मोहर्रम सन् १०८९ (फाल्गुनसुदि १५।२१ फूरवरी) को अर्ज हुई कि जुमदतुल्मुल्क असदखां बुरहानपुरसे औरंगाबादको रवाने हुआ है.

सहबानबेगके बेटे जानबेगको आतिशखाका खिताब मिला। हुक्म हुआ कि शनीचर और बृहस्पतिको इनायतखां और किफायतखां दीवानीके कामोंकी अर्ज करनेके वास्ते हुजूरमें आया करें.

मुरादबखशकी बेटी और ख्वाजा मोहम्मदसालहकी बीबी आसायिशबानू मरगई.

काबुलका सूबेदार अमीरखां २७ रबीउलअव्वल (जेठबदि १४।९ मई) को अपनी खिदमत (ड्यूटी) पर पहुंचाथा.

जौनपुरके अखबारसे अर्ज हुई कि १७ रबीउलआखिर (असाढबदि ४।२९ मई) से मेह बरसने लगा महल पर पूर्वकी तर्फ जहां इज्जतखां बैठा था बिजली गिरी ६ आदमी मरे दो बहुत देर पीछे होशमें आये खानके, पांवमें भी कुछ झपट लगी थी पर बचगया.

शाहजादा मोहम्मदआजम १९ जमादिउलअव्वल (सावनबदि ७।१० जून) को जहांगीर नगरमें पहुंचगया.

बगालेके दीवान शफीखांने जो कागज भेजा था बादशाहको सुनायागया कि १२ महीनेकी तनखा लेनेके पीछे अमीरुलउमरा १ करोड १२ लाख रुपया और ले बैठा है हुक्म हुआ कि अमीरुलउमराके नाम बाकी निकाल देवें.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें, २७ रबीउलआखिर (असाढबदि १४।८ जून.)

२ कलकत्तेकी प्रतिमें १९ जमादिउलआखिर (भादोंबदि ५।२८ जुलाई.)

२२ वां जलूसी सन्.

१ रमजान सन् १०८९ (कार्तिकसुदि ३ संवत् १७३५। ८ अक्तूबर सन् १६७८) से २२ वां जलूसी सन् लगा बादशाहने रोजे रखकर सवाब कमाया.

१० (कार्तिकसुदि १२।१३।१७ अक्तूबर) को हुक्म हुआ कि मीरेसुगीस ३६ हजार रुपयेकी कीमतका सरपेंच बादशाहजादे मोहम्मदआजमके लिये लेजावे.

बादशाहजादे कामबखशकी सालगिरहमें जो १२ वर्षका होगया था मोतियोंकी माला और जडाऊ फूलोंकी ढाल उसको इनायत हुई.

ख्वाजा मोहम्मदसालम - नकशबंदीको शेखमीरकी लडकीसे सगाई करनेका खिलअत मिला.

गयासुद्दीनखांको मातमीके खिलअत उसके भाई अबदुलरहमानखां अबदुलरहीमखां और बेटे रजीउद्दीनको इनायत हुए.

बहरेमंदखां और शर्फुद्दीनको मांकी मातमीके खिलअत मिले.

तहव्वुरखांके बदलेजानेसे अबूमोहम्मदखां बीजापुरी अवधकी सूबेदारी पर भेजागया.

दाराबखां खंडेलेके राजपूतोंको सजादेने और बडे मंदिरको गिरानेके लिये गो श्हा था। एक अच्छी फौज लेकर रुखसत हुआ। बहरेमंदखां उसकी नायबीमें गया। उसकी जगह ख्वाजामिरजाने फीलखानेकी दरोगाई पाई.

१ शव्वाल (मगसिरसुदि २। ६ नवम्बर) को बादशाह ईदकी नमाज पढनेके लिये ईदगाहमें गये.

पिशावरके अखबारसे अर्ज हुई कि उमदेराजहायऊज्जाम (बहुत बडे राजोंमें उमदा अर्थात् मुख्य) महाराजा जसवंतसिंहने ६ जीकाद (पौषसुदि ८। ११ दिसम्बर) को जिंदगीका बिछौना लपेटा यानी मरगये.

१० जिलहिज्ज (माघसुदि १२। १३ जनवरी) को ईदकी नमाज हुई. लुतफुल्लाहखांके बदलेजानेसे बहरेमंदखां अहदियोंका मीरबखशी हुआ.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें मीरसुगीस जो बंगालेकी दीवानी पर आता है।

२ जोधपुरकी तवारीखमें पूसबदि १० शुक्रवार संवत् १७३५.

मरेहुए राजा (जसवंतसिंह) के वतन जोधपुरकी किलेदारी पर खिदमत-गुजारखां, फौजदारी पर ताहरखां, अमीनी (तहसीलदारी) पर शेखअनवर और कोतवालीपर अबदुलरहीम रुखसत हुए.

इति औरंगजेबनामा आठवां खंड समाप्त।

नवां खंड।

संवत् १७३५ वि०। सन् १६७९ ई०.

बादशाहका अजमेर जाना।

१० जिल्हज्ज (फाल्गुनबदि ७। २३ जनवरी) को बादशाहने अजमेरकी तरफ कूच किया। कामगारखांको किलेदारी फौजदारखांको फौजदारी एतमादखांको दीवानीपर दिल्लीमें रहनेके वास्ते दूसरे मुत्सद्दियोंके साथ रुखसत किया गया.

सन् १०९०.

१ मोहर्रम (फाल्गुन सुदि ८। ८ फरवरी) को खानजहां बहादुर हुसेन-अलीखां और दूसरे बडे अमीरोंके साथ मरेहुए राजाका मुल्क दबानेके लिये रुखसत हुए.

१३ (फाल्गुनसुदि १५। १९ फरवरी) को राजा रामसिंहके पोते कुंवर किशनसिंहने वतनसे आकर मुलाजिमत की.

अबदुलरहीमके बदले रूहुल्लाहखां आखताबेगी हुआ.

१६ मोहर्रम (चैतबदि ३। १८ फरवरी) को जुमुदतुलमुल्क असदखांने दक्खनसे आकर किशनगढमें गद्दी चूमी.

१८ मोहर्रम (चैतबदि ५। २० फरवरी) को बादशाहने अजमेर पहुंचकर पहिले ख्वाजामुईनुद्दीनकी जियारत की फिर दौलतखानेकी शोभा बढाई.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें ६ जिल्हज्ज (माघसुदि ८। १९ जनवरी.) २ कलकत्तेकी प्रतिमें हसनअलीखां. ३ किशनसिंह रामसिंहका पोता नहीं था बेटा था पोता तो बिशनसिंह था.

२६ (चैतवदि १२ । २७ फरवरी) को मरेहुए महाराजाके वकीलके कहने-पर बादशाहसे अर्ज हुई कि उसकी २ हामिला (गर्भवती) औरतोंसे लाहोरमें पहुंचनेके पीछे कई घडीके तफावतसे २ लडके पैदा हुए.

२७ (चैतवदि १४ । १ मार्च) को शायस्ताखांने आगरेसे आकर मुला-जिमत की.

२९ (चैतसुदि १ । ३ मार्च) को बादशाहजादा मोहम्मद आजमका नौकर शाहरुखमिरजा गवाहटीके फतह होनेकी अरजी दरगाहमें लाया और १ हजार रुपया इनाम पाकर २ लाख रुपयेके ९१ मोतियोंकी माला और २९ हजार रुपयेका जडाऊ तुर्रा बादशाहजादेके लिये ले गया.

७ सफर (चैतसुदि ८ । १० मार्च) को शाहजादे मोहम्मदअकबरने मुलतानसे पहुंचकर जमीन चूमी । और नीमाअस्तीन और बालाबंद समेत खिल्अत पाया.

मुलतानके अखबारसे अर्ज हुई कि ठट्ठेका उतरा हुवा सूबेदार इज्जतखां बाद-शाहजादे मोहम्मदअकबरकी नायबीमें वहां पहुंचगया और सफीखां लाहोरको रवाने हुवा.

सैयद अबदुल्लाह मरेहुए राजाका माल कुर्क करनेके लिये सिवानेके किलेको रवाने हुवा.

अमीरुलउमराको खिलअत खासा, नीमाआस्तीन, और बालाबंद, समेत जडाऊ खंजर, इनायत होकर उसे आगरे जानेकी रुखसत मिली.

दाराबखां जो खंडेलेके राजपूतोंको दबाने और उन शरीरोंके बडे २ मदिरोंको ढानेके लिये गया था ९ सफर (चैतसुदि ११८ मार्च) को वहां पहुंचा। कई सौ राजपूत लडकर मारे गये। एक भी जीता न बचा खन्डेले सांवलते और उस जिलेके तमाम बुतखाने (मंदिर) गिरादिये गये.

---

१ परमेश्वरकी अजब अपरम्पार माया है कि जिस महाराजाके मुल्ककी औलाद न होनेसे खता समझकर बादशाह खालिसा करनेके लिये गये थे परमेश्वरने उसका हकदार पैदा करके यह बात बतादी कि आदमी तो कुछ चीतता है और परमेश्वर कुछ करदेताहै.

इफ़तख़ारख़ांके बदले जानेसे तहव्वरख़ां अजमेरका फ़ौजदार हुआ.

राना राजसिंहके वकीलोंने अर्ज कराई कि रानाका बेटा चाहता है कि दरगाहकी ख़ाक चूमनेसे अपनी पेशानीको रोशन करें । बादशाहने मंज़ूरी देदी और मोहम्मदनईम लेनेको गया १९ सफ़र (वैशाखसुदि १।१ अप्रेल) को गजरायसिंहका बेटा इंदरसिंह उसके डेरे तक पेशवाई करके आसमान जैसी ऊंची दहलीमें लाया उसके नसीबेने मुलाजिमत कराने खिलअत ख़ासा मोतियों और पन्नोंकी माला यशम पत्थरकी उरबसी जड़ाऊपहुंची और हथनी दिलानेमें मदद की.

फ़ैज़ुल्लहख़ां मुरादाबादसे और मुख़तारख़ां मालवेसे जो हुज़ूरमें आये हुए थे रुख़सत हुए.

मोतमदख़ांके बदलेआ रेसे अमानुल्लहख़ां गवालियरका फ़ौजदार हुआ.

७ सफ़र (चैतसुदि ८।१० मार्च) को बादशाह अजमेरसे कूच करके १ रबीउलअव्वल (वैशाखसुदि ३।३ अप्रेल) को दिल्लीके दौलतख़ानेमें पहुंचे.

बादशाहकी नीयत शरीअतको बढाने और काफ़िरोंकी बातोंके घटानेकी थी इसलिये हुक्म हुआ कि इसी महीनेकी पहिली तारीख़से हुज़ूर और सूबोंके जिम्मियोंसे जज़ियालें कई ईमानदार मोलवी और मुल्ला इस काम पर मुकर्रर हुए.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें लिखाहै कि राना राजसिंहके वकीलोंने उसकी अरजी नज़रसे गुज़रानेकी इजाज़त पाई उसने यह चाहाया कि उसका बेटा कुँवरजैसिंह दरगाहकी ख़ाक चूमकर अपने नसीबेकी पेशानीको रोशनकरे.

२ जज़िया मुसलमानी महसूल था जो हिंदुओंसे लिया जाता था अकबरने माफ़कर दिया था औरंगज़ेबने फिर जारी किया तो लाखों हिंदू दिल्ली तथा बाहरसे आकर दर्शनके झरोकेके नीचे इकट्ठे होगये और माफ़ीकी अर्ज करने लगे परन्तु बादशाहने मंज़ूर नहीं की, जुमेके दिन जब बादशाह जुमामसजिदको जानेलगे तो इतनी भीड़ होगई थी कि चोबदारोंके डाट डपट करने पर भी सवारी दोदो कदम चलकर रुक जाती थी निदान बादशाहने हाथी मंगाकर हिंदुओं पर छुडाये, जिनकी झपटमें आकर कई तो मरे और कई घायल हुए बाकी जान लेकर घर आये और लाचारीसे जज़िये देने पर राज़ी होगये (तवारीख़ ख़फ़ीख़ां.)

१२ (वैशाखसुदि १४।१४ अप्रेल) को शाहजादे मोहम्मदअकबरको लाहोर जानेको रुखसत मिली खिलअत खासा नीमआस्तीन तरकश कमान सोनेके साजके २ घोडे जडाऊ सरपेच और मुक्ता समेत उसे इनायत हुए.

मोहम्मदजमान लोहानीने खांका खिताब पाया शादखां कारागरीको अमदुल्ला-ह्खांका खिताब मिला और इफ़्तखारखां वगैरा भी खास इनायतें पाकर शाह-जादेके साथ रुखसत हुए.

१८ (प्र० जेठवदि ९।२० अप्रेल) को रानाके बेटे कुंवर जैसिंहको खिल-अत मोतियोंका सरपेच लाल्के लटकन जडाऊ तुर्रा सोनेके साजका अरबी घोडा और हाथी इनायत होकर उसे वतन जानेकी रुखसत हुई । राना राजसिंहको फरमान खिलअत जडाऊ सरपेच और २० हजार रुपये भेजे गये.

२४ रबीउल्सानी (द्वि० जेठवदि ११।२९ मई) को खानजहांबहादुर जोध-पुरके मंदिर गिराकर कई गाडियां मूर्तियोंसे लदीहुई हजूरमें लाया । बादशाहने उनको शाबाशी देकर फरमाया कि मूर्तियोंको दरबारके जलूखाने और जुमामस-जिदकी सीढियोंके नीचे डालदेवें सो पावोंमें रुलती रहें इन मूर्तियोंमें अकसर जडाऊ सोने चांदी तांबे पीतल और पत्थरकी भी थीं.

२५ (द्वि० जेठवदि १२।३१ मई) को अमरसिंहके पोते रावरायसिंहके बेटे इंदरसिंहने जसवंतसिंहके मरनेसे जोधपुरकी जमींदारी, राजाका खिताब खिलअत खासा जडाऊ साजकी तलवार, सोनेकी साजका घोडा हाथी अलमतोग और नकारा पाकर ३६ लाख रुपयेकी पेशकश कबूलकी पहिले यह जाब्ता था कि बादशाह बडे २ राजाओंकी पेशानी पर अपने हाथसे राजतिलक दिया करते थे मगर राजा रामसिंहकी पेशानी पर असदखांने दरबारमें टीका दिया था अब वह भी मौकूफ होकर फकत सलाम करना बाकी रहा.

सफीखांके बदलेजानेसे आकिलखां दानबख़शी हुआ.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें शाहबेगखां. २ राय आंगन. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें अपने चचा जसवंतसिंह. ४ झंडा. ५ नजराना, ६ खिताब.

दाराबखां २९ जमादिउलअव्वल (आषाढवदि १३।२९ जून) को मराय उसके भाई जानिसारखां बेटे मोहम्मदखलील मोहम्मदतकी, कामयाव और जमाई लश्करीको मातमीके खिलअत मिले.

दाराबखांके मरनेसे रुहुल्लाहखां मीरआतश उसकी जगह बहरामंदखां आखता-बेगी और उसके बदले एतकादखां अहदियोंका बखशी हुआ.

बादशाहजादे मोहम्मदमोअज्जमकी सवारीके अखबारसे शिरजाखां बीजापुरीका शाहजादेकी मुलाजिमतमें आना मालूम होकर उसको रुस्तमखांका खिताब मिला फरमान खिलअत घोडा हाथी नक्कारा भी उसके लिये भेजा गया.

राजा जसवंतसिंह जब काबुलमें मरा था तब तो उसके कोई बेटा नहीं था, उसके मरे पीछे उसके मोतमद नौकर सोनक, रुघनाथदास, माटी, रणछोड और दुर्गादास, वगैरहने दरगाहमें अर्ज कराई थी कि राजाकी २ औरतें पेटसे हैं लाहोरमें पहुंचनेके पीछे उसकी दोनों औरतोंसे २ लडके पैदाहुए उन नौकरोंने यह हकीकत भी अर्ज करके मनसब और राज मिलनेकी अर्ज कराई हुक्म हुआ कि दोनों लडकोंको दरगाहमें लावें। जब स्याने होजायँगे तो राज और मनसब पायेंगे। इन ओछी समझके लोगोंने दिल्लीमें आकर उस अर्जके वास्ते बहुत हठ किया इतनेमें १ लडका अपने बापसे जा मिला और बादशाहको मालूम हुआ कि इनकी यह खोटी मनशा है कि दूसरे लडकेको उसकी दोनों माओंके साथ लेकर जोधपुर भाग जावें और बागी होकर वहां दंगा फसाद करें। इस-लिये १६ जमादिउलआखिर (सावनवदि ३।१९ जुलाई) को हुक्म हुआ कि महाराजाकी दोनों रानियोंको लडके समेत रूपसिंह राठोडकी हवेलीसे जहां वे

---

१ यह वही दाराबखां है जो बूंदेलेके मंदिर गिराकर राजपूतोंकी तलवारसे तो बचकर आ गयाथा मगर मौतके तीरसे नहीं बचसका. २ कलकत्तेकी प्रतिमें जाँसुपारखां. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें झंडा और नक्कारा. ४ जोधपुरके इतिहासमें सावन वदि ३ सं. १७३६. ५ महाराजकी हवेली बादशाहने इंद्रसिंहको दिलादीथी इस लिये महाराजके कबीले किशनगढके राजा रूपसिंहकी हवेलीमें रहतेथे.

रहती थीं लाकर नूरगंढमें रखदें फौलादखां कोटवाल सैयदहामिदखां खास चौकीके बन्दे दाऊदखाँके बेटे हमीरखां दिलेरखांके बेटे कमालुद्दीनखां और ख्वाजामीरक, जिसने फिर सुजावतखांका खिताब पाया बादशाहजादे मोहम्मदसुलतानके रिसाले के साथ जाकर इन जाहिलोंको अपना मन चाहा करनेसे रोकें और जो वे सरकशीसे लडना चाहें तो सजा देकर उनके धुएँ उडादें.

इन लोगोंने हुक्मके बमूजिब जाकर बहुत समझाया डराया धमकाया मगर काफिरोंने अपनी भलाई और बेहतरीसे आँखें मूंदकर लडनेकी कोशिश की बहुतसे उनमेंसे मरगये और अक्सर बादशाही बन्देभी काम आये. जब गोहिल राजपूतोंने मैदानजंगको तंग देखा तो राजाकी दोनों रानियोंको जिन्हें लडाईमें मरदाना कपडे पहिना कर अपने साथ लेआये थे कतल करके दूसरे लडकेको एक दूध बेचनेवालेके घरमें जहां छुपाया था वहीं छोडा और बडी घबराहटसे भागनेका रस्ता लियो.

फौलादखां जो उस लडकेका हाल जानगया था उसे उस दूधबेचनेवालेके घरसे निकालकर हजूरमें लाया हुक्म हुआ कि राजाकी लौंडियोंको दिखावें जो पकडी आई थीं उन्हें कहा कि यह महाराजाका बेटा है । बादशाहने

---

१ जोधपुरकी ख्यात (तवारीख) में लिखाहै कि जब बादशाहने जोधपुरके राज्यका पट्टा इन्द्रसिंहको लिखदिया तो महाराजके सरदारोंको बुलाकर फरमाया कि लडकों और रानियोंको तो हमें सौंपदो हम उनको पालेंगे पोसेंगे और तुम सलीमगढमें डेरा करो । परन्तु सरदारोंने यह कलंकका टीका कबूल न किया और उनके सौंपदेनेसे अपनी जान देनेको बेहतर समझा.

२ वीर राठोडोंने दिल्लीमें यह बहुत बडा शाका अपने मालिककी संतान और लज्जाको बचानेके वास्ते तारीफके लायक किया था इसका सविस्तार वृत्तांत राजरूपक नाम मारवाडीके काव्य ग्रंथमें लिखा है । और जोधपुरकी ख्यातसे जानाजाता है कि राठोड सरदार बादशाहकी फौज पर जो सीदी फौलादखां लेकर आया था घोडे उठाकर ऐसी बहादुरीसे लडे कि तमाम हिंदुस्तानमें उसकी धूम मचगई बादशाहके ५०० आदमी मारे गये और ७ । ८ सौ घायल हुए.

उसका मोहम्मदीराज नाम रखकर उसे परवरिशके वास्ते जेबुन्निसाबेगमकी देखभालमें सौंपा।

दूसरे दिन फौलादखांने उस लडकेका कुछ जेवर भी ढूंढ निकाला मगर राजा और दोनों रानियों और दूसरे रजपूतोंका माल असबाब उस गडबडमें छठेरोंने लूटलिया और जो सरकारमें आया बादशाहके हुक्मसे बेतुल्मालके कोठेमें दाखिल हुआ दोनों रानियों और राजपूतोंकी रईस रणछोडकी लाशके साथ ३० सिरें उनके सरदारोंके गिने गये और जो मारेजानेसे बचे वे भागकर २४ जमादिउस्सानिक (सावनवदि ११ । २३ जुलाई) को जोधपुरमें पहुंचगये दुर्गा और दूसरे दुशमनोंके बहकानेसे १ जाली लडकोंको दलथंभन जो मरगया था और अजीतसिंह नाम रखकर और उनको राजा जसवंतसिंहके बेटे बताकर फिसाद करनेलगे । जोधपुरका फौजदार ताहरखां जिसने उन भागेहुओंके रोकनेमें पांव नहीं जमाया था बादशाहकी खफ़गीमें आकर नौकरीसे बरतर्फ होगया और खानीका खिताब भी उसका छीनागया इन्दरसिंह जो नालायिक और बेहौसिला होनेसे उस मुल्क और इस फसादका बन्दोबस्त न करसका था हजूरमें बुलालिया गया.

१० रजब (भादोंवदि ७।८। १८ अगस्त) को बादशाहने खिज्राबादके बागमें आकर एक अच्छी फौज सरबलंदखांकी सरदारीमें राजपूतोंसे जोधपुर फतह करनेके लिये भेजी.

२१ रजब (भादोंवदि १४ । २९ अगस्त) को बादशाहसे अर्ज हुई कि राजाके नौकरोंमेंसे राजसिंह बहुतसी जमईयत जमा कर अजमेरके फौजदार तहव्वरखांसे लडा । ६ दिनतक दोनोंमें जैसी होनी चाहिये वैसी लडाई होतीरही।

---

१ फौलादखां कोटवालकी यह कारवाई आजकलकी पुलिससे कम न थी जिससे बादशाह भी धोखेमें पडगये थे क्योंकि महाराजके असली बेटे अजीतसिंहको तो राठोड निकाल लेगये थे और यह नकली लडका या तो वेही छोड गये थे या फौलादखांने पैदा कर लिया था. २ यह बादशाहकी बेटी थी. ३ भंडार. ४ महाराजके १९ बडे २ सरदार जोधा रणछोडदास और महेसदास जैसे जो हमेशा बादशाही दुशमनोंसे लडतेरहेथे बादशाहकी बेरहमी और बेमुरव्वतीके सदके हुए. ख्यात जोधपुर.

तीर और बंदूकसे लडते २ तल्वार और बरछी और छुरी कटारीकी नौबत पहुंची बहुत देरतक कटाछनी हुई । दोनों तर्फसे लाशोंके ढेर लगगये । आखिर तहव्वरखां जीता राजसिंह मारागया हकीकतमें राजपूतोंने यह ऐसी झडप देखी कि फिर कमर नहीं बांधी जंगलोंमें भागकर मर खिरगये.

२ शाबान (भादों सुदि ३ । २९ अगस्त) को शाहजादे मोहम्मदअकबरने लाहोरसे आकर मुलाजिमत की खिलअत खासा और ७७ हजार रुपयेका जवाहर ख्वाजा हिम्मत उसके घरपर दे आया.

बादशाहका फिर अजमेर जाना.

७ शाबान (भादोंसुदि ८ । ३ सितंबर) को बादशाहने थागियोंको सजा और तावेदारोंको आराम देनेके लिये कूच किया । उसी दिन बादशाहजादा मोहम्मदअकबर अजमेरमें पहिले पहुंचनेके लिये कपवे पालमसे रुखसत हुआ खासा खिलअत बालाबंद समेत और ७ घोडे उसे इनायत हुए जो लोग उसके साथ तईनात हुए थे उन सब पर भी इनायतें हुईं. एतमादखां बुरहानुद्दीन दिल्लीकी दीवानीपर मीरहिदायतुल्लाह बखशीगरी और शकिआनवीसी, अफलातून किल्लेदारीपर अबदुल्लाह चउपी बयूतानी, अबदुल्वहाब काजीका बेटा नूरुलहक काजी और उसी काजीका जमाई सैयद अबू सईद अदालतकी दारोगागिरीपर और ऐसेही दूसरे मुत्सद्दी वहांके और कामोंपर रुखसत हुए.

---

१ कल्कत्तेकी प्रतिमें राजसिंह बहुतसे आदमियोंसे. जोधपुरकी ख्यातमें लिखा है कि जब दिल्लीको लडाईकी खबर जोधपुरमें पहुंची तो बादशाही हाकिम और अहलकार कुछ तो भागगये और बाकी राठोड सोनंग चांपाकी शरण लेकर नागोरको रवाने हुए मुल्कमें गदर मचगया राठोड जगह २ लडनेको उठ खडे हुए मेडते और सेवानेके बादशाही थानेदार और करोडी मारेगये वहां जो मसजिदें थीं मंदिरोंके बदले गिराईगई काजियों और मोलवियोंकी बुरी गति हुई. मेडतेमें मेडतिये और ऊदावत राठोड सरदार मिलकर पुष्करजीमें अजमेरके सूबेदार तहव्वरखांसे लडनेगये भादोंबदि ११ संवत् १७३६ को बहुतही घमसान लडाई हुई उसमें राजसिंह मेडतिया और कई चांपावत और ऊदावत सरदार मारेगये तहव्वरखां भागगया खेत राठौडोंके हाथ रहा वे लूटलेकर लौट आये और बादशाहसे आखीर दमतक लडनेकी ठानकर महाराजा जसवंतसिंहजीकी रानियोंको उनके मैकोंमें पहुंचा आये.

१३ भादोंसुदि १४ । ९ सितंबर) को शाहजादे मोहम्मदआजमके बदले-जानेसे अमीरुलउमरा बंगालेकी सूबेदारी पर और सफीखां आगरेकी सूबेदारीपर मुकर्रर हुए फरमान और खिलअत गुर्जबरदारोंके हाथ भेजेगये.

२० शाबान (आसोजवदि ७।१६ सितम्बर) को मेवातका फौजदार महो-तशामखां चलती सवारीमें आदाब बजालाया.

२९ (असोजसुदि १।२९ सितम्बर) को बादशाह जियारत और ९ हजार रुपये भेट करके आनासागर तलावपर जहांगीर बादशाहके महलोंमें उतरे.

२३ वां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (असोज सुदि ३।२७ सितम्बर) को २३ वां जलूसी सन् लगा इलाहाबादका सूबेदार हिम्मतखां आकर आदाब बजालाया.

१० (असोजसुदि १२।६ अकतूबर) को शाहजादा मोहम्मदअकबरकी खिदमतमें जानेके लिये खिलअत खासा और सोनेके साजका घोडा पाकर रुखसत हुआ। उसके हाथ पन्नेका सरपेच शाहजादेके वास्ते भी भेजा गया.

७ (असोजसुदि ९।३ अकतूबर) को शाहजादे मोहम्मद अजीमकी अर्जी और ४००मुहरें केसैरीसिंहकी लडकीसे लडका पैदाहोनेकी मुबारकमें बादशाहके नजर हुईं उस लडकेका मोहम्मदकरीम नाम रक्खागया.

९ (असोजसुदि ११।५ अकतूबर) को दिलेरखांकी अर्जी पहुंची कि मंगॅलपंडियेका किला सेवाके कबजेसे निकालियागया.

१ शव्वाल (कार्तिकसुदि ३।२७ अकतूबर) को ईदकी नमाज हुई.

सुजानसिंहको सैवांनेका किला फतह करनेकी शाबाशीका फरमान भेजागया.

अहमदाबादका सूबेदार हाफिजमोहम्मद अमीनखां आकर आदाब बजालाया उसपर और उसके साथियोंपर इनायतें हुईं.

फाखिरखां खिलअत पाकर दिल्लीको रुखसत हुआ.

तहव्वरखां खिलअत तरकश कमान और हाथी पाकर मांडल और दूसरे पर-गनोंके जब्त करनेको मुकर्रर हुआ. इन्दरसिंहने महमनकी, रघुनाथसिंहने

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें मोहम्मदआजम. २ कलकत्तेकी प्रतिमें कीरतसिंह.
३ कलकत्तेकी प्रतिमें अंगलवेडा. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें सेवा.

मनोना और अमानकी ओर मोकमसिंह मेडतियाने कसबेपुरकी थानेदारीके खिलअत पाये.

१ जीकाद (मार्गशिरसुदि २।२९ नवम्बर) को शाहजादे मोहम्मदअकबरकी अरजी और ९०० मुहरें लडका पैदा होनेकी मुबारकमें बादशाहके पास पहुंचीं लडकेका नेकोसियर नाम रक्खागया.

उदयपुर जाना।

७ जीकाद (मगसिरसुदि ९।१ दिसम्बर) को बादशाहने अजमेरसे उदय-पुरके रानाको सजा देनेकेलिये कूच किया। शाहजादे मोहम्मदअकबरने मेडतेसे गांव दोराईमें पहुंचकर मुलाजिमत की.

शाहजादे मोहम्मदआजमकी दौड।
७ रमजान सन २२ (असोजसुदि ९। ३ अक्तूबर) को बंगालेसे दरगाहतक.

यह दौड बादशाहके हुक्मसे रस्तेमें बहुतसी आफतोंके आडे होनेपर भी हुई थी। सहे आदमी जो साथ थे कहते थे कि आधीरातके पीछे पालकीमें सवार होते थे और आराम करते थे। "मुस्तफा काशी" लहरास्पबेग और कासिमबेग जैसे ३।४ आदमी बारी २ से अरदलीमें आते थे। तडकेकी नमाजसे २ पहर तक तो घोडेकी सवारी होती। उतरते वक्त अकसर २।३ आदमियोंसे जियादा साथ नहीं पहुंचते थे। वे भी कुछ फर्कसे एक दूसरेके पीछे आकर इकट्ठे होते थे। बुनगाह (डेरे तंबू) महलके खिदमतगारों कारखानों और मीरहादीको १ हजार सवारसे पटनेमें छोडा गया था कि पीछेसे आवे। पटनेसे बनारस तक ७ दिन जहांजेबबानूबेगमकी सवारी साथ थी फिर मीरखां और शाहकुलीखां बखशीको हुक्म हुआ कि वे हजार सवारोंके साथ बेगमको मंजिल २ लावें। जो शाहजादेसे २९ दिन पीछे पहुंची और शाहजादा बनारसमें छढाहोकर १२ दिन १ पहरमें २३ जीकाद (पौषबदि १०।१७ दिसम्बर) को वह बादशाहकी

१ कलकत्तेकी प्रतिमें स्ताना और मामा. २ मेवाडके इलाके थे और रानाराजसिंहसे विगाड होगया था. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें भी यही लिखा है, पर यह भूल है ७ रमजान सन् २३ (आसोजसुदि ९।३ अक्तूर) चाहिये.

खिदमतमें पहुंचा। उस दिन ७० कोसकी मंजिल हुई थी, १ दिन जबकि बेगारकी चारपाई पर सवार हुआ तो कासिमबेगसे फरमाया कि इसको तरकशका बोझ लगता है उसने अर्ज की कि मैं लेलूंगा फरमाया कि अपने तरकशको क्या करेगा उसने अर्जकी कि आपके तरकशको पीठसे बांधलूंगा फिर उसने ऐसा ही किया। ९०० सवार खुशअस्पा (अच्छे घोडेवाले) अरदलीमें थे बहुत लोग इनाममें घोडे पाकर खुश हुए.

१२ सवार ४ पैदल १ चोबदार १ जरीब खेंचनेवाला और २ घडियाली जो तमाम वक्त हाजिर रहते थे साथ पहुंचे थे.

एक दिन रस्ता चलतेहुए एक छतरीदार चारपाये (चोपाळ)-पर बादशाहजादे और शाहजादे बेदारबख्त दोनों बैठे थे। बेदारबख्तको प्यास लगी एक गांवके पास कुएंपर पहुंचे एक पानी भरनेवाला पानीका प्याला लाया शाहजादेने उसको २ अशरफियां इनायतकीं १ मौतका माराहुआ छुक्का देखता था उसने जाना कि कोई गुर्जबरदार बहुतसी अशरफियां लाया है इसलिये वह रस्तेमें खडा होगया और मजदूरोंको ललकारा कि आगे मत जाओ बादशाहजादेने कुछ खयाल नहीं किया मजदूर उसके मने करनेसे खडे होगये वह शोखदीदा मौतका मारा शाहजादे पर झपटा। शाहजादेने तरकशसे १ तीर खेंचकर उस पर छोडा जो उसकी छातीमें ऐसा बैठा कि वह फिर न उठा और मजदूर रस्ते लगे। सवारीके पीछे जो सिपाही परछाई की तरहसे दौडते चले-आते थे उनमेंसे सुहराबबेगने उसकी लाश पर पहुंचकर तीरको पहिचाना कि यह उस आदमीका है कि जिस पर हजारों जानें कुरबान हैं उसने उस आदमीका सिर काटकर तीर भी छातीसे निकाला और दौडकर बादशाहजादेके नजर किया और एक बेत फारसी की पढी-जिसका यह मतलब है कि तेरे चलते हुए हुक्मकी धाक भी उसी तरहसे दुनियाके चारों हिस्सोंमें पहुंचे जैसे कि यह तीर दुश्मनकी छातीमें जा घुसा है।

तबसे शाहजादेने फरमाया कि कई तरह दोअन्नी चौअन्नी चांदी सोनेकी, टके और कौडियां भी जेबमें रखाकरें. सच है, हरेक कामके लिये एक चीज और हरेक खर्चके लिये एक नकदी बनाईगई है.

अकसर मंजिलोंमें शाहआलमबहादुरकी जागीरके आमिल (तहसीलदार) और दूसरे मरदार घोडे ऊंट और खबर मोल देकर लाते थे हलवान बकरे और मुरगे भी नजर करते थे मगर इस मुद्दतमें किसी वक्त पकाहुआ खाना नहीं मिला था मगर एक दिन काजी बाबूंरके घरकी सूखी रोटी और सूखे मेवे पर गुजरा था। एक दिन बेदारबख्तके मुहसे खिचडीका नाम निकलगया। साथ वाले मरायमें गये और खिचडी पकाकर एक बरते हुए लकडीके कटहरेमें लाये। बादशाहजादेने देखकर बेटेको खानेका इशारा किया। वह भौंचका रहगया और नहीं खाया। शाहजादेने तसली देकर कहा कि जो खुदाने चाहा तो २। ३ दिनमें हजरतके जूठनकी नियामत मिलीजाती है।

२४ (पौषवदि ११। १९ दिसम्बर) को शाहजादे बेदारबखतको ८ हजारी ३ हजार सवारका मनसब इनायत हुआ.

आबिदखांको गैरहाजिरीमें ही चीनकुलीचखांका खिताब मिला.

११ जिलहज्ज (पौषसुदि १४। ४ जनवरी) को मांडलसे कूच हुआ और अर्ज हुई कि रानाके आदमी दहबारीके घाटेसे उठगये हैं। हाफिज मोहम्मद अमीनखांने अर्ज की कि मेरे आदमी पहाड पर चढे थे घाटेके उधर उनको कोई नहीं दिखाई दिया राना उदयपुर खाली करके भागगया है.

१२ जिलहज्ज (पौषसुदि १५। ५ जनवरी) को बादशाहके डेरे उस घाटेमें हुए हुसेनअलीखांको काफिर (राना) के पीछे जानेका हुक्म हुआ.

शाहजादे मोहम्मदआजम और खानजहां बहादुरको उदयपुर देखनेकी इजाजत हुई। रुहुल्लाहखां और इक्कतादखां एक बडे मंदिरके गिरानेके लिये गये जो रानाकी हवेलीके आगे बहुत अनोखा बनाहुआ था २० माचा तोड रजपूत जो मंदिरमें मरनेके वास्ते बैठे थे एक उनमेंसे सामने आता था और कई आदमियोंको मारकर आप भी माराजाता था फिर दूसरा आता था इसतरह उन बीसोंने बहुतसे बंदों और चेलोंको बहिश्तमें पहुंचाया और आप भी मारेगये। जब मंदिर खालीहुआ तो बेलदारों और तबरमारनेवालोंने मूर्तियोंको तोडा.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें बाबहोर. २ कलकत्तेकी प्रतिमें १५ जिलहज्ज (माघवदि १। ८ जनवरी.) ३ कलकत्तेकी प्रतिमें हसनअलीखां.

मीरशहाबुद्दीनका नसीबा चमकनेवाला था और जमाना उसके वास्ते शोर्शा छोडनेको था एक रात वह चौकीदारोंके साथ दौलतखानेके पहरोंमें फिर रहा था। बादशाहने हजूरमें बुलाकर फरमाया कि कितने दिनसे हुसेनअलीखां काफिरके पीछे घाटेमें गया है और कोई खबर नहीं पहुंची है। तू जा और खबर ला। वह उस पराये मुल्कका हाल और रस्तोंकी उंचाई निचाई और दूरीको नहीं जानता था और लुटेरोंका डर अलग था तो भी फौरन उन्हीं चौकीदारोंके साथ चलदिया। जमानेने अगवा होकर उसको हुसेनअलीखांके लशकरमें पहुंचादिया वह वहांसे खबर और अरजी लेकर उसी रस्तेसे २ दिन पीछे रातको हजूर में पहुंचा और बखशियोंके वसीले बिना प्रमाराही २ सदी इजाफेका सलाम करके ७ सदी होगया। खांका खिताब हाथी कमान और खासा तरकश पाकर हुसेनअलीखांके पास हुक्म पहुंचानेके लिये रुखसत हुआ। उसके आगे बढनेकी इब्तदा (आरंभ) यही थी फिर जो और तरक्की भागवलसे हुई। वह बहुतमेंसे थोडीसी मौकेमौकेपर लिखीजावेगी.

सरबुलंदखां मीरबखशी एक लंबी बीमारीके बाद ४ जिलहज्ज (पौषसुदि ६। २८ दिसंबर) को मरगया बडे अमीरोंमेंसे वह अच्छा अमीर था। ऐसे बडेके उठजानेसे बादशाहको उदासी हुई.

२४ जिलहज्ज (माघबदि ११। १७ जनवरी) को हिम्मतखांने इलाहाबाद लौटजानेकी रुखसत पाई.

शाहजादा मोहम्मदअकबर ४० हजार रुपयेके लालोंका सरपेच पाकर उदयपुरको रुखसत हुआ.

रानाका पीछा करने और सजा देनेके वास्ते एक फौज हुसेनअलीखांकी सरदारीमें बहुतसे साज और सामानसे बिदा हुई। उसके साथियोंको खिलअत मिले। शेखरजीउद्दीन जो उनमें मुख्य था और इस मुहिममें बहादुरी दिखाचुका था खानका खिताब पाकर निहाल हुआ.

सरबुलंदखांके मरनेसे रुहुल्लाहखांने मीरबखशीगरीका सलाम किया। उसकी जगह सलावतखां तोपखानेका और साळहखां सलावतकी जगह फीलखानेका दरोगा हुआ.

---

१ जुठकला. २ कलकत्तेकी प्रतिमें हसनअलीखां। पेज १८७. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें गुसलखाना.

तहव्वरखांको बादशाह कुलीखांका खिताब मिला. लाहोरके अखबारसे बादशाहको अर्जहुई कि वहांका काज़ी सैयद अलीअकबर अपनी धाक और ईमानदारीके भरोसे पर किसीसे नहीं रुकता था मगर उसका भानजा सैयद फ़ाज़िल उसका कहना छोडकर बेवकूफ़ीसे जुल्म करता था। नाज़िम और कोटवाल उसके हाथ और ज़बानसे तंग आगये थे। आखिर उसकी जानके पीछे पडे। काज़ी भी उसी गड़बड़में मीर कवामुद्दीनखां नाज़िमके हुक्मसे बडी बेइज़्ज़तीके साथ मारागया। इस पर नाज़िम और निज़ामुद्दीन कोटवाल मनसब और ओहदेसे उतार दियेगये। निज़ामुद्दीन तो लाहोरमें मरवा दियागया और कवामुद्दीनखांको हज़ूरमें बुलाया गया उसके मोकूफ़ होनेसे बादशाहज़ादा मोहम्मदमुअज्जम पंजाबका नाज़िम हुआ। उसको तुर्रा जडाऊ मुक्का मिला लुत्फुल्लाहखां उसका नायब हुआ उसकी जगह अबूनसरखांने अर्ज मुकर्ररकी खिदमत पाई.

कवामुद्दीनखां हज़ूरमें अजमेर पहुंचकर शरीअतके महकमेमें खराब होता फिरता था। आखिर अलीअकबरके बेटेने दरबारके भले आदमियोंकी सिफ़ारिशसे उसके बुढापेपर रहम करके बापके खूनका दावा छोडदिया और वह कवामुद्दीनखां भी उन्हीं दिनोंमें अपनी खराब हालत पर कुढकुढकर मरगया.

सन् १०९१.

२ मोहर्रम (माघसुदि ४।२५ जनवरी) को बादशाह रानाके बनाये हुए उदयसागर तलावको देखने गये और पाल परके तीनों मंदिरोंके गिरादेनेका हुक्म देआये.

बादशाहसे अर्जहुई कि हुसेनअलीखां २९ जिलहज्ज (माघसुदि १।२२ जनवरी) को घाटेसे निकलकर राना पर दौडा था। वह डेरा और असबाब छोडकर निकलगया। इस सफ़रमें बहुतसा अनाज लशकरियोंके हाथ आया भाव सस्ता होगया.

७ मोहर्रम (माघसुदि ९।३० जनवरी) को हुसैनअलीखां रानाके डेरे वगैरासे २० ऊंट भरकर हज़ूरमें लाया। अर्ज की कि रानाकी हवेलीके आगेका

१. खफ़ीखांने यह वृत्तांत सन् १०८२ में महाराजा जसवंतसिंहके मरनेसे पहिले लिखा है उसके और मासिरआलमगीरीके लिखेहुए कई वृत्तांत आगे पीछे हैं.

२ कलकत्तेकी प्रतिमें हसनअलीखां.

मंदिर और १७२ दूसरे मंदिर उदयपुरके जिलेमें गिराये गये इसपर उसको बहादुर आलमगीरशाहीका खिताब मिला.

९ मोहर्रम (माघसुदि १२।१ फरवरी) को खानजहां बहादुर खिलअत जडाऊ खंजर और सोनेके साजका घोडा पाकर मंदसोरकी तरफ रुखसत हुआ.

१ सफर (फाल्गुनसुदि २ । २२ फरवरी) को दीमदारबादशाह चित्तौड देखनेको गये। वहां ६३ मंदिर गिरायेगये.

५ सफर (फाल्गुनसुदि ७।२६ फरवरी) को खानजहां बहादुरने बहादुरगढसे चित्तौडमें आकर मुलाजिमत की। बादशाहने अपने बदनसे नीमास्तीन उतारकर उसको पहनाई.

७ सफर (फाल्गुन सुदि ९।२८ फरवरी) को हाफिजमोहम्मदअमीनखां नाजिम अहमदाबाद हाथी घोडा और खिलअत पाकर रुखसत हुआ.

९ सफर (फाल्गुनसुदि ११ । १ मार्च) को खानजहां बहादुर जफरजंग कोकलताश बडे शाहजादेके वकीलोंके बदले जानेसे दस्खतके सूबोंके बंदोबस्त पर खिलअत जडाऊ जमधर हाथी और घोडा पाकर रुखसत हुआ.

अदालतके दरोगा शेखसुलेमानको फजायलखांका खिताब मिला.

१२ सफर (फाल्गुन सुदि १४।४ मार्च) को शाहजादामोहम्मदअकबर एक सजीहुई फौजसे चित्तौडके जिलेकी रखवाली पर रखागया। खिलअत खासा मोतियोंकी माला जडाऊ जीगा घोडा और हाथी उसको मिला. हुसैनअलीखां शुजाअतखां और रजीउद्दीनखां वगैरा भी खिलअत पाकर शाहजादेके साथ रुखसत हुए.

हकीमशमसा जो आदिलखां बीजापुरीकी बेटीके साथ दरगाहमें आया था खिलअत खासा सोनेके साजका घोडा हाथी ३ हजारी ३ हजार सवारका मनसब और शमशुद्दीनखांका खिताब पाकर खानजहांके पास तईनात हुआ.

अजमेरको लौटना।

१४ सफर (चैतबदि १ । ६ मार्च) को उदयपुरसे अजमेरको कूच हुआ। अबदुल्लाहखां जो बरतरफहोकर लाहौरना पाताथा। २ हजारी हजार

१ कलकत्तेकी प्रतिमें लश्कर बेग १८९. २ कलकत्तेकी प्रतिमें कोकलतासखां. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें हसनअलीखां.

सवारका मनसब पाकर अबदुल्रसूलखांके बदलेजानेसे आगरेकी किल्लेदारी पर मुकर्रर हुआ.

तुर्कताज़खांने बदनपुरके बल्वाइयोंको सजादेनेके वास्ते जानेका खिल्अत हाथी समेत पाया.

२४ सफर (चैत्रवदि ११ । १६ मार्च) को यलंगतोशखां बहादुरके वास्ते टाने खास लौंडी औरंगाबादी महलके जो बादशाहजादी जेबुलनिसा बेगमके साथ हजूरमें बुलाईगई थी रुखसत हुई.

अबुलफतह ठठ्ठेवी कदीमी, बादशाहीका भाई फाजिलखां मीरजुमली पुराना खिदमतगार और मरजीदान होनेसे बादशाहके चित चढ़कर पास रहनेलगा। मगर फिर कमअकलीसे कई कसूर करबैठा जिस पर हजारी ७० सवारका मनसब और ठट्ठेका कानूनगोईसे अपने जमाई अबदुल्बासे समेत मोकूफ होगया और उसकी दरखास्त पर दिल्लीमें जानेका हुक्म हुआ फोलादखांको लिखागया कि जब वहां पहुंचे तो उसका घर कुरक करले इस तौर पर जब वह घरसे निकले तो अपने घोड़े पर बैठाकर उसे शहरसे निकालदे। उसने ऐसाही किया। ढाई वर्ष बादशाहके पास रहनेसेही इतना कमालिया था कि १२ लाख रुपये नकद नई बनाई हुई हवेलीके सिवाय जमाहुआ और वह लाहोरमें पहुंचकर मरगया। उसकी जगह फजाईलखां डाकचौकीका दरोगा हुआ। शाहजादे मोहम्मदआजमके मुनशी शेखमखदूम ठठ्ठवीको बादशाही मुनशीगरीका ओहदा पांचसदी १०० सवारका मनसब सादाकार जमधर २ हजार रुपये नकद मिले दसदस चीरे पटके जामेवार और कमखावके कपडे भी उसे इनायत हुए। तबसे बढ़ते २ डेढ हजारी मनसब और फाजिलखांका खिताब पाकर अखीरमें सदारतके ऊंचे दरजेको पहुंचकर मरगया.

शेखमखदूमकी जगह शेखअबदुलसमद जाफरखानीका बेटा शेखअबदुलवली शाहजादेके पास मुकर्रर हुआ.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें रनथंभोर और हाशियेमें बदनोर (बदनोर) बदनोर ही सही मालूम होता है क्योंकि यह मेवाड़का १ परगना है. २ ठठ्ठेका रहनेवाला.

३ कलकत्तेकी प्रतिमें हवेली और माल असबाबके सिवाय.

१ रबीउलअव्वल (चैतसुदि २।२२ मार्च) को बादशाह अजमेर पहुंचकर पहिले तो पैदल जियारत करनेको गये और फिर दौलतखानेमें दाखिल हुए.

ताहिरखां का बेटा मुगलखां दक्खनसे आकर अव्वल मीरतुजक हुआ.

सआदतखां एक कसूरमें मनसबसे दूर किया गया उसकी जगह बहरेमंदखां आखताबेगी हुआ.

बाकीखांके बेटे हयातबेगको खांका ख्वाजाकमालको खंजरखांका मिरजाखानके बेटे अब्दुलवाहिदको मीरखांका खिताब, इनायत हुए.

होशदारखांके बेटे कामगारखांने जो मनसबसे बरतरफ होगया था जमधरके ४ जखम अपने पेटमें मारलिये। बादशाहकी महरबानीसे वह अच्छा होगया.

१० रबीउलअव्वल (चैतसुदि १२।३१ मार्च)को १ दीवाने तालिबइल्म (विद्यार्थी) ने वारिसखां अखबारपढनेवालेको जिसने बादशाहनामेकी तीसरी जिल्द तैयारकी थी चाकूसे मारडाला। खान उस दीवानेकी बहुत संभाल रखता था और लोगोंकी छेडसे बचानेके लिये रातोंको उसका बिछौना अपने पास डलवाता था.

११ रबीउलअव्वल (चैतसुदि १३। १ अप्रेल) को शाहआलमबहादुरकी अरजी पहुंची कि बीजापुरमें हजरतके नामका सिक्का और खुतबा जारी होगया है दरबारियोंने मुबारकबाद दी.

१६ रबीउलसानी (जेठबदि ३ । ६ मई) को बादशाहजादा मोहम्मद आजम हुक्मसे एक मंजिल आगे जाकर अपनी बहनको खास लौंडी औरंगाबादी महल समेत हरमसरामें लाया.

बलखके खान सुबहानकुलीखांके अतालीक नजरबेगका दरगाहमें आना सुनकर बादशाहने हुक्म दिया कि ५ हजार रुपये काबुलके और इतनेही लाहोरके खजानेसे उसको देवें.

बलखके वकील कलंदरबेगने मुलाजिमत की खिलअत खजर और १ हजार रुपया नकद उसे इनायत हुआ.

१ कलकत्तेकी प्रतिमें १५ रबीउलअव्वल (वैशाखबदि १।३। ५ अप्रेल.)
२ महल.

मीरमुर्गासके बदलेजानेसे हाजी शफीअखां वंगालेका दीवान हुआ और उसकी जगह शरीफखां दोग और तसहीहका दरोगा हुआ.

हामिदखां सोजत और जेतारणके सरकशोंको सजादेनेके लिये भेजागया.

मोहम्मदमीरक गुर्जवरदारको मोहम्मदमीरकखांका खिताब मिला.

शुजाअतखांके बदलेजानेसे इफ्तखारखांने जौनपुरकी फौजदारी पाई.

मुलतिफितखां जो बरतरफ होगया था हजारी हजार सवारका मनसब पाकर गाजीपुर जमनियांकी फौजदारीपर गया.

१ जमादिउलअव्वल (जेठसुदि ३ । २० मई) को तोपखानेका दरोगा बहरेमंदखां तालाव (आनासागर) के उधर अपने डेरेमें एक पेडके नीचे बैठा था उसपर बिजली गिरी मगर वह कूदकर हौजमें जा पडा और कई घडी बेहोश रहकर संभलगया.

२१ (अषाढवदि ७ ।८९ जून) को अर्ज हुई कि खानजहांबहादुरने औरंगाबादमें पहुंचकर शाहआलमबहादुरकी मुलाजिमत की और शाहआलम बहादुर चौखट चूमनेको रवाने होगया.

२६ जमादिउलअव्वल (आपाढवदि १३। १४ जून) को शाहजादा मोहम्मदआजम और सुल्तान बेदारबख्त बहुतसा इनाम इकराम पाकर रानाकी मोहिमपर गये.

नजरबेगको उजबेकखांका खिताब और २ हजारी ७०० सवारका मनसब उसे इनायत हुआ.

मोहम्मदअमीनको शाहकुलीखां और हाजीमोहम्मदको मीरखांका खिताब मिला.

७ जमादिउलआखिर (अषाढसुदि ८।२४ जून) को बादशाहजादा मोहम्मदआजम चीतौडमें पहुंचा और शाहजादा मोहम्मदअकबर चलती सवारीमें उससे मिलकर चीतौडसे सोजत और जेतारणको रवाने होगया.

---

१ । २ घोडोंके दाग देने और उसकी जांच करनेकी कचहरी. ३ हुक्म नहीं माननेवाले और ये राठोड थे. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें आनासागर. ५ कलकत्तेकी प्रतिमें औरंगखां (मगर उजबकखां सही मालूम होताहै क्योंकि वह उजबक जातिका था.)

दक्खिनके अखबारसे अर्जहुई कि सेवाने २४ रबीउलआखिर (जेठवदि ११। १४ मई) को सवारीसे उतरकर गरमीके मारे दो बार खूनकी उल्टी की और मरगया.

अबूतुराब जो आंबेरके मंदिरोंको गिराने गया था २४ रजब (भादोंवदि ११।१० अगस्त) को हुजूरमें पहुंचा उसने ६६ मंदिरें खराब किये.

१० शाबान (भादोंसुदि ११।२९ अगस्त) को ग्वालियरका किलेदार ख्वाजामोतमरखां जिंदगीकी कैदसे छूटगया.

इति औरंगजेबनामा नवमखण्ड समाप्त ॥

दशम खण्ड

२४ वां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (आसोजसुदि ३।१९ सितम्बर) को २४ वाँ जलूसी वर्ष लगा बादशाहने रात दिन इबादतसे काम रखा.

खिदमतगारखां चीतौडकी बखशीगरी और अखबार नवीसीपर गया.

११ रमजान (आसोजसुदि १२। २९ सितम्बर) को इकातारखां मरागया। मीरअब्दुल्लाह, मीरनूरुल्लाह और मीरअताउल्लाह उसके बेटोंने मातमीके खिलअत पाये.

आकिलखां दोयमबख्शी खासा खिलअत और जडाऊ खंजर मोतियोंकी लडीको पाकर दिल्लीकी निजामत (सूबेदारी) पर गया.

१ शव्वाल (कार्तिकसुदि ४। १६ अक्टूबर) को गजनफरखां ४०० सवारों और मोहम्मदशरीफखां करावलोंके साथ अजमेरसे राजसमंदर तालाब तक मंजिलें मुकर्रर कर आनेके लिये रुखसत हुए.

१० शव्वाल (कार्तिकसुदि १२।२४ अक्टूबर) को हिम्मतखां अव्वलबखशी हुआ खिलअत और जरीका दुपट्टा उसके घर भेजागया.

---

१ फलकत्तेकी प्रतिमें २४रजब. २ जोधपुर और उदयपुरके मंदिर तो वहां लडाई होनेसे [illegible] गये थे पर आमेरवाले तो तावेदार हो थे फिर भी उनके यहांके मन्दिर नहीं बचे और मालूम होताहै कि वहां किसीने मंदिरोंके वास्ते मुकाबिला भी नहीं किया.

इसी दिन मोतमिदखांका माळअसबाब सिवाय जवाहर और जानवरोंके साढे बाराळाख रुपयेका गवाळियरसे हुजूरमें पहुंचा.

२१ (मार्गसिरवदि १३।९ नवम्बर) को हामिदखां फसादी राठौडोंको सजा देनेके लिये मेडतेको रवाने हुआ. उसके साथियोंमेंसे शहाबुद्दीनखांको खिलअत इयनी और दूसरोंको खिलअत मिले.

रुहुल्लाहखां दोयम (दूसरे दरजेका) बखशी हुआ और १ जीकाद (मार्गसिरसुदि २।१३ नवम्बर) को खिलअत हाथी घोडा और झंडा पाकर शाहजादे मोहम्मदअकबरके पास रुखसत हुआ मुगलखां सांभर और डीडवानेके फसादियोंको सजा देनेके लिये गया.

इसलामखां रूमीके बेटे मुखतारबेगको नवाजिशखांका खिताब और खिलअत मिला और मेहरबानीसे उसे हिंदुस्तानी लिबास पहिनाया गया.

१८ जीकाद (पौषवदि ५।३० नवम्बर) को मोहम्मद नईम बादशाहजादेके बारकी बखशीगरी पाकर शाहजादे मोहम्मदअकबरके पास गया.

किवामुद्दीनके बेटे सदरुद्दीनको वाप्की मातमीका खिलअत मिला.

उदितसिंह भदोरिया चित्तौडका किलेदार हुआ.

सैयदखांके मरजानेसे शहामतखांको काबुलकी किलेदारीका फरमान भेजागया.

६ जिलहज्ज (पौषसुदि ७।८।१८ दिसम्बरको) लुतफुल्लाहखां लाहोरसे हुजूरमें पहुंचा और अब्दुर्रहमानके बदलेजानेसे गुसलखानेका दरोगा हुआ.

अब्दुर्रहीमको तीसरी बखशीगरी और यद्यमकी दवात इनायत हुई उसकी जगह सजावारखां आखताबेगी हुआ.

काजीआरिफके बेटे सैयदअबुलकासिम तीसरे बखशीके पेशदस्तको शाल इनायत हुआ.

राजसिंह और पृथ्वीसिंह राठोडोंको खिलअत और दो दो हजार रुपये मिले.

आगजखांको काबुलकी राहदारी और नकारा इनायत हुआ.

---

१ यह भी राठाड ही थे. २ कलकत्तेकी प्रतिमें यह बात या लिखी है कि १८ जीकादको बादशाहजादे मोहम्मदकामबखश की सरकारका बखशी मोहम्मदनईम उसकी सरकारकी जमइयतके साथ उससे खिलअत, पा[illegible] मोहम्मद अकबर की खिदमतमें गया. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें अबदुलरहीम.

खिलअत और सोनेके साजका घोडा शहाबुद्दीनखांको कुलीचखांके पास भेजनेके लिये सौंपा गया.

दयानतखांका बेटा देवअफगान मोतमिदखांका खिताब पाकर शरीफखांके बदलेजानेसे दाग और तसहीहेका दरोगा हुआ मुल्तानबंदारबख्तने कुरान याद करके मोतियोंकी माला याकूतके लटकन समेत पाई.

शाहजादे मोहम्मदअकबरका बागी होना।

२१ जिल्हज्ज (माहबदि १३। ७ जनवरी) को हरकारों, नाजर, मंजूर और दूसरे खबरदार लोगोंकी अरजियोंसे बादशाहको अर्ज हुई कि शाहजाद मोहम्मदअकबर अकलमन्द होनेपर भी राठौडों और बाजे नमकहराम खानेजादोंके बहकानेसे बागी होगया है और बादशाही नौकरोंमेंसे जो उसके शामिल हुआ उसे तो उसने इजाफा और खिताब दिया है और जिसे फिरा हुआ देखा उसे पकड लिया है.

बादशाहने इसतरह बेटेके बदलेजानेसे बहुत रञ्ज और फिकर करके बन्दोबस्तके लिये बहरेमंदखां मीरआतिशको हुक्म दिया कि लश्करके गिर्द मोरचे बनावें घाटियोंको रोकनेके लिये आदमी भेजदें। और दौलतखानेके पास जो घाटियां हैं उनपर तोपें चढादें अहमदाबादके नाजिम हाफिज मोहम्मदअमीनखां और दूसरे अमीरोंके नाम हुक्म पहुंचा कि, अपनी २ हदोंमें खबरदारीके साथ जमे रहें.

उसवक्त लश्कर तो सब सरकशों और बागियोंके ऊपर गयेहुए थे और बादशाहके पास जो असलेके आदमी थे वे २ हजारसे जियादा नहीं थे[1]

१ महाराजा जसवंतसिंहकी तर्फके रंजका जो फोडा बादशाहके दिलमें फूटा था उसके विषका दूसरा प्रभाव यह अकबरके बागी होजानेका था राठौडोंने जब देखा कि, बादशाह उनका पीछा छोडताही नहीं है और सख्तीपर सख्ती किये जाता है तो उन्होंने अपने बचावके लिये यह दावँ खेला कि बेटेको बापसे बागी करके आपसमें लडा देनेका ढंग डाला और बेटेके बापसे बदलकर मरने मारनेको तैयार होजानेकी रीति बादशाहोंमें पीढियोंसे चली ही आती थी इसलिये अकबर भी बादशाहीके लालचसे उनके कहनेमें आगया है और बादशाहमी मारवाड और मेवाडके फतह करनेकी सट्टी पट्टी भूलकर अपनी जानकी ही फिकरमें पडगये. २ कलकत्तेकी प्रतिमें १० हजार.

इससे बादशाह अकसर कहा करते थे कि बहादुरने वक्त तो खूब पाया है देर क्यों कर रहा है.

२९ (माघसुदि १ । १० जनवरी) को बादशाहने शिकारके वास्ते सवारी करके जाते और आतेहुए अकसर सरदारों अमीरोंके मोहल्ले और जुबदतुलमुल्क असदखां वगैरहके मोरचे देखते आये. असदखांको हुक्म हुआ कि, हर रोज शामको मोरचे देख लिया करे, फिर यह हुक्म जारी किया कि, शाहजादेके वकील और निजाबतखांके बेटे शुजाअतखां तथा इनायतखांके जमाई बादशाह कुलीखांके वकीलोंको चौकीके किलेमें कैद रक्खें क्योंकि, यही शाहजादेको बहकानेवाले हैं.

कुलीचखांका बेटा शहाबुद्दीनखां सोनक और दुर्गादास वगैरह राठौडोंको सजा देनेके लिये जो गुजरातपर जानेका इरादा रखते थे, सिरोहीकी तरफ गया था मगर अब जो ये सब लोग शाहजादेके पास पहुंचकर उसके गुमराह करनेमें अगुआ बने थे इसलिये शाहजादेने मीरकखांको शहाबुद्दीनखांके पास भेजकर उसे अपनी मेहरबानियोंका लालच दिलाया और मददके वास्ते बुलाया खानके पास लश्कर भी बहुत था और शाहजादेसे दूर भी था इसलिये समझदारीसे २ दिनमें ६० कोस चलकर बादशाहके पास आगया और मीरकखांको भी साथ ले आया बादशाहने शाबाशी दी उसके साथ दो सदीतक जो मनसबदार थे उन सबको भी सत्कार करना नसीब होगया और शहाबुद्दीनखांका पीछेसे बहुत दरजा बढा.

मीरकखां अपना डेरा और असबाब शाहजादेके लश्करमें छोड आया था इसलिये खिलअत १० हजार रुपया नकद २ सदी ५० सवारका इजाफा उसको मिला.

शहाबुद्दीनखांके भाई मोहम्मदआरिफने भी खिल्अत और इजाफा पाया कम और जियादा मनसबके जो लोग थे उनको भी इजाफे और खिल्अत इनायत हुए.

३० (माघसुदि २ । ११ जनवरी) को बादशाहने शिकारके वास्ते सवार होकर फिर मोरचों और लश्करको देखा.

हामिदखां जो खास चौकीके बंदोंके साथ दुर्जनसिंहको सजा देनेके लिये गया था, दौडाहुआ आया, और चलती सवारीमें आदाब बजा लाया उसकी बंदगी और खैरख्वाही और बढी.

---

१ फलकत्तेकी प्रतिमें २ हजार.

सन् १०९२ हि०.

२ मोहर्रम (माघसुदि ४ । १३ जनवरी) को शाहआलमबहादुरकी अरजी रानाके तालाव तक पहुंचने और जल्दीसे दरगाहमें हाजिर होनेकी आई.

असदखां, मोहम्मदअलीखां, अबूनसरखां वगैरह पहुंचकर तलाव तक गिरदावरी करके आगये.

हिम्मतखां जो बहुत बीमार था अजमेरके किलेमें छोडा गया.

३ मोहर्रम (माघसुदि ५ । १४ जनवरी) को बादशाह जुमे की नमाज और फातिहा ख्वाजामुईनुद्दीनकी दरगाहमें पढकर अजमेरसे निकले और गांव दोराईमें जहां डेरे लगाये गये थे दाखिल हुए शहाबुद्दीनखांने (जो किरावली (गिरदावली) को गया था) अरजी भेजी कि बागियोंकी फौज कुडकीम है इसलिये रातको वहीं रहा, नहीं आया.

बडे वखशियोंने मोहम्मद अकबरके पास १६ हजार सवारोंकी जमइयत मौजूद होनेकी अर्जकी, गोलहिरावल और किरावल १० हजार दायें, बायें ६ हजार जासूस खबर लाये कि शाहजादा मुकाबिलेके वास्ते बढता चला आता है मगर उसके अकसर लश्करी डरे हुए हैं और काबू मिलनेपर भाग जाते हैं कमालुद्दीनखां और दूसरे लोग आकर उर्दूमुअल्ला (बादशाही लश्कर) के शामिल होगये.

५ मोहर्रम (माघसुदि ७।१६ जनवरी) को बादशाहने तडके ही नमाज पढनेके पीछे बागियोंको सजा देनेके लिये सवारी की और ३९ जरीब चलकर गांव दुबारेमें उतरे मगर लश्करसे बहुत दूर शामियाने और कनातमें ठहरे दुश्मनोंके आनेकी खबरें दमदम पर चली आती थीं और हुक्म होता था कि आगे मत बढो आने दो तीसरे पहरको शाहआलम बहादुर आया दोराईमें जो डेरा था वह बादशाहके हुक्मसे लाकर बादशाहके रहनेके लायक लगाया गया, एक पहर २ घडी रात गये जब कि बादशाह नमाज पढ रहे थे और शाहआलम बहादुर

१ संवत् १७३७ के पंचांगमें भी माघसुदि५ जुमा अर्थात् शुक्रवारको ही लिखीहै.
२ स्वस्तिवाचन. ३ मारवाडका १ गांव-परगने मेडतेमें जोधपुरसे कई कोस है.
४ चार हरकारे, सेलू.

हाजिर था, अर्ज हुई कि बादशाह कुलीखां मोहम्मदअकबरके लश्करसे आकर खासो आमके दरवाजेपर पहुंचा है, गुसलखानेके दरोगा लुतुफुल्लाहखांको हुक्म हुआ कि, बगैर हथियारके ले आ मगर उस मौतके मारेहुएने जिसका इरादा भी कुछ बुरा ही था गुसलखानेकी डयोढीमें पहुंच कर हथियार खोलने पर बहुत झगडा किया, लुतुफुल्लाहखांने जाकर अर्जकी कि, वह कहता है कि, खानाजाद हूं बगैर हथियारके कभी नहीं आया हूँ, फरमाया कि, अच्छा हथियार बांधे आवे लुतुफुल्लाहखां जबतक लौटे वह तो मारे डरके भागने लगा था. मगर नमक हरामीने उसका पाँव पकड लिया ज्योंही चेले और खास जिलौके बंदे उस पर टूट पडे, वह कई चिलते और बकतर पहिनेहुए था इसलिये जखम कारगर कम हुए आखिर एकने उसका गला काटकर पाप काट दिया.

इसी दिन यह भी अर्ज हुई कि अव्वलबखशी हिम्मतखां जो कदीमी बालाशाहीं इसलामखां बहादुरका बेटा था मरगया यह अच्छा आदमी और सबका अच्छा चाहने वाला था हर इलम और हुनरके आदमी उसकी मजलिसमें जाते और अपनी मुरादें पाते थे बाप बेटे दोनों शाइर थ अपनी शाइरीकी निशानियाँ दुनियामें छोड गये.

---

१ असली नाम तहव्वुरखां यही शफीखांने लिखा है और यही जोधपुरकी तवारीखमें भी आता है. राठौड तहव्वुरखांके बचनसे ही अकबरके पास गये थे उसने कहा था कि जो मुझे तखत पर बैठा दोगे तो मैं महाराजा अजीतसिंहको जोधपुर देदूंगा अकबरके पास जो बादशाही अमीर थे वे सब उससे मिलगये थे, तहव्वुरखां कारतम करता था जब अकबर बापके ऊपर चढकर गया तो बादशाह ने तहव्वुरखांके सुसरे इनायतखांसे तहव्वुरखांके जोरू, बच्चोंके मार डालनेका हुक्म दिया उसने बादशाहको राजी करके तहव्वुरखांके बुलानेका फरमान भेजा जिसपर बादशाहकी हथेलीका छापा था तहव्वुरखांने फरमानके पहुंचते ही राठौडोंको कहला दिया कि, अब मेरे तुम्हारे बीचमें बचन नहीं है, और बादशाहके पास गया मगर बादशाहने अपने बचनसे फिरकर उसको मरवा डाला उस वक्त अकबरके डेरे १॥ कोस पर अजमेरसे थे राठौड तहव्वुरखांके मारे जानेकी खबर सुनकर अकबरके डेरे पर गये तो वह सोया हुआ था किसीने उसको खबर भी इनके आनेकी नहीं दी तब यह दगा समझकर कि कहीं बाप बेटे एक होकर हमें न मारडालें मारवाडको चल दिये पीछेसे अकबर भी भागकर इनके पास आगया. (तवारीख जोधपुर.)

६ मोहर्रम (माघसुदि ८।१७ जनवरी) को दिन निकलनेसे पहिले बादशाहके कानमें यह खुश ख़बरी पहुंची कि, मोहम्मद अकबर जो बादशाही लश्करसे १॥ कोस पर ठहरा हुआ था आधी रातको ही बाल बच्चे छोड़कर भाग गया है, दरबारियोंने मुबारकबादें दीं, ख़ुशीकी नौबतें पहर मस्तक झड़ती रहीं, मोहम्मदअलीखां ख़ानसामानने जाकर अकबरके कारख़ानोंको क़ुरक किया, दरबारखां नाज़र जाकर नीकोसियर और मोहम्मदअसग़र उसके बेटों सफ़ियतुलनिसा ज़कियतुलनिसा नजीबतुलनिसा उसकी बेटियों और सलीमा बानूबेगम उसके महलवग़ैरह उसके क़बीलोंको हुज़ूरमें ले आया, शेख़मीरके बेटे महोतशमख़ां मामूरख़ां, मोहम्मदनईमख़ां और सैयद अबदुल्लाहने क़ैदसे छूटकर दरगाहकी ज़मीन चूमी हरेकको ख़िलअत इनायत हुआ,

शहाबुद्दीनख़ांने पीछा करके शाहज़ादेके बहुतसे पीछे जानेवालों और थके हुओंको मारडाला शाह आलमको अकबरके पीछे जानेके लिये रुख़सत हुई ख़ानजमां, कुलीचख़ां, इन्द्रसिंह, रामसिंह सुजानसिंह वग़ैरह उसके साथ तईनात हुए, ५० हज़ार अशरफ़ी शाहआलमबहादुरको, २ लाख रुपया शाहज़ादे मोअज़्ज़ुद्दीनको, ३ हज़ार अशरफ़ी शाहज़ादे मोहम्मदअज़ीमको और ५० हज़ार अशरफ़ी उसके तईनातियोंको इनायत हुई रुहुल्लाहख़ांको इस ख़ज़ानेके लेजानेका हुक्म हुआ.

७ मोहर्रम (माघसुदि ९।१८ जनवरी) को बादशाह लौटकर ज़ियारत करते हुए अजमेरके दौलतख़ानेमें दाख़िल हुए.

९ (माघसुदि ११।२० जनवरी) को अर्ज़ हुई कि मांडलका थानेदार काम आगया और गढ़ी फ़िसादियोंने लेली.

जो लोग अकबरके साथ फ़साद करनेमें शरीक थे उनके वास्ते यह हुक्म हुआ कि ख़्वाजा मंज़ूर और महरम तो गढ बीठलीमें,[१] मुरतज़ा क़ुली कल्करमें, फ़िराकख़ां ग्वालियरमें,[२] गज़नफ़रख़ांका बेटा मोहम्मदकायम कांगड़ेमें क़ैद रहें, क़ाज़ी ख़ूबउल्लाह, मोहम्मद आक़िल, शेख़हबीब और मीरग़ुलाम मोहम्मद मिर्ज़ा,

१ अजमेरके क़िलेको बीठली कहतेहैं क्योंकि यह बीठलदास गौड़का बनाया हुआ है.
२ कल्करचेकी प्रतिमें मोहम्मदहातम. ३ कल्करचेकी प्रतिमें तईयब.

दहा जिन्होंने बादशाहपर चढ़ाई करना वाजिब होनेके महज़रपर मुहरें की थीं तख़्तेमें खींचे जाने और खूब मार पड़नेके पीछे गढ बीठलीमें भेजे गये, इनके सिवाय औरमी बहुतसे इसी सज़ाको पहुंचे, बादशाहज़ादी जेबुन्निसाबेगमकी चिट्ठियां अकबरके नामकी पकड़ी गई थीं. इसलिये उसका ४ लाख रुपया सालाना बंद हुआ, माल भी ज़ब्त किया गया और वह ख़ुद भी सलीमगढ़के क़िलेमें रक्खी गई.

१३ मोहर्रम (फाल्गुनवदि १।२४ जनवरी) को बरख़ुरदारबेगम मनसबदारकी बेटी फख़रजहां ख़ानमशाहज़ादे कामबख़्शको ब्याही गई.

१६ (फाल्गुनवदि ४। २७ जनवरी) को औरंगाबादी महल और मोहम्मदअकबरकी महल सलीमाबानूबेगम अपने अमले समेत दिल्लीको रवाने हुई.

शाहआलमकी फौजके अख़बारसे अर्ज़ हुई कि, वह तो जालोरमें पहुंचगया है और मोहम्मदअकबर साचोरमें है कुलीचख़ां और पीछा करनेवाले लश्करदौड़े जा रहे हैं.

बादशाहज़ादे मोहम्मदआजमकी फौजके अख़बारनवीसोंने लिखा कि, शाहज़ादेने रानाके नौकर दयाल्दासके छापे मारनेका भेद पाकर दिलावरख़ांको उसपर भेजा, वह लड़ा बहुतसे मौतके मारे हुए तलवारके भेट चढे और वह भागते वक्त अपनी औरतको मार गया उसकी बेटी कई दूसरी आसामियों समेत पकड़ी गई.

कुलीचख़ां बादशाहज़ादेसे पूछे बगैर ही हुजूरमें आगया था इसलिये उसका सलामको आना बंद होगया पहिले तो अहतमामख़ां कोटवाल उसको नज़रबंद रखता था फिर सलाबतख़ांको सौंपा गया.

मोहम्मदइब्राहीम जिसका ख़िताब शुजाअतख़ां था, अकबरसे अलग होकर शाहआलमके पास आया उसने हुजूरमें भेजा अहतमामख़ांके हवाले हुआ कि, अकबरी महलोंमें नज़रबंद रक्खे.

हाफ़िज़मोहम्मदअमीनख़ांने अर्ज़ी भेजी कि, पहिले तो अकबर राठौड़ोंके साथ डूंगरपुरके पहाड़से रानाके मुल्कमें आकर अहमदाबादका इरादा रखता था

१ मेवाड़की तवारीख़ वीरविनोदमें. २ जोधपुरकी ख्यातमें लिखा है कि बादशाहने शाहज़ादे मोअज़्ज़मको ३० हज़ार सवारोंसे अकबरके पीछे भेजा था, महाराज ईंद्रसिंह नवाब कुलीचख़ां और राठोड़ रामसिंह इस फौजके अफ़सर थे, जालोरके पास राठोड़ोंने इस फौजकी बारबरदारी और हाथी वगैरा छीन लिये इसग़फ़लतकी सज़ामें बादशाहने कुलीचख़ांको नौकरीसे दूर करके कैद कर दिया इन्द्रसिंहने जोधपुर और रामसिंहने जालोर छीन लिया. ३ अकबरी महलोंको अजमेरमें अब मेगज़ीन कहते हैं।

मगर ऱ्ब ख्वां स यह खबर लाये हैं कि, सरवनगढके रास्ते राज पीपलीमें होकर दक्खन हो गया है.

सजावारखां एक तकसीरकी सजामें बेटे समेत कैद होकर जलालबेग मंकबासीके हवाले किया गया और गुसलखानेका मुशरफ मोहम्मदशफीअ जो उस कसूरमें उसके शामिल था, मनसब और खिदमतकी बरतरफीमें भी शामिल रहा, मुगलखां उसकी जगह आखतावेगी मुगलखांके बदले जानेसे बहरेमंदखां मीरतुजुक और मुरशदकुलीखांका बेटा मिरजामोहम्मद गुसलखानेका मुशरफ हुआ.

रुहुल्लाहखांका पेशदस्त माईदास और मुनशी बालकिशन खानजहां बहादुरके आमिलगंगारामके जामिन थे और वह सूबे इलहाबादमें बागी होगया था इस-लिये ये दोनों कोटवालको सौंपेगये.

खानजहांबहादुरकी अरजी दरगाहमें पहुंची कि मोहम्मदअकबर ७ जमादि-उलअव्वल (जेठसुदि ९ । ११ मई) को बरहानपुर होकर संभाके मुल्कमें चला-

१ राठौड़ोंकी ख्यातिमें लिखा है कि, राठौड जालोरसे नजराना लेकर सांचोरको गये, वहां मोअज्ज़मकी फौजसे लडकर मेवाडके घाटेमें पहुँचे, मोअज्ज़म भी पीछा करता-हुआ आया वहां सुलहकी बातचीत हुई अकबरको गुजरातका सूबा, और महाराज अजीतसिंहको जोधपुर देना ठहरा मगर अकबरने मंजूर नहीं किया और ४००० अशरफियां जो खर्चके वास्ते सुलह करनेकी शर्तपर ली थीं वे भी पीछा नहीं दीं तब बादशाहने वैशाखके महीनेमें इनायतखांको फौज देकर भेजा जब वह आया तो राठौड अकबरको लेकर मालानी (पश्चिम मारवाड) का तरफ चलेगये वहां फिर मोअज्जमके हिरावल (अगले लश्कर) से एक लडाई लडकर पालनपुर और थिराद्की रियासतों से नजराने लेतेहुए आबू और सिरोहीके रास्तेसे मेवाडमें राना जैसिंहके पास पहुंचे मगर वहां रहनेकी सूरत न देखकर दक्खिनको रवाने हुए क्योंकि मेवाडमें अभीतक बादशाहकी फौजें जगह २ पडी हुई थीं और राजा राजसिंह मर चुके थे, राना जैसिंहने कुछ पैदल और सवार साथ करादिये। अकबर एक बेगम और २५ छोकरियोंको भागते वक्त साथ लेकर राठौडोंके पास आया था जो उसके साथ थीं राठौड दुर्गादासने बैस-वाडेसे उनको १० वर्षका खर्च देकर अपने मोतबर आदमियोंके साथ बाडमेरके जूने किलेमें भेजदिया और आप अकबरको लेकर राजपीपला होतेहुए नर्मदासे उतर जेठबदि ७ संवत् १७३८ (मारवाडी संवत् १७३७) को सालेरके किलेमें सेवाजीके बेटे संभाजीके पास पहुंचे, संभाजीने बहुत खातिरकी और उनको अपने पास ठहरा लिया।

गया और उसने खातिरत्वाजे करके अपने किलेमें रखलिया है। मोहम्मदमसीह और हिम्मतखांके दूसरे बेटों और भाईबन्दोंको मातमीके खिलअत मिले.

हिम्मतखांके मरनेसे अहारफखां अव्वलबख्शी और उसके बदलेजानेसे इनायतखां बियूतातका दरोगा हुआ.

बदीउज़्जमान महावतखानी जो मागवलसे बादशाही नौकर होकर रशीदखांका खिताब पाचुका था इनायतखांके बदलेजानेसे खालिसेका पेशदस्त हुआ.

२० मोहर्रम (फाल्गुनवदि ८। ३१ जनवरी) को मीरसैयदमोहम्मद कन्नौजी दिल्लीसे हज़ूरमें पहुंचा १ हजार रुपये और २ ख्वान मेवेके भेजे गये.

२१ (फाल्गुनवदि ९। २ फरवरी) को शहाबुद्दीनखां खिलअत खंजर और कलगी पाकर कुछ फौजके साथ रुखसत हुआ.

२० सफ़र (चैतवदि ७। १ मार्च) को एरजखां खानजहांबहादुरके बदलेजानेसे बुरहानपुरका नाज़िम हुआ.

इसलामखांके बेटे अफ़रासियाबखांने धामूनीकी फौजदारीसे हज़ूरमें आकर मुलाज़िमत की.

सैयदअशरफको खांका खिताब और मलिकाबेगम साहिबकी खानसामानीका काम मिला.

१० रबीउलअव्वल (चैतसुदि १२। २१ मार्च) को फ़ज़ुल्लहखां खिलअत और हाथी पाकर मुरादाबादको रुखसत हुआ.

इनायतखांको अजमेरकी फौजदारी मिली और उसने बागी राठौड़ोंको सज़ा देनेमें फतह पाई.

१९ रबीउलअव्वल (बैशाखबदि २। २९ मार्च) को हाकिम औरंगके सफीरें खान मिरजाने मुलाज़िमत करके खिलअत और खंजरका कमरपट्टा और ७ रबीउलआखिर (बैशाखसुदि ९। १६ अप्रेल) को रुखसतके वक्त जड़ाऊ जीगा ९ हजार रुपयेका १ मोहर ५० मोहरकी और १ रुपया १०० रुपयेका पाया औरंगके हाकिम अनोशेखांके वास्ते भी १ जड़ाऊ तलवार २ हजार रुपयेकी भेजी गई.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें इलाकेमें. २ कलकत्तेकी प्रतिमें यों लिखा है कि, अशरफखां अव्वल बख्शी और उसके बदले जानेसे कामगारखां-अखबार पढनेवाला और उसकी जगह इनायतखां-बयूतातों हुआ. ३ वकील. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें अनोशाहखां.

२९ रबीउलअव्वल (बैशाखसुदि ११९ अप्रेल) को जसवंतसिंहका बेटा मोहम्मदीराज शाहजहानाबादसे हजूरमें पहुँचा.

दाऊदखांके बेटे हमीदखांने मोजपुरकी फौजदारीका मीरकखांने हुआवे, जालंधरकी फौजदारीका मुरीदखांने शाहामतखांके वदले जानेसे काबुलकी फौजदारीका और राजा मानधाताने गोरबंदकी फौजदारीका खिलअत १४ रबीउल-आखिर (जेठवदि १।२३ अप्रेल) को पहिना.

सैफुल्लाहखां मीरबहर (समंदरोंका कामवाला) शाहआलमके पासगया था और वहां उसको इनाम नहीं मिला था इसलिये हुक्म हुआ कि इसको ५ हजार रुपया सरकारसे देदें और शाहआलमकी नकदीमेंसे काटलें.

अशरफखां मीरबखशी और तनदफतरके पेशदस्त एतमादखांको कमरसे बांधने के लिये बिल्लौरकी दवातें इनायत हुई.

३० रबीउलआखिर (जेठसुदि २ । ९ मई) को बादशाह कुलीखांने कैदसे छूटकर मुलाजिमत की और ११ जमादिउल आखिर (सावन वदि ३।१३ जून) को रजवीखांके मरजानेसे दूसरी दफा सदारतके बडे ओहदेका खिलअत पहिना.

राना बादशाही लश्करसे हारकर निकल गया था उस जंगलीका १ हजार वरसका वतन छूटकर घोडोंकी टापोंमें खुंद गया था। वह अपनी सरहदतक तो भागा फिर जो उसकी हिम्मत और ताकतका घोडा थक गया तो उसने पनाह लेने और अमान मांगनेके सिवाय और कहीं जानेकी जगह न देखकर शाहजादे मोहम्मदआजमका बसीला पकडा और जैजियेके बदलेमें मांडलपुर और बदनोरके परगने देना स्वीकार करके अपने कसूरोंकी माफी मांगी और शाहजादेकी

१ फलकचेकी प्रतिमें कुलीचखां यही सहीमालूम होताहै क्योंकि, वही कैद किया गया था और बादशाह कुलीखां तो अकवरके लश्करसे आकर मुसल्मानेकी ड्योढी पर मरगया था और असली नाम उसका तहव्वुरखां था.

२ उदयपुरके इतिहास वीरविनोदमें इस विषयके कई बादशाही फरमानों और शाहजादे आजमके निशानों (परवानोंकी) नकलें छपी हैं, जिनका सारांश यह है कि, रानाजीने १ लाख रुपये नकद अजमेरके खजानेमें भरने कबूल करके १० वर्ष पीछे ये दोनों परगने बादशाहसे ले लिये ये इनके बदलने और जजियेके १ लाख रुपये चार किस्तोंमें मंजूर करनेका फरमान बादशाहने ९ शव्वाल सन् २४ जलूसी (अषाढ सुदि ११ सवत् १७४७) को दक्षिणसे रानाकी अरजीके जवाबमें लिख भेजा था.

मुलाजिमतमें आनेको अपने मुल्क माल और इज़्ज़त आबरूके बचनेका सहारा समझा। शाहजादेने उसके हाल पर रहम करके उसकी अर्जियाँ दरगाहमें भेजीं, गुनाह बखशनेवाले बादशाहने उसके कसूरोंसे आनाकानी देकर शाहजादेको राजी रखना अपने दिली इरादोंसे मुकद्दम समझा तब १७ जमादिउलआखिर (सावन बदि ३।२४ जून) को रानाने राजसमंदर तलावपर आकर शाहजादेकी मुलाजिमत की दिलेरखां और हसनअलीखां पेशवाई करके उसको लाये, ९०० मोहरें और १८ घोडे चांदी सोनेकी सजाईके पेशकश करके भेंट किये और बंदगीके कायदेसे आदाब बजा लाया बाईं तरफ बैठनेकी इज़्ज़त मिली, खिलअत जडाऊ तलवार, जमधर फूल कटारे समेत घोडा सुनहरी सजाईका और हाथी चांदीके साजका मिला, रानाका खिताब और ५ हजारी ५ हजार सवारका मनसब भी बहाल होगया, रुखसतके वक्त उसके साथवालोंको १०० खिलअत १० जडाऊ जमधर और ४० घोडे इनायत हुए.

राना वहांसे दिलेरखांके घर पर गया उसने तवाजंके तौर पर ९ थान कपडेके १ जडाऊ तलवार १ ढाल जडाऊ फूलोंकी १ बरछी पच्चीकारीकी ९ घोडे और १ हाथी रानाको और ३ थान कपडेके जडाऊ खजर, जडाऊ उरबसी, जडाऊ भुजबंद और २ घोडे रानाके बेटेको दिये.

मुलतिफितखां जो गाजीपुर जमनियाकी फौजदारीसे बदला जाकर आगरेके जिलेका फौजदार हुआ था, १ गांव पर हमला करके जखमी हुआ और १९ जमादिउलआखिर (सावनबदि ६। २६ जून) को मरगया.

१ कलकत्तेकी प्रतिमें ७ जमादिउलआखिर (असाढसुदि ९। १४ जून) वीरविनोदमें भी ७ तारीख ही इसी प्रतिसे लिखी है.

२ वीरविनोदसे जाना जाता है कि रानाने दिलेरखांके २ बेटोंको बुलाकर औलमें रख लिया था और फिर शाहजादेके पास आया था इसीलिये जब वह दिलेरखांसे मिलने गया तो दिलेरखांने कहा कि तुम मेरे बेटोंको अपने रजपूतोंके पास रखकर तो आये पर इतना न समझे कि, हम और हमारे बेटे तो बादशाही काममें जान देनेके वास्ते ही हैं, ये मारे जावें तो बादशाहके यहां क्या घाय पडे, और जो तुम मारे जाओ तो कितना बडा नुकसानहो, बादशाही और बादशाही चाकरोंका भरोसा रखना चाहिये। रानाने जवाब दिया कि मुझे तो मेरे बाप, काकाजी अर्थात् आपके भरोसे पर छोडगये हैं। इस कहनेसे यह मतलब था कि, आप मेरे बापके दोस्त हो ठीक समझो सो करो.

२४ (सावनवदि ११ । १ जुलाई) को आजमखांका बेटा खानजमां जो आसिफखांका जमाई था और शाहआलमबहादुरके साथ दक्खिनसे आकर अमीतक उन्हींकी तईनातीमें था, एरचखांके बदले जानेसे बुरहानपुरका सूबेदार हुआ खिलअत सुनहरी साजका घोडा और हजार सवारका इजाफा मिला जिससे ५ हजारी २ हजार सवारका मनसबदार होगया.

शाहआलमबहादुर चांदरात (सावन सुदि १ । ६ जुलाई) को सोजत और जेतारणसे लौटकर हजूरमें आया.

इफ्तखारखांके मरजानेपर जो अजमेरकी सूबेदारीसे जौनपुरकी फौजदारीपर बदला गया था, तरबियतखां जौनपुरका फौजदार हुआ.

निजामुद्दीन अहमद शकरुल्लाहखांके बदले जानेसे सहरंदकी फौजदारी पर गया.

जांसुपारखां मीरमोहम्मदखांके बदले जानेसे बंदरका किलेदार हुआ.

बहरेमंदखांने लुतफुल्लाहखांके बदले जानेसे गुसलखानेकी दरोगाई पाई और लुतफुल्लाहखां शहाबुद्दीनखांके बदले जानेसे अर्ज मुकर्ररका दरोगा हुआ.

मुरादाबादके अखबारसे अर्ज हुई कि बादशाह बेगमका कोकाजादा फैजुल्लाहखां जाहिदखांका बेटा मरगया बादशाह और बेगमसाहिबका लाडला था मुरादाबादमें आजादीके साथ रहताथा किसीको सर नहीं झुकाताथा। नेक और नेकी करनेवाला था. हकदारोंके साथ रयायतें करता था दुनियांके कामोंमें हरगिज ध्यान नहीं देता था। तरह २ के चौपायों, दरंदों, चरंदों, परंदों, और अनेक २ कीडोंमकोडोंके सिवाय जो दूर २ के मुल्कों और टापुओंसे उसके वास्ते लाते थे, और किसी बातमें उसका दिल नहीं लगता था अजब तरहका आदमी था। अखीरमें उसको फीलपाकी बीमारी होगई थी । हाथीपर बैठा फिरता था जब कभी हजूरमें आता था तो दरबारमें नहीं जाता था चलती सवारीमें ही मुजरा करलेता था। उसके मरनेसे अफरासियाबखां मुरादाबादका सूबेदार हुआ.

४ रज्जब (सावनसुदि ५ । १० जुलाई) को शाहजादे मोहम्मदआजम और सुलतान बेदारबखत राणाकी मुहिमसे दरगाहमें आये और खिलमतमें मुलाजिमत करनेको गये.

१८ रज्जब (भादोंबदि ४ । २४ जुलाई) को सैयद याहाने बीजापुरवाले आदिलशाहकी बेटी शहरबानूको लाकर हरमसरामें पहुंचाया.

१फकफकेकी प्रतिमें मरजानेसे. २कलकत्तेकी प्रतिमें १३रज्जब(सावनसुदि१४।१९जुलाई)

२० रजब (भादोंवदि ६।२५ जुलाई) को इसका निकाह शाहजादे मोहम्मदआजमसे हुआ सहेरा नहीं बांधा गया था खासो आमकी मसजिदमें शेखुलइसलामने निकाह पढा पैगम्बरकी शरीअतके मूजिब ५०० दिरमका महिर बांधा गया.

२४ (भादोंवदि १०।२९ जुलाई) को मनोहरपुरके जमीदार अमरसिंहकी बेटी और जगतसिंहकी बहन कल्यानकुंवरसे जिसका नाम जमीलतुलनिसा रक्खा गया था शाहजादे कामबखशकी शादीका जल्सा हुआ. काजीने खास आमकी मसजिदमें निकाह बांधा ५० हजार रुपयेका मिहर ठहरा.

शेरमोहम्मदखूमानीको शमशेरखांका खिताब मिला.

१ शाबान (भादोंसुदि ३ । ६ अगस्त) को खानजहां बहादुरकी अरजीसे अर्ज हुई कि अकबर मालीके किलेमें मेवलीके पास रहता है २०० सवार और ८०० पयादे उसके पास हैं संभाने सबके दरमाहे मुकर्रर करदिये हैं.

शाहजादे मोहम्मदआजमके साथ बादशाही फौजका दक्खिन फतह करने और मोहम्मदअकबरको सजा देनेके वास्ते अजमेरसे जाना।

२५ रज्जब (भादोंवदि ११ । १२ । ३० जुलाई) को शाहजादे मोहम्मदआजम, शाहका खिताब पाकर दक्खिनकी मुहिम पर तईनात हुआ, खिदमतगारखां खिलअत बालाबंद और सरपेच समेत उसके घर पहुंचा आया उसने ख्वाबगाहमें आदाब बजाया उसको ढांई लाख रुपयेकी नीमाआस्तीन जिसमें मोती टके थे वहां मिली और तलवार २ इराकी अरबी घोडे हाथी

१ कलकत्तेकी प्रतिमें बांधा गया. २ कलकत्तेको प्रतिमें अमरचंद.
३ कलकत्तेकी प्रतिमें–खोहानी. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें–बाले. ५ कलकत्तेकी प्रतिमें नस्योली. ६ महाराजा अजीतसिंहजीके संस्कृत इतिहास अजितोदयमें लिखा है कि दुर्गादास जब अकबर को लेकर शिवाके पुत्र महाराज शंभूके देशमें गये तो महाराजने सुनकर अपने प्रधान मंत्री कविकलशसे कहा कि अपने राज्यमें इनका प्रवेश न होने पावे कविने कहा कि, महाराज दिल्ली नरेशका पुत्र और महाराज अजीतसिंहके भट यहां आवें और आप उनका सन्मान करें तथा उनको स्थान दें तो जगत्‌में बडा यश होगा महाराज शंभुने जब मंत्रीका यह गहन कथन सुना तो कह दिया कि जो तुमको ठीक लगे सो करो. तब कविने इनको बुलाकर अपने नगरके एक गुप्त स्थानमें सन्मान पूर्वक ठहराया और वस्त्र,-आभूषण, सोना, रत्न और घोडे आदि देकर प्रसन्न किया. (अजितोदय एकादशसर्ग.) ७ कलकत्तेकी प्रतिमें २ लाख ५५ हजार ४४ रुपयेकी.

गजनौल और ९ चीते दीवान (कचहरी) में इनायत हुए, सुल्तान बेदार-बख्तको रुखसतका खिलअत घोडा और जडाऊ लटकन बख्शागया उनके साथके तईनातियोंको भी इनाम मिले.

१३ शाबान (भादोंसुदि १४ । १८ अगस्त) को असदखांके नाम हुक्म हुआ कि, अपनी जमइयत साथ करके हकीम मोहम्मदमोहसनखांको दिल्लीमें पहुंचावें और फौलादखांकी मोहरकी रसीद मंगाकर पेश करें.

राना जैसिंहके भाई राजामीमने बंदगीकी उमेदमें अपना माथा दरगाहकी ड्योढी पर घिसा मोहम्मदनईमने जो राना राजसिंहकी मातमीका खिलअत उसके बेटे राना जैसिंहके वास्ते लेगया था वहांसे आकर मुलाजिमतकी ४ हजार रुपये नकद २ घोडे १९ थान कपडेके और ४ ऊंट उसने वहां पाये थे वह उसको माफ होगये.

२५ वां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (असोजसुदि २।४ सितम्बर) से २९ वां जलूसी वर्ष शुरु हुआ.

इति औरंगजेबनामा दशम खंड समाप्त।

ग्यारहवां खंड।

सन् १०९२ हि०। संवत् १७३८ वि०। सन् १६८१ ई०

बादशाहका कूच दक्खिनको।

२ रमजान (असोजसुदि ३। ५ सितम्बर) को अजमेरसे बुरहानपुर जानेके लिये डेरे बाहर निकाले गये.

९ (आसोजसुदि ६।८ सितम्बर) को कूच होकर दोराईमें मुकाम हुआ.[२]

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें गजमांग.

२ जोधपुरकी ख्यातिमें लिखाहै कि औरंगजेबने अजमेरमें जब यह खबर सुनी कि राठौड और मरहठे एक होगयेहैं तो बहुत घबराया और रानाजीसे सुल्ह करके आसोज सुदि ६ संवत् १७६८ को दक्खिनकी तरफ रवाने हुआ मोअज्जमके बेटे अजीम और दीवान असदखांको अजमेरमें छोडकर कहगया कि राठौडोंसे भी सुल्ह करलीजो. "अजितोदयमें लिखाहै कि, बादशाह महाराज अजितसिंहके मर्दोंको अकबरके साथ गया सुन, अपने पोते अजीम और नव्वाब असदखांको अजमेरमें रख, हाथमें आये हुए मेवाडके रानाको जल्दीके मारे छोडकर अपनी म्लेच्छसेना सहित—

१ (आसोजसुदि ७।९ सितम्बर) को शाहजादा मोहम्मदअजीम खिल्अत, खासा मोतीकी सुमरनी जड़ाऊ खंजर तलवार घोड़ा, और हाथी पाकर अजमेरको रुख़सत हुआ जुमदतुलमुल्क असदखांकी तईनाती उसके पास हुई खिल्अत खासा जड़ाऊ खंजर और घोड़ा उसको भी मिला असदखांका बेटा एतकादखां दिलेरखांका बेटा कमालुद्दीनखां राजा भीम बेटे समेत नामदारखांका बेटा दीन्दार जो फिर मरहमतखां हुआ यह सब और दूसरे लोग भी खिल्अत जवाहर घोड़े और हाथी पाकर इस फौजमें तईनात हुए इनायतखांने अजमेरकी फौजदारी और सैयद यूसुफखुखारीने गढबीठलीकी किलेदारीके खिल्अत पाये और रुखसत हुए.

७ रमजान (असोजसुदि ८।१० सितम्बर) को दिल्लीके अखबारसे अर्ज हुई कि, जहां आरावेगम इसमजान (असोजसुदि ३। ५ सितम्बर) को मरगई और शेखनिजामुद्दीन औलियाकी दरगाहमें दफन हुई जहां उसने जीते जी अपनी कब्रका मकान बनवालिया था बादशाहको अपनी इस बडी बहनके मरनेका बडा रंज हुआ ३ दिन नौबत बजाना बंद रहा, इस बेगममें अच्छे २ गुण थे सब लोगोंपर मेहरबानी रखती थी वह क्या मरी मानो सखावत और फैज बखशीकी पूंजी दुनियांके हाथसे खोगई बादशाहने हुक्म दिया कि, उसका अल्काव नवाब साहबा जमानी लिखा करें और सबर करके उसके नौकर चाकरोंकी तरह परवरिश करी.

औरंगखां बदलीने जो मनसबसे दूर होगया था मक्के जानेकी रुखसत लेकर १८ रमजान (द्वि० असोजबदि ४। २१ सितम्बर) को दुनियांसे कूच किया.

७ शव्वाल (असोजसुदि ८। १० अक्टूबर) को मुल्तातखांने मुलाजिमत करके खासा खिल्अत पहना दूसरे दिन यशमके दस्तेकी छडी उसको इनायत हुई.

१९ (कार्तिकवदि ६। २२ अक्टूबर) को अर्ज हुई कि, शाहजहांनाबादके फौजदार फोलादखांको मौतकी फौजने आ दबाया उसके मरजानेसे शफ-कुल्लाहखांने उसकी खिदमत पाई.

दखिणको चलदिया." बादशाहका यह दक्षिणको जाना ऐसी अशुभ घडीमें हुआ था कि, फिर जीतेजी दिल्लीमें आना न मिला और वहां दखनियोंसे लडते २ उनकी उमर पूरी होगई यह भी उस जहरीले फोडेके विषका प्रभाव था कि, महाराज जसवंतसिंहके स्वामिभक्तसरदारोंने उनको एसी जगह ले जाकर फँसाया जो उनकी जानको भूखी थी.

१ कलकत्तेकी प्रतिमें वखबकखां नजरचे (यही सही मालूम होताहै)

२४ (कार्तिकबदि ११ । २७ अक्टूबर) को कुलीचखांको दक्खिनकी मोहिमपर रुखसत होनेका खिल्अत खासा घोडा और नक्कारा इनायत हुआ.

शहाबुद्दीनखांको हुक्म दिया गया कि, वहींके पहुंचनेतक लश्करकी चन्दावलीका काम किया करे.

बादशाहसे अर्ज हुई कि मोहम्मदआजमशाह २१ (कार्तिकबदि १३ । २९ अक्टूबर) को बुरहानपुरसे कूच करके १० जीकाद (कार्तिकसुदि ११ । ११ नवम्बर) को औरंगाबादमें पहुंचा.

१२ जीकाद (कार्तिकसुदि १३ । १३ नवंबर) को इतवारके दिन बादशाहकी सवारी बुरहानपुरमें पहुंची.

१८ जीकाद (मगसरबदि ४।१९ नवम्बर) को एतकादखांने बहुतसी फौजके साथ बागी राठौडोंपर जो मेडतेके पास ३ हजार सवारके करीब जमा होगये थे, धावा किया बडी घमसान लडाई हुई, बादशाहके इकबालसे बहादुरोंने फतह पाई ९०० दुश्मन मारेगये और जखमी हुए जिनमें सोनग उसका भाई अजबसिंह सांवलदास बिहारीदास और गोकुलदास वगैरह उमदा सरदार थे, बाकी भाग गये इस अजब लडाईमें बादशाही बहादुर भी बहुत शहीद हुए, सर्जोवारतरीन और शेरअफगन वगैरह जखमी हुए, खानको पांच सदीका इजाफा मिला और दूसरोंने भी रियायतें पाईं.

---

१ पंचांगमेंभी कार्तिकसुदि १३ को इतवारही है. २ कलकत्तेकी प्रतिमें १३ जीकाद (कार्तिकसुदि १४।४ नवम्बर.) ३ जोधपुरकी ख्यातिमें लिखा है कि शाहजादे अजीम और असदखांने रानाजीकी मारफत राठौडोंको बुलाया थे २ सरदार अजमेरको जाते थे चांपावतसोनंगजी रास्तेमें अचानक मरगये जिससे असदखांने सुलह की बातचीत बंद करदी रानाजीने सोनंगजीके भाई अजबसिंहसे कहलाया कि सोनंगजीके मरजानेसे असदखांने राठौडोंको तुच्छ समझ लिया है सो अब जबतक तुम कुछ रजपूती नहीं दिखाओगे कुछ नहीं होगा, राठौडोंने यह सुनते ही डीडवाणेको जा घेरा वहांसे पेशकश लेकर मकरानेको लूट लिया कार्तिकबदि १४ संवत् १७३८ को मेडता मारकर गांवहूदावडमें डेरा किया असदखांने अपने बेटे जुलफिकारखां (एतकाद खांका खिताब) को फौज देकर भेजा सरदारखां भी उसके साथ आया कार्तिकसुदि १ को गाँव डीगराणेमें लडाई हुई राजपूत और ११ सरदार चांपावत और मेडतिया जातिके काम आये. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें सरदार तरीन.

२१ (मगसेरवदि ८ । २२ नवम्बर) को अबदुल्लनबी रोजबिहानखांका खिताब पाकर दक्खिनके तोपखानेका दरोगा हुआ.

२२ (मगसरवदि ९ । २३ नवम्बर) को बुरहानपुरके किलेके पास बारूद का कोठा आगसे उडा, बहुत लोग मर गये उसी रातको लुतफुल्लाहखां कोकाके डेरेपर जो लालबागके पास था, डाका पडा ६ आदमी मारे गये २० जखमी हुए माल लुटगया.

खेबरके अखबार नवीसने लिखा कि एक जमीदारके घरमें लडका पैदा हुआ जिसके शिरपर २ सींग अंगूठेके बराबर थे २ दिन पीछे मरगया एक औरतने लडकी जनी जिसका शिर और मुंह काला, नाक सफेद और सुर्ख है जिन्दा है.

हुसेनअलीखांने इस्लामाबादसे आकर मुलाजिमत की खिलअत हाथी और घोडा पाकर दक्खिनकी मुहिमपर गया रजीउद्दीनखां भी जो बादशाहके हुक्मसे उसके घरका और उसके पासकी बादशाही फौजोंका काम करता था खिलअत पाकर रुखसत हुआ.

८ जीकाद (कार्तिकसुदि ९ । ९ नवम्बर) को बादशाहने शेखअबदुल्ल-लतीफकी कब्र पर फातिहा पढकर दीनके दुश्मनों (हिन्दुओं) पर फतह पानेकी मदद उसकी रूह (आत्मा) से मांगी.

२१ (मार्गसिरवदि ८ । २२ नवम्बर) को बुखारेके सफीर रहमानकुलीने दरगाहमें पहुँचकर २ घोडे १० जोडे कैशके दाने और १ कतार ऊंट नजर किये ५ हजार रुपया और खिलअत इनाम पाकर रुखसत हुआ.

गजनफरको मोहम्मदआजमशाहके लश्करमें खजाना पहुंचानेके लिये भेजा गया.

शहाबुद्दीनखांने अहदियोंकी बखशीगरी पाई सलाबतखांका मनसब बहाल होगया और वह बहरेमंदखांके बदले जानेसे तोपखानेका दरोगा हुआ.

---

१ असलमें तो २९ है मगर हिसाबसे २१ चाहिये क्योंकि आगे २२ है और कलकत्तेकी प्रतिमें भी २१ ही है. २ खाफीखांने लिखाहै कि, यह १ मकान किले और चौकके बीचमें था उसमें वे लोग कैद रहा करते थे कि, जिनपर कुछ बादशाही लेना होता था उनके वास्ते बादशाही तनूर (बवरचीखाना) पका करता था इसीसे आग लगी और कई पीपे बारूदके जो उस मकानमें थे उड गये जिनसे बहुत आदमी जल मरे. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें हसनअलीखां. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें २० जीकाद (मगसिर वदि ७ । २१ नवम्बर.)

२८ जीकाद (मगसिरबदि ३० । २९ नवम्बर) को चांदाके जमीदारने दरगाहकी चौखटपर माथा घिसकर ४ हाथी और ९ घोड़े नजर किये.

सन् १०९३ (संवत् १७३८ । ३९)

२ मोहर्रम (मगसिरसुदि ४।२ जनवरी) को चांदाका जमीदार खासा खिलअत सोनेके साजका घोडा हाथी और पन्नेका सरपेच पाकर अपने वतनको रुखसत हुआ.

खानजहांबहादुरकी अरजी आई कि, उस बहादुरने सेवापुरके कसबेको लूट लिया है.

अलीमर्दानखां दाराशिकोहीका बेटा मोहम्मदशाह वकील होकर गोलकुण्डेको गया.

रूहुल्लाहखां मैंकापुरके लूटनेको रुखसत हुआ शहाबुद्दीनखां दिलेरखांका बेटा फतहमामूरखां और जिलौ (अरदली) के बंदे उसके साथ भेजेगये.

लुतुफुल्लाहखां कामगारखांके बदले जानेसे अखबार पढनेके कामपर मुकर्रर हुआ.

७ सफर (फाल्गुनसुदि ९ । ६ फरवरी) को तीसरा बखशी अब्दुल्रहीमखां फोत हुआ, औरंगाबादमें अपने बाप इसलामखांकी कबरके पास गाडा गया कामगारखांने उसकी जगह पाई.

१० (फाल्गुनसुदि १२ । ९ फरवरी) को अर्ज हुई कि राठौड मांडलेंपुर पर धावा करके बहुत सा माल असबाब लूट ले गये.

बुरहानपुरसे औरंगाबादको जाना ।

१ रबीउलअव्वल (चैतसुदि २ । १ मार्च) को बादशाहने बुरहानपुरसे औरंगाबादकी तरफ कूच किया.

२ (चैतसुदि ३ । २ मार्च) को शाहजादे मुअज्जुदीनको बाहदुरपुरसे बुरहानपुरमें रहनेको रुखसत होकर खिलअत सरपेच और हाथी मिला, खानजमां नाजिम भी खिलअत पाकर उसकी रकाब (सवारी) में तईनात हुआ.

---

१ कल्कत्तेकी प्रतिमें २९ जीकाद (मगसरसुदि १।३० नवम्बर) २ कल्कत्तेकी प्रतिमें मोहम्मदअलीखां. ३ " " में वेगापुर (नकापुर) और वेगापुर शायद मल्कापुरकी खराबी है. ४ यही नाम पुरमांडल. यह वही परगना है जो बादशाहने जजियेके वास्ते राणाजीसे ले लिया था. जोधपुरकी ख्यातिमें लिखा है कि राठौड सोहकमसिंह और उदेसिंहने पुरमांडलको लूटकर काशिमरखांसे जो दक्खिनको जाता था, बादशाही नक्कारा और निशान छीन लिया. ५ कल्कत्तेकी प्रतिमें खिलअत सरपेच तलवार और हाथी.

हामिदखां[1] बीजापुरीने मुलाजिमतकी बादशाहने कमजोर देखकर मेहरबानीसे फरमाया कि, पूरा आराम होने तक बुरहानपुरमें रहे और अपनी कमरका बालाबंद खोलकर उसकी पगडी पर बंधवा दिया.

शेखइब्राहीमकदीमीके नवासे शेखजहांको जो आसेरका फौजदार और किलेदार था रुखसत हुई.

२० (द्वि०[2] चैतवदि ७ । २० मार्च) को मोहम्मदआजमने औरंगाबादसे कनूरीमें आकर कदम चूमे.

२३ (द्वि०चैतवदि १०।२३ मार्च) को बादशाह औरंगाबादके दौलतखानेमें दाखिल हुए अबूनसरखांके बदले जानेसे यलंगतोशखां बहादुर कारवेगी हुआ.

बादशाहने आबपाशदरे[3] और फरमानबाडीके बागमें जाकर मालियोंको इनाम दिया.

राजारामसिंहका बेटा कुंवर किसनसिंह खानाजंगीमें जखमी होकर २ दिन पीछे १२ रबीउलआखिर (द्वि० चैतसुदि १९ । ११ अप्रैल) को मरगया.

१९ (वैशाखवदि ३।१४ अप्रैल) को उसके बेटे किसनसिंहने हजारी ४०० सवारका मनसब और अपने बापकी जगह पाई.

१८ (वैशाखवदि ९) १७ अप्रैल) को सादुल्लाखांके बेटे इनायतुल्लाखांको इखलासखांका खिताब मिला.

दाऊदखांका बेटा हमीदखां जो बुरहानपुरमें बहुत बीमार था २० (वैशाखवदि ७ । १९ अप्रैल) को मरगया.

२८ (वैशाखवदि ३० । २७ अप्रैल) को खडगगढके जमीदार चमनाजीने[4] जो संभाका नौकर था दरगाहमें आकर खिलअत पाया.

कालीभीतका जमीदार मकरंदसिंह[5] रुपया बाकी होनेसे खानजहांबहादुरकी कैदमें था उसको बादशाहके हुक्मसे खानजहांने भेजदिया वह सात ही वर्षका था, ४[6] जमादिउल अव्वल (वैशाखसुदि ६ । २ मई) को कैदसे छूटा और खिलअत पाकर अपने वतनको गया.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें हामिदखांने मुलाजिमतकी बीमार था. २ कलकत्तेकी प्रतिमें २० मोहर्रम. ३ पानीके झरने वाला पहाड. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें जमशीदखां. ५ कलकत्तेकी प्रतिमें कालीभीतके जमीदार प्रतापसिंहका बेटा मकरंदासिंह. ६ „ „ में १४ (जेठवदि १ । १२ मई)

११ (जेठवदि ३ । १४ मई) को बीजापुरके दुनियादार सिकन्दरआदिलखांका वकील यादगारअली खिलअत १० हजार रुपया और सैयदी मसऊद बीजापुरीका वकील शेखहसन खिलअत और हजार रुपया इनाम पाकर रुखसत हुआ हाथी और अंगूठी सिकन्दरके नजरानेकी कबूल नहीं हुई वकीलको लौटादीगई गोलकुण्डेके दुनियादार कुतबुलमुल्कका वकील मोहम्मदमासूमने चौखट चूमकर खिलअत पाया, २ लाख ४४ हजार रुपयेकी पेशकश जो वह लाया था बादशाहकी नजरसे गुजरी.

२३ जमादिउलअव्वल (जेठवदि १०।२१मई) को शरीफखां गही (रसद) के वास्ते गया था गनीम नजर आया लडाई हुई बहुतसे दोजख (नरक) में गये जाहदखां जोरागासी, सईदखांके पोते सैफुल्लाह और एहसनुल्लाह शहीद हुए.

कमरउद्दीनखां किरावलबेगी बंदूककी ३ गोलियोंसे १ नीलगायको शिकार करके हजूरमें लाया जो लम्बी ३ गज साढे ६ गिरह, ऊँची २ गज ३ गिरह, और दुम १ गज आध गिरह की थी.

२६ (जेठवदि १३ । २४ मई) को रुहुल्लाहखां बागियोंको सजा देनेके लिये अहमदनगरकी तरफ रुखसत हुआ, सुनहरी तलवार इनायत हुई.

हयातखां रामसेजके किलेपर धावा करानेकी सजावली (गिरदावरी) पर भेजागया.

१८ जमादिउलआखिर (आषाढबदि ९ । १९ जून) को मोहम्मदआजमशाह बीजापुरकी तरफ रुखसत हुआ खिलअत २ घोडे हाथी मुक्ता, कलगी, पहुँची, और उरबसी इनायत हुई शाहजादा वेदारबखत भी खिलअत हाथी और घोडा पाकर बापके साथ गया.

मोहम्मदआजमशाहके सरदार मोहम्मदपनाहको पक्केके घरका पर पगडीमें टांकनेको मिला, शमशुद्दीनखां वगैरह शाहके तईनातियोंको भी खिलअत घोडे और हाथी मिले.

कुलीचखांके बदले जानेसे शरीफखां कुल हिन्दुस्तानकी सदारतकी गद्दीपर बैठा.

जसवंतराव दखनीको ४ हजारी ४ हजार सवारका मनसब और जडाऊ उरबसी इनायत हुई.

---

१ फलकचेकी प्रतिमें २ हजार रुपया. २ यह बडे मजेकी बात है कि मुसलमान तो हिंदुको नरकमें, और हिंदू मुसलमानको स्वर्गमें पहुंचाते हैं. ३ कलेकत्तेकी प्रतिमें ३॥ गिरह.

इफ़तखारखांके बेटे अब्दुल्लाह अब्दुलबाकी और अबदुलहादी बापके मरे पीछे हुजूरमें आये और खिलअत पाकर सोगसे निकले.

१ रजब (असाढसुदि ३ । २७ जून) को बादशाहसे अर्ज हुई कि, अहमदाबादका सूबेदार हाफिजमोहम्मदअमीनखां २० जमादिउलआखिर (असाढवदि ७= १७ जून) को मरगया यह बडा ईमानदार नेकीवाला और बादशाहका खैरख्वाह था, अहमदाबादकी सूबेदारीमें बहुत जल्दी कुरान याद कर लिया था उसके मरनेसे मुखतारखां अहमदाबादका और उसकी जगह खानजमां मालवेका नाजिम हुआ खानजमांकी जगह मुगलखां बुरहानपुरमें गया.

फाखिरखांका बेटा मुफ़तखरखां मुखतारखांके बेटे कमरुद्दीनखांके बदले जानेसे किरावलबेगी हुआ और कमरुद्दीनखां अपने बापकी तईनातीपर गया आतिशखां सलाहखांके बदले जानेसे मीरतुजुक हुआ.

कान्हूजी दक्खिनीने दरगाहमें हाजिर होकर ९ हजारी ९ हजार सवारका मनसब पाया.

२४ शाबान (भादोंवदि १० । १८ अगस्त) को खानजहां बहादुर जफ़रजंग कोकल्ताशने गुलशनाबादसे मुलाजिमतमें आकर खिलअत खासा जड़ाऊ खंजर और १४ रकाबी झूठा खाना पाया.

सैयदमनव्वरखां मुगलखांकी जगह बुरहानपुरको रुखसत हुआ.

अमीरखांके बेटे मीरअबदुलकरीमको जो खवासोंका अफसर था बादशाह उठाना चाहते थे इसलिये हाफिज इबराहीमके बेटे अबदुलकादिरको बदल कर उसे जानमाजखानेकी दरोगाई दी जिससे वह बादशाहके पास रहने लगा.

मुल्लाअबदुल्लाह सियालकोटीका शागिर्द इखलासकेश जो उसीके पास हिन्दूसे मुसलमान हुआ था और इतवारके मुबारकदिनका वाकिआ (अखबार) लिखा करता था और बादशाहकी मरजीका आदमी था इबतियायखाने (बिफरोघर) का मुशरफ़ मुकर्रर हुआ.

२६ वां आलमगीरी सन.

१ रमजान (भादोंसुदि ३।२९ अगस्त) से २६ वां जलूसीसन् लगा.

२ (भादोंसुदि ४।२६ अगस्त) को नूरजहां बेगमके भतीजे मिरजा-अबूसईदके बेटे हमीदुद्दीनखांने करमुल्लाहखांके मरनेसे मूंगीपट्टन की फौजदारी पाई करमुल्लाहखांके बेटोंको मातमीके खिलअत मिले.

६ (भादोंसुदि ७।२९ अगस्त) को याकूतखां और खैरयतखां फौजदार दंडा राजमोरीके वास्ते खिलअत बहरेमंदखांके हवाले किया गया.

७ (भादोंसुदि ९।३१ अगस्त) को खानजहां बहादुर कोकल्ताश खिलअत खासा कमरबंद घोडा और हाथी पाकर गुलशनाबादको रुखसत हुआ.

जादूराय दक्खनीका भाई जगदेवरायने दरगाहमें आकर खिलअत पाया.

१० (भादोंसुदि १२ । ३ सितम्बर) को दाराबखांका बेटा मोहम्मदतकी बहरेमंदखांकी बेटीसे शादी करता था इसलिये उसको खिलअत घोडा और मोतियोंका सेहरा इनायत हुआ, आजमखांका बेटा सालहखां शहाबुद्दीनखांके बदलेजानेसे अहदियोंका मीरबख्शी हुआ.

सैयद मोहम्मदगेसूदराजके पोतोंमेंसे सैयदयूसुफको कुलबरगेकी रुखसत हुई १ हथनी इनाममें मिली.

हजूर और सूबोंके सब बंदोंको बरसाती खिलअत मिले.

२६ (आसोजबदि १३ । १९ सितम्बर) को शाहजादा मोअज्जुद्दीन बुरहानपुरसे हजूरमें आया खिलअत मिला.

खिजरखां परनाके भाई रणमस्तखां दाऊदखां और उसके भाई सुलेमानने मुलाजिमत करके खिलअत पाये.

दौलताबादका किलेदार सैयद मुबारकखां जो हजूरमें हाजिर हुआ था खिलअत और रुखसत पाकर वापस गया.

लुतफुल्लाहखांको खास जिलौ और खास चौकीकी दरोगाई इनायत हुई.

६ शव्वाल (आसोजसुदि ८ । २८ सितम्बर) को शाहजादे मोहम्मद-मोअज्जुद्दीनने खिलअत मोतियोंकी माला पन्नोंका मुक्ता जहांपेमा नाम घोडा और ८ हजारी ६ हजार सवारका मनसब १ हजार सवारके इजाफेसे पाकर बागियोंको सजा देनेके लिये अहमदनगरकी तरफ कूच किया रणमस्तखां दाऊदखां और गजनफरखां वगैरह खिलअत घोडे और हाथी पाकर उसके साथ गये.

१ कलकत्तेकी प्रतिमें राजपुरी.

शरीफखां सदर १२ रज्जब (अषाढसुदि १४ । ८ जुलाई) को मरगया था मोहम्मदआदिल और मोहम्मदसालह उसके बेटोंने मातमीके खिलअत पाये.

शेखमखदूम मुन्शीने कुल सिदारतका खिलअत पहिना और मोहम्मदसालह कंबोह मीरफहुसैनके बदलेजानेसे उसका पेशदस्त हुआ सजावारतरीनने सिकंगांवकी फौजदारी पाई, रूहुल्लाहखांका भाई अजीजुल्लाहखां मोहम्मदयारखांके बदले जानेसे मीरतुजुक और इखलासकेश जानमाजखानेका मुशरफ हुआ.

खलीफा सुल्तान का जमाई मीर हिदायतुल्लाह शाहजहानाबादकी दीवानी पर शुकरुल्लाह सिकंदराबादकी और कामिलखां सहारनपुरकी फौजदारी पर रुखसत हुआ.

सिलाहखांके बदलेजानेसे हिम्मतखांका बेटा मोहम्मदमसीह मीरतुजुक बनायागया.

२-जीकाद (कार्तिकसुदि ४ । २४ अक्टूबर) को अर्ज हुई कि अजमेरका फौजदार इनायतखां मरगया.

१२ (कार्तिकसुदि १३।३ नवम्बर) को रूहुल्लाहखांकी मा हमीदाबानूबेगम मरगई बादशाहजादा मोहम्मदकामबख्श और अशरफखां मीरबख्शीको बादशाहने उसके घर भेजा वे उसको मातमसे उठाकर लाये उसको और उसके भाई बंदोंको खिलअत इनायत हुए जेबुननिसाबेगम बादशाहके हुक्मसे उसके घरपर बैठनेको गई.

१९ जिल्हज (पौषवदि १ । ९ दिसम्बर) को कामयाबखां दक्खिनका बख्शी होकर खानजहांकी फौजमें गया.

हाफिज मोहम्मदअमीनखांके भानजे सैयद मोहम्मदने अहमदाबादसे आकर खिलअत पहिना.

यलंगतोशखां बहादुरका बेटा सुबहानवरदी दिल्लीसे हाजिर आया, उसको खिलअत मिला.

सन् १०९४ हि०.

६ मोहर्रम (पौषसुदि ७ । २६ दिसम्बर) को मुकर्रमखांके बदले जानेसे शहाबुद्दीनखां गुर्जबरदारोंका दरोगा और सैयद औगलान उसका नायब हुआ.

मोहम्मदअलीखां खानसामान गद्दा आकर कटहरेसे नीचे गिर पडा गुलाब वेदमुश्कके शीशे और कई बेदाना अनार इनायत हुए.

१ कलकत्तेकी प्रतिमें सरदारतरीन.

औरंगाबादके अखबार और कोटका काम अहतमामखां कराता था अमानखांके बेटे अबुलकादिरने ४ महीनेमें तैयार करदेनेके लिये अपने जिम्मे करलिया.

१ सफर (माघसुदि ३।२० जनवरी) को खानजहां बहादुर मुलाजिमतके वास्ते औरंगाबादसे ९ कोस¹ पर पहुंचा था कि, बादशाहने उसके बेटे नुसरतखांके हाथ खिलअत भेजकर हुक्म दिया कि, हजूरमें नहीं आवे बिदरकी तरफ जाकर ठहर जावे और जहां कहीं अकबर अबेतरके² जानेकी खबर सुने उसके पीछे जावे.

१८ (फाल्गुनबदि ५।१६ फरवरी) को खानजहां बहादुरने अरजी भेजी कि बागी अकबर कमबख्त संभाकी सरहदसे निकलकर जहाजमें बैठा. और भागगया.

बादशाहका हुक्म हुआ कि सरकारी नौकर जो २ हजारी मनसबसे कम हों रुखसत होते वक्त फातिहा पढनेकी उमेदमें न रहा करें मगर जब कि हजरत अपना हाथ फातिहेके वास्ते उठावें। काजियोंको मौकूफ होजानेके पीछे फिर काजीका ओहदा न देवें.

९ रबीउलअव्वल (फाल्गुनसुदि ६।२२ फरवरी) को १०० अरबी इराकी तुरकी कच्छी घोडे १०० ऊंट २० हाथी⁴ और ८० हजार रुपयेका जवाहर २ हजारका खिलअत और दूसरी पोशाक १४ हजार ९ सौ रुपयेकी शाहजाद जादे मोहम्मदआजमके लिये शाहजादे बेदारबखत और गेतीआराबेगमके वास्ते खिलअत और सब तईनाती अमीरोंके वास्ते खिलअत जैसा जिसका दरजा था; सिलाहखांके हवाले होकर हुक्म हुआ कि हरएक अमीरको अलग २ पेशवाईके

१ कलकत्तेकी प्रतिमें ३ कोस. २ बागी होनेके पीछे अकबरको अबतर (खराब) का खिताब दिया गया था. ३ जोधपुरकी ख्यातिमें लिखा है कि औरंगजेबने दक्खिनमें पहुंचकर ५ हजार सवार मुकर्रमखां और इन्द्रसिंहकी अफसरीमें अकबर पर भेजे। राठौडों और मरहटोंने संवत् १७३९ में कई जगह उनसे जंगकी और कई सौ आदमियोंको मारा पैवत् १७४० में मीरखलील और उसकी मांको जो अकबरकी दाई थी अकबरके पास सुलहके वास्ते भेजा अकबरको बादशाहका भरोसा नहीं था इसलिये उसने कहा कि जो गुजरातका सूबा और मेरा माल असबाब दो तो यहांसे परमारा अहमदाबाद चला जाऊंगा बादशाहके पास नहीं जाऊंगा यह बात बादशाहने मंजूर नहीं की. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें २० खच्चर और हाथी. ५ कलकत्तेकी प्रतिमें २ हजार ८ सौ.

वास्ते बुलाकर खिल्अत देवें और बादशाही आदाब बजा लानेके पीछे कहें कि शाहजादेकी खिदमतमें जावें और तसलीमात बजा लावें.

११ (फाल्गुनसुदि१२।२८फरवरी) को शाहजादे मोहम्मद कामबख्शने बादशाहके हुक्मसे पुराने गुसलखानेमें कचहरी करके बादशाही बन्दों और अपने नौकरोंको खिल्अत दिये और बहरेमंदखांको हुक्म हुआ कि, जब वह कचहरी करे हाजिर होजाया करे और खडा रहे.

१९ (चैतवदि २।४ मार्च) इतवारको शाहजादे कामबख्शकी शादीका जशन हुआ जो सियादतखां सफवीकी बेटी आजमबानूसे ठहरी थी खिदमतगारखांने खिल्अत खासा मोतियोंकी नीमाआस्तीन समेत और खिदमतखांने २ लाख २६ हजार रुपयेका जवाहर शाहजादेके घर पर पहुंचाया और हजूरमें ५ लाख रुपया नकद २ अरबी इराकी घोडे और १ हाथीका सलाम हुआ मसजिदमें हजरतके सामने काजी शेखुलइसलामने निकाह बांधा पहर रात जानेपर बादशाहने अपने हाथसे शाहजादेके शिरपर मोतियोंका सहरा बांधा फिर हुक्मसे सब अमीर गुसलखानेकी ड्योढीसे जेबुन्निसाबेगमकी ड्योढीतक शाहजादेकी रकाबमें पैदल गये वहां शादी हुई.

२२ (चैतवदि ९।११ मार्च) को बीजापुरके बडे आदमियोंमेंसे हुसैन मयाना दरगाहमें आया आतशखां पेशवाई करके हजूरमें लाया मुलाजिमत करते वक्त असदखांने चबूतरेसे उतरकर कहा कि खूब आये ५ हजारी ५ हजार सवारका मनसब झंडा नक्कारा फतहजंगखांका खिताब और ४० हजार रुपया इनाम इनायत हुआ उसके भाई बन्दोंको भी यथा योग्य खिल्अत और मनसब मिले.

पुरमांडलके फौजदार मोनसिंहरूपसिंहके बेटेको बदनोरका परगना भी दलीपसिंहसे उतरकर मिला.

महासिंह भदोरियेके बेटे उदितसिंहने बापके मरे पीछे राजाका खिताब पाया.

बिहारका उत्तरा हुआ सूबेदार सफीखां १९ (चैतबदि ६।८ मार्च) को दरगाहमें पहुँचा था उसने हजूरी सनदके बगैरही उस सूबेके खजानेसे ९६ हजार रुपया लेलिया था इसलिये सलाम न हुआ और मुगलखांने बादशाहके हुक्मसे

१ पंचांगमें भी चैतवदि २ इतवारको है. २ यह किसन गढका राजा था. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें दलपत.

उसको बहरेमंदखांके आतशखानेमें कैद करके बैठादिया १९ रबीउलआखिर (वैशाखबदि ३।३ अप्रैल) तक जब कि उसने रुपया चुकाया हवालातमें रहा.

मुकर्रमखांने सलामसे मने किये जानेके पीछे १२ (चैतसुदि १४।३१ मार्च) को सलाम करनेकी इज्जत पाई.

खुसरोबेग चेला हाफिज मोहम्मदअमीनखांके मालअसबाबको अहमदाबादसे हजूरमें लाया ७० लाख रुपया अशरफी और इबराहीमी १ लाख ३९ हजार हाथी ७६ घोडे ४३२ ऊंट १४४ चीनीके बरतन हरतरहके १० संदूक रहकला ६१ सीसों बारूत ९४ मन.

४ जमादिउलअव्वल (वैशाखसुदि ६।२२ अप्रैल) को हजूरमें अर्ज हुई कि दुर्जनसिंह हाडाने बूंदी घेरी और ले ली.

२० (जेठबदि ८।८ मई) को बुखाराके खानके एलची मोहम्मदशरीफने दरगाहमें हाजिर होकर खिलअत पाया.

वकंशीउलमुल्क रूहुल्लाहखां कोकनकी मुहिमसे हाजिर आया खिलअत जडाऊ खंजर और १ अरबी घोडा इनायत हुआ उसके भाई अजीजुल्लाहखां, नवाजिशखां रूमी, और इकरामखां दक्खिनीको भी खिलअत और हाथी मिले उसके तईनातियोंमेंसे सैयद अबदुल्लाह बारह उर्फ सैयद मियांने जो शाहआलमकी सरकारमें नौकर था बादशाही जाबितेसे हजारी ३०० सवारका मनसब पाया.

सैयद नूरमोहम्मदबारहको सैयदखांका खिताब मिला.

सैयद मुजफ्फर हैदराबादके बडे आदमियोंमेंसे था और अबुलहसन कुतुबुल-मुल्कने अपने वजीर बादिया ब्राह्मणके बहकानेसे उसको कैद कर रक्खा था अब बादशाहका हुक्म पहुँचने पर छोडकर हजूरमें भेज दिया मुलाजिमतके दिन उसको खिलअत खासा और जडाऊ खंजर इनायत हुआ उसके २ बेटोंको उमदा मनसब असालतखां और निजाबतखांके खिताब मिले.

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें १२ रबीउलआखिर. २ यह भी सोनेका सिक्का अशरफी जैसा था. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें ११४. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें रहकला ६०-। १ मन शीशा बारूत ५४ मन. ५ यह गाँव भजनेरीका जागीरदार था इसने रावराजा अनरुद्धसिंहसे बागी होकर बूंदी लेली थी अनरुद्धसिंह उस समय दक्षिणमें बादशाहके पास थे. (वंशभास्कर:) ६ कलकत्तेकी प्रतिमें ८ (वैशाखबदि १०।२६ अप्रैल.) ७ कलकत्तेकी प्रतिमें ६०७. ८ कलकत्तेकी प्रतिमें मादना.

२२ जमादिउलअव्वल (जेठवदि ९। १० मई) को गढेके जमीदार जैसिंहके भाई हरीसिंहने चौखट चूमने और खिलअत पानेसे अपनी इज्जत बराबरवालोंमें बढाई.

मगर बजमीन (पश्चिमदेश) के हाकिमके भाई अहमदने हजूर में हाजिर होकर जडाऊ खंजर और ५ हजार रुपया इनाम पाया.

मुगलखांने दुरजनसिंहके निकालनेको कमर बांधी भाऊसिंह हाडाके पोते अनिरुद्धसिंहको बुन्दी जानेकी रुखसत हुई खिलअत घोडा हाथी नक्कारा और नौबत मिली महासिंह भदोरियेका भाई रुद्रसिंह हाफिज मोहम्मदअमीनखांका भानजा सैयद मोहम्मदअली और मुलेमांशिकोहका जमाई ख्वाजाबहाउद्दीन वगैरह खिलअत घोडे और हाथी पाकर मुगलखांके साथ तईनात हुए.

४ जमादिउलआखिर (जेठसुदि ६। २१ मई) को अनूपसिंह काशगरके एल्चीको खिलअत खजर २ हजार रुपये रुखसतानेके मिले ख्वाजाअब्दुलरहीम खिलअत घोडा और १ हजार रुपया पाकर बीजापुरकी वकालतपर गया.

सैयदअब्दुल्लाह फिर इज्जतखांका खिताब पाकर आजमशाहकी फौजकी दीवानीके ओहदेपर हजूर में तईनात हुआ.

दिलेरखां फतहजंगखां वगैरह बीजापुरकी मुहिमपर तईनात हुए थे आजमशाहके पहुँचनेतक हजूर में हाजिर रहनेका हुक्म हुआ.

मनोहरदास गोडका बेटा किशोरदास शोलापुरकी किलेदारीपर मुकर्रर हुआ. शहाबुद्दीनखांने खेवरकी तरफसे आकर मुलाजिमत की.

४ रजब (आषाढसुदि ६।२० जून) को शाहजादे मोअज्जुद्दीनने जफराबादसे और शाहजादे मोहम्मद अजीमने बुरहानपुरसे पहुँचकर आदाब बजाया.

शाहजादे रफीउल्कदरने अपने हाथका खुशखत लिखा हुआ १ कागज बादशाहको दिखाया डालोंका सरपेच इनायत हुआ.

२९ रजब (सावनसुदि २।१९ जुलाई) को शाहआलम बहादुरको ४१ वां वर्ष लगा बादशाहने जडाऊ तुर्रा १ लाख ९ हजार १८० रुपयेका इनायत किया.

१ कलकत्तेकी प्रतिमें चतरसिंह पेज २२७. २ कलकत्तेकी प्रतिमें सैयद अहमद. ३ कलकत्तेकी प्रतिमें अयूबवेग और यही सही है. ४ कलकत्तेकी प्रतिमें ४ रजब (सावनवदि २। ३० जून.)

मुल्लाअबदुल्लाह स्यालकोटीके मरजानेकी अर्ज हुई उसकी औरत और ४ बेटोंको खिलअत भेजेगये. और वजीके भी बढाये गये बादशाहने अजमेरसे खास दस्तखतका फरमान भेजकर मुल्लाको सदारतका ओहदा देनेके लिये बुलाया था और अपने मुसाहिब वखतावरखांको भी अपनी तरफसे इसी मजमूनका रुक्का लिखनेके वास्ते फरमाया था मुल्लाने खानको जवाब लिखा कि यह बिछडनेका वक्त है नाम निकालनेका नहीं है मगर हजूरके हुकमसे आता हूँ ख्वाजा मईनुद्दीनकी जियारत भी होजायगी फिर मुल्ला अजमेरमें आकर कुछ दिन बादशाहके पास रहा और जियारत करके रुखसत होगया.

बादशाहने नर्बदासे आजमशाहको बुलाया था सो अब अर्ज हुई कि बरसात और रास्तेमें कीचड पानी होनेपर भी आ तो गये हैं मगर डेरे खेमे थोडेही साथ हैं हुक्म हुआ कि सरकारी डेरे ईदगाहके पास खडे करें पिछले दिनसे अर्ज हुई कि शाह घोडेपर सवार आते थे रास्तेमें फतहजंगखांका मस्त हाथी उनपर दौडाकर उनके पास पहुँचगया उन्होंने तीर मारा तो भी बहुत पास आगया घोडा चमकने लगा, शाह उतरकर सामने हुए सूंडपर तलवार मारी फिर उनकी अरदलीके बिखरेहुए आदमियोंने जमा होकर हाथीको मारडाला शाहजादे मोहम्मद कामबखश और रूहुल्लाहखां उसी वक्त गये और ४ हजार रुपये निछावरके सरकारसे लेगये ५०० सौ मोहरें शाहजादे कामबखशने अपनी तरफसे निछावर कीं, १०० मोहरें और १ हजार रुपये खानने भी नजर किये १ पहर ४ घडी पीछे लौट आये दूसरे दिन जो मुलाजिमतके वास्ते मुकर्रर था बादशाहजादा कामबखश हजारी मनसब तकके सब अमीरोंके साथ पेशवाईके लिये गया सबने अपने २ दरजेके मुवाफिक नियाजें दीं शाह बमूजिब हुक्म हजूरके अपने डेरेसे शादियाना बजाता हुआ किलेमें गया और शाहजादे वेदारबखतके साथ हजूरमें जाकर कदम चूमे उसकी हवेली की मरम्मत होने वाली थी इसलिये इसके दुरुस्त होने तक उसको पुराने खासो आमके पास ठहराया गया.

रशीदखांने अर्जकी कि, गवाह्दीके खर्चेमेंका ९१ लाख रुपया अमीरुलउमरासे वसूल करनेका हुक्म था वह लिखता है कि, कुल ७ लाख खर्च हुआ है बाकी खर्च बंगालेकी मददके दूसरे मसालेका था हुक्म हुआ कि, इतनाही बसूल करलें.

१ कलकत्तेकी प्रतिमें मुल्ला अबदुल हकीमके बेटे मुल्ला अबदुल्लाह- २ बादशाहजादोंको नजरें दी जाती थीं उनको नियाज कहते थे.

११ शावान (सावनसुदि १३ । २९ जुलाई) को शाहकी खास लौंडी उत्तमेगढसे लड़का हुआ जिसकी १हजार मोहरें बादशाहको नजर हुई, वालाजाह नाम रक्खागया.

हाजी शफ़ीअ नये मुल्कोंकी जमाबंदीके लिये जो खानजहांने फतह किये थे रुखसत हुआ.

सेवाका मुन्शी काजी हैदर नौकरीके वास्ते दरगाहमें आया खिलअत १० हजार रुपये और २ हजारी मनसब इनायत हुए.

हकीम मुहसनखां दिल्लीके खजानेके साथ बादशाहका बुलाया हुआ आया और उसके कसूर माफ होगये.

मिरजा सदरुद्दीनको खांका खिताव और रामगिरको फौजदारी मिली.

१२ शावान (सावनसुदि १४ । २७ जुलाई) को जडाऊ हार मोतियोंकी उर्वसी और २ हाथी जो कुतुबुल्मुल्कने खानजहांको भेजे थे और उसने हजूरमें भेजे बादशाहकी नजरसे गुजरे.

२१ (भादोंबदि ८।९ अगस्त) को बादशाह औरंगाबादके किले पर आज-मशाहके आतशखाने (तोपखानेमें) पधारे बादशाहजादेको १अंगूठी २७९रुपये की जहांजेबबानूबेगमको मोतियों और लालके लटकनकी माला १४हजार रुपयेकी बीजापुरी महलको जडाऊ कडे ढाई हजार रुपयेके और शाहकी बेटी गेतीआरांे-गमको मोतियोंकी माला १९ हजार रुपयेकी इनायत हुई शाहकी तरफसे २लाख ९८ हजार ४ सौ रुपयेकी पेशकश बादशाहकी नजरसे गुजरी और मंजूर हुई.

रणमस्तखांने बहादुरखांका खिताब पाया.

२९ (भादों सुदि १ । १३ अगस्त) को मुगलखांकी अर्जी पहुँची कि, उसने बूंदी पर धावा करके ३ पहर तक तीर और बंदूकके गोले बरसाये दुर-जनसिंह रातको भाग गया अनिरुद्धसिंह अपनी जमइयत और बादशाही बंदोंके साथ बूंदीमें दाखिल हुआ.

इति-औरंगजेबनामा एकादश खण्ड समाप्त ।

---

१ कलकत्तेकी प्रतिमें उत्तमकर (पर ये दोनों नाम गलत हैं शायद उत्तम कुँवर हो.)
२ कलकत्तेकी प्रतिमें २२ सौ.

सूचना।

समाचारपत्र पाठक महाशय! औरङ्गजेब नामा दूसरे भागके इन खण्डोंको हिफाजतसे रखिये ताकि शेष खण्ड अगले उपहारमें मिलनेसे आपका ग्रन्थ पूर्ण होजायगा।

आपका शुभचिन्तक-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
प्रोप्रायटर "श्रीवेङ्कटेश्वर" समाचार-बम्बई.